ज्योतिष ,स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक 45215/86

जीवन वैभव

स्थापना वर्ष : 35 वर्ष अंक : 4 अक्टूबर 2021

नवरात्रि एवं दीपावली अंक

इस अंक के आकर्षण

- जीवन में तनाव मुक्त कैसे रहे।
- विज्ञान और विद्यावान में अंतर।
- मन के हारे हार है।
- शिक्षण संस्थान संचालन के योग।
- अपना व्यापार करने के ग्रहयोग।
- राहुमंगल अंगारक योग के फल।
- कुण्डली मिलान में अष्टकूट के साथ ग्रहयोग आवश्यक।
- फलित ज्योतिष में नाभस योग का महत्व।
- व्रतपर्व, शुभमुहूर्त, त्रैमासिक। भविष्य एवं अन्य स्थाई स्तम्भ।

मूल्य : 30 रू.

समृद्धिदायक है महालक्ष्मी अष्ट्क

नमस्तेस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते!
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
नमस्तेतु गरुदारुढै कोलासुर भयंकरी!
सर्वपाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी!
सर्वदुख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
सिद्धि बुद्धि प्रदे देवी भक्ति मुक्ति प्रदायनी!
मंत्र मुर्ते सदा देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
आध्यंतरहीते देवी आद्य शक्ति महेश्वरी!
योगजे योग सम्भुते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
स्थूल सुक्ष्मे महारोद्रे महाशक्ति महोदरे!
महापाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
पद्मासन स्थिते देवी परब्रह्म स्वरूपिणी!
परमेशी जगत माता महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
श्वेताम्भर धरे देवी नानालन्कार भुषिते!
जगत स्थिते जगंमाते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्रं य: पठेत भक्तिमान्नर:!
सर्वसिद्धि मवाप्नोती राज्यम् प्राप्नोति सर्वदा!!
एक कालम पठेनित्यम महापापविनाशनम!
द्विकालम य: पठेनित्यम धनधान्यम समन्वित:!!
त्रिकालम य: पठेनित्यम महाशत्रुविनाषम!
महालक्ष्मी भवेनित्यम प्रसंनाम वरदाम शुभाम!!

जीवन वैभव

परिवार की ओर से

संपादक
डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

नवरात्रि एवं दीपावली

पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

जीवन वैभव

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार
की शिक्षाप्रद पत्रिका

स्थापना वर्ष : 35, अंक-4, अक्टूबर-दिसंबर 2021

●

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

●

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

●

कानूनी सलाहकार
श्री अजय दुबे, श्री बी.एल. शुक्ला

●

सलाहकार मण्डल
श्रीमती पुष्पा चौहान, श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

●

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)
प्रकाशित लेखों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति	–	30 रुपये
वार्षिक	–	100 रुपये
त्रैवार्षिक	–	300 रुपये
आजीवन	–	1800 रुपये

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पृष्ठ क्रं.
1.	वंदना	2
2.	अमृत घट	4
3.	वैभव दर्शन	5
4	विद्वान और विद्यावान में अंतर	6
5.	अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन	7
6.	शिक्षण संस्थान संचालन के ग्रह योग	9
7.	अपना व्यापार करने के ग्रह योग	11
8.	राहुमंगल अंगारक योग के फल	13
9.	कुण्डली मिलान में अष्ट कूट के साथ ग्रहयोग मिलाना भी जरूरी	14
10.	फलित ज्योतिष में नाभस योग का महत्व	16
11.	अविवाहित और बेरोजगार होने के ज्योतिषीय योग	19
12.	विष्टीकरण याने भद्राविवरण	21
13.	पांच दिवस का पर्व दीपावली	23
14.	दीपावली पर्व विशेष- ज्योतिष और लक्ष्मी योग	25
15	नवग्रह के शुभ फल प्राप्ति के सरल उपाय	33
16.	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
17.	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
18.	आपके पत्र	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंटर्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011 (म.प्र.) से मुद्रित, संपादक: डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादक: स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना

मीनाक्षी पञ्चरत्नम्

उद्यद्भानुसहस्रकोटिसदृशां
केयूरहारोज्ज्वलां
विम्बोष्ठीं स्मितदन्तपङ्क्तिरुचिरां
पीताम्बरालङ्कृताम् ।
विष्णुब्रह्मसुरेन्द्रसेवितपदां
तत्व स्वरूपां शिवां
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं
कारुण्यवारांनिधिम् ॥1॥

जो उदय होते हुए सहस्त्रकोटी सूर्यो के सदृश आभावाली है, केयूर और हार आदि आभूषणों से भव्य प्रतीत होती हैं, बिंबा फल के समान अरुण ओठेवाली है, मधुर मुस्कान युक्त दन्तावली से जो सुंदरी मालूम होती है तथा पितांबर से अलडता है; ब्रह्मा, विष्णु आदि देवनायकों से सेवित चरणों वाली उन तत्वस्वरूपिणी कल्याणकारीणी करूणावरुणालया श्री मीनाक्षी देवीका मै निरंतर वंदन करता हूं।।1।।

मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां
पूर्णेन्दुवक्त्रप्रभां
शिञ्जन्नूपुरकिङ्किणीमणिधरां
पद्मप्रभाभासुराम् ।
सर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां
वाणीरमासेवितां ।
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं
कारुण्यवारांनिधिम् ॥2॥

जो मोती की लड़कियों से सुशोभित मुकुट धारण किए सुंदर मालूम होती है, जिनके मुख की प्रभा पूर्ण चंद्र के समान है, जो झंकार ते हुए नूपुर (पायजेब),कडिणी(करधनी) तथा अनेकों मनियां धारण किए हुए हैं, कमलकी-सी आभा से भासित होने वाली, सबको अभीष्ट फल देने वाली, सरस्वती और लक्ष्मी आदि से सेविता गिरिराजनन्दिनी करुणा वरुणालया श्री मीनाक्षी देवीका में निरंतर वंदन करता हूं।।2।।

श्रीविद्यां शिववामभागनिलयां
ह्रीङ्कारमन्त्रोज्ज्वलां
श्रीचक्राङ्कितबिन्दुमध्यवसतिं
श्रीमत्सभानायिकाम् ।
श्रीमत्षण्मुखविघ्नराजजननीं
श्रीमज्जगन्मोहिनीं ।
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं
कारुण्यवारांनिधिम् ॥3॥

जो विद्या है, भगवान शंकर के वाम भाग में विराजमान है, हीं बीजमंत्र से सुशोभित है, श्री चक्राडित बिंदु के मध्य में निवास करती है तथा देवसभाकी अधिनेत्री है,उन श्रीस्वामी कार्तिकेय और गणेश जी की माता जगमोहिनी करुणावरुणालया श्री मीनाक्षी देवी का मैं निरंतर वंदन करता हूं।।3।।

श्रीमत्सुन्दरनायिकां भयहरां
ज्ञानप्रदां निर्मलां
श्यामाभां कमलासनार्चितपदां
नारायणस्यानुजाम् ।
वीणावेणुमृदङ्गवाद्यरसिकां
नानाविधामम्बिकां ।
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं
कारुण्यवारांनिधिम् ॥4॥

जो अति सुंदर स्वामिनी है, भयहारिणी है, ज्ञान प्रदायिनी है, निर्मला और श्यामला है, कमलासन श्री ब्रह्मा जी द्वारा जिनके चरण कमल पूजे गए हैं तथा श्री नारायण (कृष्ण चन्द्र) की जो अनुजा (छोटी बहन) है; वीणा,वेणु,मृदडांदि वाद्यो की रसिका उन विचित्र लीला विहारिणी करुणावरुणालया श्री मीनाक्षी देवी का में निरंतर वंदन करता हूं।।4।।

नानायोगिमुनीन्द्रहृत्सुवसतिं
नानार्थसिद्धिप्रदां
नानापुष्पविराजिताङ्घ्रियुगलां
नारायणेनार्चिताम् ।
नादब्रह्ममयीं परात्परतरां
नानार्थतत्त्वात्मिकां ।
मीनाक्षीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं
कारुण्यवारांनिधिम् ॥5॥

जो अनेकों योगीजन और मुनीश्वरों के ह्दय में निवास करने वाली तथा नाना प्रकार के पदार्थो की प्राप्ति कराने वाली है, जिनके चरणयुगल विचित्र पुष्पों से सुशोभित हो रहे हैं, जो श्री नारायण से पूजिता है तथा जो नादब्रह्ममयी,परेसे भी परे और नाना पदार्थों की तत्वस्वरुपा है, उन करुणावरुणालया श्री मीनाक्षी देवी का में निरंतर वंदन करता हूं।।5।।

सम्पादक की कलम से...

माननीय

समस्तपाठकगण,

जीवन वैभव पत्रिका जोकि ज्योतिष, स्वास्थ्य, अध्यात्म और सुसंस्कार की शिक्षाप्रद एकमात्र पत्रिका है, जो पूरे परिवार को स्वास्थ्य और सुंस्कार का ज्ञान और शिक्षा प्रदान करते हुए लाभान्वित करती है। कई परिवारों में इसके नए अंक की अनवरत प्रतीक्षा रहती है। व्रत पर्व, शुभ मुहूर्त और त्रैमासिक भविष्य के लिए तो यह पत्रिका बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है क्योंकि व्रत पर्व की तिथि के बारे परिवर्तन के कारण होने वाली दुविधा को भी यह पत्रिका सही मार्ग दर्शक और निर्णय के रुप में प्रमाणित सिद्ध हुई है।

हमारा प्रयास जीवन वैभव को और अधिक ज्ञान और मार्गदर्शक के रुप में स्थापित करना है आप जैसे प्रबुद्ध सदस्य के मार्गदर्शन की आवश्यकता है। साथ ही यह जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका आर्थिक संकटों से जूझने के उपरांत भी विगत 35 वर्षों से आप सबको कम मूल्य पर ही ज्ञानवर्धन करा रही है मूल्य वृद्धि इसलिए नहीं की है क्योंकि प्रत्येक परिवार की युवा पीढ़ी सदा सुसंस्कारित हो और ज्ञान दान गृहण करके अपने कर्तव्य पथ पर चलकर धनात्मक सोच रखे और मानसिक बल प्राप्त करें जिससे कि समाज में उत्तरोत्तर, परस्पर, प्रेम भाव और समत्व के भाव उत्पन्न हो जिससे सामाजिक उत्कर्ष होकर देश के विकास में योगदान हो सके। इसी आशय से जीवन वैभव में विषय का चयन किया जाकर अच्छे संस्कार और धनात्मक ज्ञान देने वाले आलेख ही प्रकाशित किए जाते हैं। आप सबका सहयोग इसमें आवश्यक है जिनकी सदस्यता समाप्त हो रही हो उन्हें नियमित सदस्यता होना जरूरी है साथ ही जो सदस्य इस ज्ञानवर्धक पत्रिका को अपने मित्रों और साथियों को भेंट स्वरूप देना चाहें वे निर्धारित सदस्यता शुल्क जमा कराते हुए उनके पते हमें भेज दें ताकि पत्रिका उन्हे नियमित रूप से भेजी जा सके और यह अनुपम ज्ञान का संग्रह उपहार स्वरुप इष्ट मित्रों को भी प्रदाय करने से उन्हें भी लाभान्वित किया जा सके।

जीवन वैभव के नियमित लेखकों से अनुरोध है कि वे अपने आलेख नियमित रूप से भेजते रहें तथा प्रतिक्रिया से भी अवगत करावें ताकि तदनुसार सुझाए गए बिन्दु पर संचालक मण्डल द्वारा विचार किया जाकर परिवर्द्धन/सुधार किया जा सके।

अनुरोध है कि वह अपने पाठको को अवगत कराएंगें ताकि सदस्यता वृद्धि में सहायक होकर ज्ञान का आदान प्रदान हो सके।

शुभकामनाओं सहित

आपका अपना ही

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

संपादक

अमृत घट

1. आवश्यकता कम करें, आवश्यकता जितनी कम होगी उतना ही अधिक सुख होगा।

- स्वामी रामतीर्थ

2. सबसे उत्तम दान वह है जो आदमी को इस योग्य बना दे कि वह दान के बिना काम चला सके।

- महात्मा गांधी

3. धन के मद में मतवाला मनुष्य गिरे बिना होश में नहीं आता।

- भृर्तृहरि

4. अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे तो वह कंगाल हो जाता है।

- चाणक्य

5. जैसे पानी में उत्पन्न होकर पानी में ही नष्ट होने वाले बुलबुलों पर किसी का ध्यान नहीं जाता उसी प्रकार धन से हीन व्यक्ति सामने रहते हुए भी लोगों की दृष्टि में नहीं आते।

- आचार्य विनोबा

6. शिष्टाचार शारीरिक सुंदरता की कमी को पूर्ण कर देता है वही व्यक्ति सर्वाधिक सुंदर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकता है। बिना शिष्टाचार के सौंदर्य का कोई मूल्य नहीं।

- स्वेट मार्डन

7. शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान कोई दूसरा पाप नहीं।

- लोकमान्य तिलक

8. प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्य का दूसरा नाम है। समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है।

- भगवान बुद्ध

9. किसी मनुष्य की बुराई पर विश्वास मत करो, जब तक तुम स्वयं उसे देख न लो और यदि बुराई सचमुच देखने में आए भी तो उसे भूल जाओ, किसी पर प्रकट न करने लगो।

- स्वामी विवेकानंद

वैभव दर्शन

जीवन में तनाव मुक्त कैसे रहे

परिवार में सुख पूर्वक रहने के लिए हमें क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए। नीति पूर्वक कमाए, रीति पूर्व खर्च करें और मिलजुलकर प्रीति पूर्वक रहे यह मुख्य रूप से संदेश पूर्व संस्थापक संपादक ने अपने जीवन में दिया है। जिसे यहां प्रस्तुत किया जा रहा है ***-संपादक***

स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

सुखी जीवन के लिए खर्च पर नियंत्रण रखें।

1. अनावश्यक खर्च से बचें। अपनी आय में से कुछ बचत करके मितव्ययी बनने की आदत डालें।
2. नशे की आदत नहीं रखें।
3. व्यर्थ का भ्रमण नहीं करें इससे समय और धन का अपव्यय से बचाव होगा।
4. ईमानदारी और नैतिकता से किए गए कार्य से अपनी आजीविका चलाएं।

कहने का आशय है आय से अधिक खर्च करने पर तनाव बढ़ेगा और पारिवारिक क्लेश शुरू होगा-

5. परिवार में बड़ों को सम्मान दें। उनकी कही गई बात यदि वह मानने में हितकारक है तो उसे सम्मान देते हुए माने।
6. किसी कारणवश यदि आप व्यस्त हैं। बताए गए कोई कार्य नहीं कर पा रहे हैं। तो शांति से उसे कब तक कर लेंगे। बड़ों को सम्मान पूर्वक बता दे। ताकि अनावश्यक तनाव से बच सकें।
7. माता-पिता को यदि पत्नी की कोई बात रुचिकर नहीं लगती है तो पत्नी को यथासंभव समझाने का प्रयास करें।
8. पत्नी के सामने अपनी सभी आवश्यक ऐसी बातें जो निर्णायक हैं, रखें एवं मिलजुलकर पारिवारिक कार्यो में फैसला लें।
9. पत्नी की दी गई सलाह को भी महत्व दे। यदि किसी कारणवश सलाह औचित्यपूर्ण बताते वह समझाएं ताकि पत्नी को भी लगे वह सास-ससुर के साथ ही साथ पति के लिए सलाह में भागीदार हैं।
10. सास- ससुर को भी चाहिए कि वह अपने पुत्र के अनुरूप ही पुत्रवधू के लिए भी स्नेह दे, कभी-कभी पुत्रियों को माता-पिता अधिक प्यार करते हैं। किंतु उसी समय बहु को प्रताड़ित करते हैं। यह उचित नहीं। बहु एवं बहु की उम्र की पुत्रियों को भी एक समान सम्मान देना चाहिए।

विद्वान और विद्यावान में अंतर

संतोष श्रीवास्तव

विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥

एक होता है विद्वान और एक विद्यावान। दोनों में आपस में बहुत अन्तर है। इसे हम ऐसे समझ सकते हैं, रावण विद्वान है और हनुमान जी विद्यावान हैं।

रावण के दस सिर हैं **याने -** चार वेद और छहः शास्त्र दोनों मिलाकर दस हैं। इसीलिए वह दशानन है। रावण वास्तव में विद्वान है लेकिन विडम्बना क्या है ? सीता जी का हरण करके ले आया।

आज के परिप्रेक्ष्य में कईं विद्वान लोग अपनी विद्वता के कारण दूसरों को शान्ति से नहीं रहने देते। उनका अभिमान दूसरों की सीता रुपी शान्ति का हरण कर लेता है और हनुमान जी उन्हीं खोई हुई सीता रुपी शान्ति को वापिस भगवान से मिला देते हैं।

हनुमान जी ने कहा -

विनती करउँ जोरि कर रावन
सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥

हनुमान जी ने हाथ जोड़कर कहा कि मैं विनती करता हूँ, तो क्या हनुमान जी में बल नहीं है ?

नहीं, ऐसी बात नहीं है। विनती दोनों करते हैं।
जो भय से भरा हो या भाव से भरा हो।

रावण ने कहा कि तुम क्या, यहाँ देखो कितने लोग हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़े हैं।

कर जोरे सुर दिसिप विनीता।
भृकुटी विलोकत सकल सभीता॥
यही विद्वान और विद्यावान में अन्तर है।

हनुमान जी गये, रावण को समझाने।
यही विद्वान और विद्यावान का मिलन है।

रावण के दरबार में देवता और दिग्पाल भय से हाथ जोड़े खड़े हैं और भृकुटी की ओर देख रहे हैं। परन्तु हनुमान जी भय से हाथ जोड़कर नहीं खड़े हैं। रावण ने कहा भी -

कीधौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही।
देखउँ अति असंक सठ तोही॥

रावण ने कहा - तुमने मेरे बारे में सुना नहीं है ? तू बहुत निडर दिखता है !

हनुमान जी बोले - क्या यह जरुरी है कि तुम्हारे सामने जो आये, वह डरता हुआ आये?

रावण बोला - देख लो, यहाँ जितने देवता और अन्य खड़े हैं, वे सब डरकर ही खड़े हैं।

हनुमान जी बोले - उनके डर का कारण है, वे तुम्हारी भृकुटी की ओर देख रहे हैं।

भृकुटी विलोकत सकल सभीता।

परन्तु मैं भगवान राम की भृकुटी की ओर देखता हूँ।

उनकी भृकुटी कैसी है ? बोले,

भृकुटी विलास सृष्टि लय होई।
सपनेहु संकट परे कि सोई॥

जिनकी भृकुटी टेढ़ी हो जाये तो प्रलय हो जाए और उनकी ओर देखने वाले पर स्वप्न में भी संकट नहीं आए।

मैं उन श्रीराम जी की भृकुटी की ओर देखता हूँ।

रावण बोला - यह विचित्र बात है। जब राम जी की भृकुटी की ओर देखते हो तो हाथ हमारे आगे क्यों जोड़ रहे हो ?

विनती करउँ जोरि कर रावन।

हनुमान जी बोले - यह तुम्हारा भ्रम है। हाथ तो मैं उन्हीं को जोड़ रहा हूँ।

रावण बोला - वह यहाँ कहाँ हैं ?

हनुमान जी ने कहा कि

यही समझाने आया हूँ।

मेरे प्रभु राम जी ने कहा था -

सो अनन्य जाकें असि मति न टरइ हनुमन्त।

मैं सेवक सचराचर रुप स्वामी भगवन्त॥

भगवान ने कहा है कि सबमें मुझको देखना। इसीलिए मैं तुम्हें नहीं, तुझ में भी भगवान को ही देख रहा हूँ। इसलिए हनुमान जी कहते हैं -

खायउँ फल प्रभु लागी भूखा।
और सबके देह परम प्रिय स्वामी॥

हनुमान जी रावण को प्रभु और स्वामी कहते हैं और रावण -

मृत्यु निकट आई खल तोही।
लागेसि अधम सिखावन मोही॥

रावण खल और अधम कहकर हनुमान जी को सम्बोधित करता है। यही विद्यावान का लक्षण है कि अपने को गाली देने वाले में भी जिसे भगवान दिखाई दे, वही विद्यावान है। *विद्यावान का लक्षण है

विद्या ददाति विनयं। विनयाति याति पात्रताम्॥

पढ़ लिखकर जो विनम्र हो जाये,

वह विद्यावान और जो विद्वान हो भी अभिमान से भर जाये वह रावण है ।

तुलसी दास जी कहते हैं -

बरसहिं जलद भूमि नियराये।
जथा नवहिं वुध विद्या पाये॥

जैसे बादल जल से भरने पर नीचे आ जाते हैं, वैसे विचारवान व्यक्ति विद्या पाकर विनम्र हो जाते हैं। इसी प्रकार हनुमान जी है। जो पढा लिखा हो , धनवान हो परन्तु उसके हृदय में अभिमान हो, तो वह विद्वान होने पर भी राक्षस तुल्य रावण है विद्यावान वही है जिसके हृदय में भगवान हो और जो दूसरों के हृदय में भी भगवान को बिठाने की बात करे, वही विद्यावान है।

हनुमान जी ने कहा - रावण ! और तो सब ठीक है, पर तुम अभिमान में डूबे हो तुम्हारे अंत का कारण भी यही होगा ।

अगर तुम राम चरण हृदय मे धारण करोगे तो भगवान तुम्हारे सभी अपराध क्षमा कर देगे और तुम लंका में अचल राज करना -

राम चरन पंकज उर धरहू।
लंका अचल राज तुम करहू॥

इसलिए मेरा बार बार यही कहना है कि

अपने हृदय में राम जी को बिठा लो ।

लेकिन विद्वान भी जब अहम मे भर जाये, अपने को बलवान दूसरे को तुच्छ समझे तब उसका अंत निश्चित है और जब सरल हृदय, बलवान , सदा सहायक , विद्यावान हनुमान साथ हो तब उसकी सारी विध्न बाधाये दूर हो जाती है। कहा भी गया है -विश्वासम् फलदायकम् अपने गुरूजनों, अपने ईष्ट, अपनी संस्कृति, अपने परिवार, अपने देश पर गर्व करो, विश्वास करो। ईमान, नेक राह पर चलो यही शिक्षा हमें विद्यावान हनुमान हर पल , हर क्षण देते हैं , जिसे हमें और आने वाली पीढ़ी को शिरोधार्य करना है।

अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन

श्री महाकालेश्वर मंदिर उज्जैन, मध्यप्रदेश के पास भारत माता मंदिर परिसर के माधव आडिटोरियम में राष्ट्रीय ज्योतिष एवं रुद्राक्ष अनुसंधान संस्थान एवं अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में अपने आजीवन सदस्यों के लिए निशुल्क अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह दिनाँक 19 सितम्बर 2021, रविवार को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरंभ भारतमाता की भव्य प्रतिमा में माल्यार्पण, भारतमाता के जयघोष और स्वस्तिवाचन के साथ हुआ।

इस समारोह में अंतरराष्ट्रीय समुदाय के विद्वान उपस्थित रहे, जिनमे दिल्ली से डॉ. अजय भाम्बी, म.प्र. शासन के मंत्री श्री विभाष उपाध्याय, दिल्ली से आचार्य पदम उपाध्याय, हॉलेंड यूरोप से श्री सुरिंदरे जी, आर एस एस के मालवा प्रान्त प्रभारी श्री विजय केवलिया, आदि के द्वारा उपस्थित ज्योतिष विद्वानों को ज्योतिष की उत्तम फलितकरते हुए तथा और अधिक शोध कार्य कर के विषय की गरिमा बढ़ाएं जाने के लिए आव्हान किया इंदौर से पं. दिनेश गुरु जी व पंकज शर्मा पाटनवाले आदि उपस्थित रहे।

आयोजक संस्था के सभी प्रमुख पदाधिकारी / कार्यकारिणी समिति उपस्थित रही जिनमे कर्नाटक से श्री शांतिनाथ व हरिशंकर जोइस, कोलकाता से पं सुरजीत मुखर्जी, नेपाल से पं. यज्ञराज जी, भोपाल से पं कृपाराम उपाध्याय, डॉ हेमचंद्र पांडेय,सम्पादक जीवन वैभव ज्योतिष पत्रिका भी उपस्थित हुए थे जिनके द्वारा जीवन वैभव पत्रिका का जुलाई से सितंबर 2021 अंक सभी विद्वानों को प्रदान किया गया। अपने उद्बोधन में बताया कि ज्योतिष के उपाय सरल एवं कम खर्च के होना चाहिए साथही फलित करने मेंधर्म त्रिकोण अर्थात लग्न पंचम नवम भाव के स्वामी ग्रह को उपासना रत्न धारण आदि करके जातक को आत्म बल स्वास्थ्य बल तथा मनोबल को बढ़ाना चाहिए जिससे कि कार्य करने की क्षमता बढ़ सके एवं फलित ज्योतिष के द्वारा समाज कल्याण में ज्योतिष का भी योगदान हो सके भोपाल के श्री श्याम कुमार ताम्रकार, सुश्री पूजा मिश्रा, सुश्री निशा शर्मा के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन के कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन किया , श्री विनोद दुराफे, श्री अजय निमोणकर, उज्जैन से डॉ. प्रियंका चौबे, पं रितेश हाड़ा, सविता हाड़ा, पं शैलेंद्र व्यास व रोहित वर्मा, कानपुर से पं नितिन मिश्र व श्री सुधांशु अवस्थी, आगरा से श्रीमती सविता खंडेलवाल, लखनऊ से पं कुलसौरभ शुक्ल व आचार्य पंकज त्रिवेदी, दिल्ली से श्री बलबीर सिंह व श्री रविन्द्र कुमार, गुजरात से श्री प्रकाश त्रिवेदी व श्री संजयभाई व्यास व श्री भबिन देसाई, जबलपुर से श्री अभिषेक शरण, महामंडलेश्वर कमल किशोर जी, कोटा से श्री अरुण मित्तल जी, सिवनी से डॉ नीलेश श्रीमाली जी, भादवामाता पंचांगकर्ता पं भागीरथी जोशी जी आदि संस्था के प्रतिनिधि / कार्यकर्ता के रूप में उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत से ज्योतिष एवं विभिन्न आध्यात्मिक विधाओं के प्रमुख विद्वान उपस्थित रहे।

संस्था के संस्थापक और अध्यक्ष आचार्य पंकज त्रिवेदी उपमन्यु ने सभी उपस्थित विद्वानों का आभार व्यक्त करते हुए संस्था के बारे जानकारी देकर संबोधित करते हुए कहा कि आयोजक संस्था का उद्देश्य आध्यत्म, ज्योतिष एवं वैदिक सनातन संस्कृति का प्रचार प्रसार करना एवं इन विधाओं के विद्वानों को सम्मानित करने के साथ साथ नए ज्योतिषियों को ज्ञान के साथ मान सम्मान प्रदान करना है जिससे सम्पूर्ण विश्व मे भारत का ज्योतिष के क्षैत्र में भी झंडा ऊंचा रहे।

आयोजक आचार्य पंकज त्रिवेदी का विद्वानों द्वारा सम्मान

मन के हारे हार है

संसार की सभी प्राणियों में मानव के मनका विकास अधिक हुआ हे मनुष्य अपनी सारी क्रियाएं इंद्रियों के वशीभूत होकर करता है सब प्रकार की बेचेनी क्लेश, चिंता और मनकी विकृति इंसान की मन की गलत धारणा के कारण ही होती है यदि एक लक्ष्य स्थिर कर लिया जाता है तो वे हरक्षैत्र मे सफलता प्राप्त करते है।एककार्य मेंलक्ष्य पूर्ति होने पर अन्य कार्य का लक्ष्य तय करने और उसमे सफलता प्राप्ती के लिएअपने कार्य मे लगजाते है।कार्यों में सफलता होने से व्यक्ति चिंता रहित होने लगता है।

मन की एकाग्रता ही विद्यार्थी वर्ग को कुशलता पूर्वक सफलता की ओर अग्रसर कर सकती है, मन की एकाग्रता चिकित्सक को अपने रोगी को शल्यक्रिया द्वाराठीक करने, एक शिक्षक को अपने विद्यार्थी को सही शिक्षा देने ,एक वाहन चालक को सही दिशा में सावधानी पूर्वक गंतव्य तक वाहन संचालित करने,तथा इसी प्रकार भोजन बनाने वाले रसोईया को भोजन को अच्छे ढंग से पकाने के लिए मानसिक एकाग्रता से कार्य करने कीवृत्ति देता है अत: आवश्यक हैकि जो कार्य करें वह पूरे मन से सम्पन्न करें तभी सफलता की निश्चितता होती है।

इसी प्रकार से जीवन के सभी कार्य करने के लिए मानसिक स्थिरता की आवश्यकता होती है जिसे मनोनिग्रह कहते हैं। विश्व का इतिहास उसीव्यक्ति की गाथा गाता है जिसमें मनोबल होता है।इसीलिए मन का विज्ञान सभी विज्ञानों मे श्रेष्ठ माना जाताहै यदि मन से हारगए तो हरतरफ हार ही निश्चित है अतः मन के बल को बढ़ाना चाहिए। इसके संतुलन के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपाय सुसंग है याने अतः अच्छे और सुखी जीवन के लिए लोगों का संग करना चाहिए।

कुसंगी व्यक्तियों का संग करने से दुष्प्रवृतियां आने लगती है और वे कही संमस्थाओं अथवा अनैतिकता क अंधकार में लेजाकर.गहरे गड्डे में डुबो देती है,जिसमें से निकलपाना मुश्किल होता है।अतः व्यर्थ की विषय वासनाओं

नशेकी आदतों से दूर रहकर अच्छी संगति में रहकर सत्संकल्प लेकर कार्य करना चाहिए। अतःकुसंगति याने खराब प्रवृत्ति के अतःलोगों के कुसंग से दूर रहना चाहिए।

जीवन में छोटी-छोटी भूल को सुधार करते रहना चाहिए ताकि जीवन में कोई बड़ी गलती नहीं हो सके यदि किसी काम को करना है तो उसे प्रतिदिन की डायरी में नोट कर लेना चाहिए ताकि उसे याद रख कर समय पर कर सकेगे ताकि सफलता होनेपर मन संतुष्ट होगा। अतः छोटी भी भूल करने की आदत नही डालें।

मन को संतुष्टि के लिए आहार संतुलित रखना चाहिए अर्थात आहार की शुद्धि होने से अंतःकरण शुद्ध रहेगा और बुद्धि निर्मल होगी। शाकाहारी भोजन सबसे श्रेष्ठ बजट है जिससे कि शरीर में अनावश्यक तत्व उपस्थित होने से आलस्य वृति ना हो अतः आहार संतुलित रखना जरुरी है।

हमारे प्राचीन ऋषियों ने शरीर की इंन्द्रियों को रथ के घोड़े और शरीर को रथ कहाहै मन लगाम है और बुद्धि सारथी तथा शरीर में स्थित आत्मा रथ का सवार है अतः वन को इस प्रकार के अभ्यास द्वारा शुद्ध करना चाहिए जिससे कि मन के भीतर सदैव प्रसन्नता के विचार और शांति का भाव उपस्थित करेंगे। मनुष्य को शुद्ध विचार से युक्त करेगा तथा मन को इंद्रियों द्वारा विषयों के रमण से दूर रखें जिससे मन की भावना शुद्ध रहेगी। इस कारण सबसे पहले आवश्यकता है मन परढीला नही छोड़े उसपर नियंत्रण रखें।

कहने का आशय कि मन को ठीक निर्णय हेतु रखने से जीवन की सब समस्याएं अपने आप हल हो जाती है इस कारण मन पर नियंत्रण रखें ।मन कोकभी भी ढीला नही छोड़े ताकि उसके कारण जीवन मे किसी प्रकार की अनावश्यक त्रुटि नही होसके ।व्यर्थअनैतिकता की कीगई त्रुटी ही जीवन मे हरा सकती है । यदि मन पर अपना नियंत्रण रहातोयह कदापि संभव नही है।,त्रुटी पूर्ण अनैतिक कर्म ही जीवन मे अशुद्ध भावयुक्त मन के कारण होते है। मन से शुद्ध कर्महोने पर वह कर्म सराहनीय होगा तब प्राणी मनसे नहीं हारेगा तब तो निश्चित रुपसे जीवन में जीत ही प्राप्त होगी तब हम कह सकेंगे कि मनके हारे हार हे, मन के जीते जीत।

शिक्षण संस्थान संचालन के ग्रह योग

डॉ. श्रीमती पुष्पा चौहान

आज के आधुनिक व्यवसायीकरण में कोई भी क्षेत्र व्यवसायीकरण से अछूता नहीं है।शिक्षा एक पवित्र एवं सम्मानित क्षेत्र के रूप में सदियों से जाना जाता है। आज इस क्षेत्र में नये-नये आयाम खुलने के साथ इसका भी व्यवसाई करण तीव्र गति से हो रहा है।

शिक्षण संस्थान खोलने के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को मिल रही है। तकनीकी, मेडिकल एवं प्रबंधन के संस्थान खोलने के लिए तो जैसे होड़ मची हुई है। इन में प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थीगण कोचिंग का सहारा लेते हैं जिसके कारण आज कोचिंग सेंटर अति महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह सभी व्यवसाय का रूप धारण किए हुए हैं। पर ज्योतिष की आईने से देखा जाए तो पाया जाता है कि जिन जातकों की कुंडली में इससे संबंधित ग्रह योग होते हैं। कुछ ग्रह योग अनुभव एवं शोध उपरांत ज्योतिष मर्मज्ञों द्वारा पाए गए है, उन्हें यहां निम्नानुसार देखा जा सकता है-

1. यह तो पाठक जान ही गए होंगे कि कुंडली में शिक्षा प्राप्ति स्थान पांचवा भाव होता है और शिक्षा प्रदान करने के लिए भाव 5 का व्ययभाव अर्थात भाग 4 विशेष महत्वपूर्ण होता है।
2. यदि कुंडली में भाव 4 का स्वामी लग्न या लग्नेश, कर्म भाव या कर्मेश से किसी भी प्रकार का संबंध स्थापित करें तो उस जातक की इस क्षेत्र में सफलता की संभावना होती है।
3. कुंडली में विद्या के कारक गुरु एवं लेखन के कारक बुध का संबंध यदि भाव 2 अथवा भाव 4 के स्वामी से हो भी जातक क्षेत्र का चुनाव कर सकता है।
4. कुंडली में चतुर्थ से चतुर्थ यानी सप्तम भाव भी उतना ही उल्लेखनीय है जितना कि भाव चतुर्थ। यदि सप्तम भाव का स्वामी कर्म भाव या कर्मेश, लाभ भाव या लाभेश, लग्न या लग्नेश,धनिया धनेश में से किसी से भी किसी भी रूप में संबंध करता हो तो भी जातक शिक्षण संस्था खोलने की ओर प्रेरित होता है।
5. कुंडली में यदि पंचम से पंचम भाव अर्थात भाग के भाव का स्वामी चारों केंद्र के स्वामियों से संबंध बनाएं तथा इन स्थानों पर कारक गुरु एवं बुध की दृष्टि, तो भी जातक इस क्षेत्र में रुझान रखता है।
6. यदि पंचम भाव का स्वामी चतुर्थ मे अथवा नवम भाव का स्वामी अष्टम में हो, साथ ही विद्या एवं वाणी के घर में व्यापार कारक बुध की उपस्थिति अथवा दृष्टि हो, तो भी चाहता किस क्षेत्र द्वारा जीविकापार्जन करने में सक्षम होता है।

7. तुला लग्न की कुंडली में शनि भाव 4 एवं 5 दोनों का स्वामी होकर धन स्थान में बैठे तथा भाव 9 पर कारक ग्रहों गुरु अथवा बुध की दृष्टि हो तो जातक उच्च शिक्षण संस्थान चलाने वाला होता है।
8. यदि लग्न पर विद्या के कारक ग्रहों तथा गुरु एवं बुध का प्रभाव हो तथा केंद्र में मन कारक चंद्रमा गजकेसरी योग का निर्माण करें, तो जातक इस क्षेत्र विशेष द्वारा विशेष सम्मान प्राप्त करता है।
9. दशम भाव में यदि गुरु एवं बुध बैठे तथा उन पर जनता कारक शनि की दृष्टि हो,तो भी जातक जनता के बीच शिक्षा देने का कार्य करने में निपुण होता है।
10. कुंडली में गुरु एवं बुध द्वारा निर्मित हंस एवं मालव्य योग हो तथा लग्न, कर्म, धन व लाभ भाव का बली हो तो इस क्षेत्र में सफलता का परिचायक है।
11. यदि कुंडली में शिक्षा कारक गुरु स्वयं लग्नेश होकर नवम भाव अथवा उसमें बैठे आधुनिक शिक्षा के द्वितीय कारक शुक्र से दृष्टि संबंध रखें और बुध की कर्मेश होकर लग्न पर दृष्टि हो तथा शिक्षा भाव का स्वामी अपनी दृष्टि से आधुनिक शिक्षा कारक शुक्र को दृष्टि से प्रभावित करें, तो ऐसा जातक आज के आधुनिक व्यवसायिक कोचिंग सेंटर खोल कर लाभ अर्जन करता है।
12. यदि जन्म कुंडली में कर्म भाव में राहु से प्रभावित होकर चतुर्थ भाव को देखें तथा पंचम का स्वामी बुध होकर लग्न में बुधादित्य योग बना कर मन कारक चंद्रमा से युत संबंध कर ज्ञान कारक लाभेश गुरु से दृष्टि संबंध बनाएं और कर्मेश गुरु अथवा बुध की राशि में स्थित होकर लाभ भाव में हो तो ऐसा जातक व्यवसायिक कोचिंग सेंटर खोल कर शिक्षा देता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य कई तरह की ग्रह योग प्राइवेट शिक्षण संस्थान खोलने के होते हैं परंतु उन सभी को यहां स्थाना भाव के कारण देना संभव नहीं है।इस व्यवसाय से जुड़े कुछ सफल व्यक्ति की कुंडलियों का विवेचन आगे दिया जाना ज्यादा उपयुक्त समझा जा रहा है जिसे देखें-

उक्त कुंडली 1. सफल कोचिंग सेंटर चलाकर धना धन करने वाले जातक की हैं। कुंडली में विद्या कारक गुरु एवं बुद्धि के व्यापार कारक बुध की परस्पर दृष्टि संबंध योग बन रहा है। कर्मेश मंगल लाभ भावमैं ज्ञान कारक गुरु से दृष्ट हो कर गुरु की राशि में है और यही मंगल की चतुर्थ दृष्टि धन भाव में है। जनता का कारक लग्नेश शनि कर्म भाव में प्रेरक राहु के साथ युति कर बली है। आधुनिक शिक्षा कारक शुक्र योगकारक होकर भाग्य भाव को दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। उधर लग्न में बुध आदित्य योग है।साथ ही ज्ञान कारक गुरु की लग्न एवं आधुनिक शिक्षा कारक भाग्य शुक्र पर दृष्टि होने से प्रभावित है। इन्हीं कारणों से जातक ज्ञान व शिक्षा से संबंधित व्यवसाय को कोचिंग सेंटर चला रहा है।

जन्म कुण्डली 12 मार्च 1956 05:35:00	नवांश (जीवनसाथी)

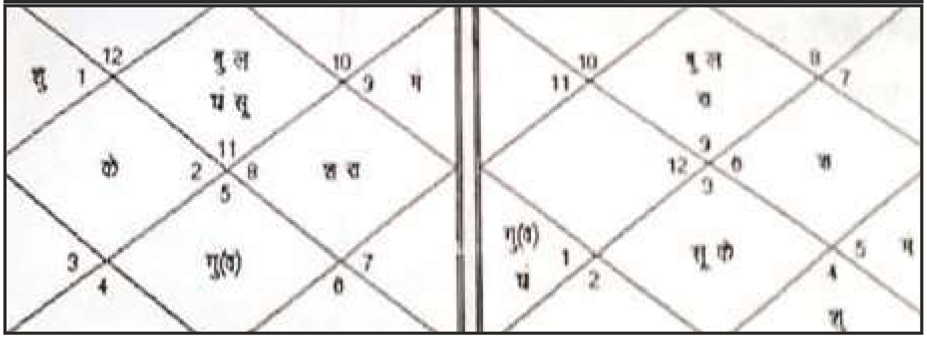

उक्त कुंडली 2 एक तकनीकी कोचिंग संस्था चलाने वाले धनाढ्य जातक की है।इस कुंडली में ज्ञान कारक गुरु स्वयं लग्नेश होकर आधुनिक शिक्षा कारक लाभेश शुक्र से परस्पर दृष्टि संबंध योग बना रहा है। सप्तम भाव में बने कर्मेश बुध भाग्येश सूर्य की युति से बने बुधादित्य योग का लग्न पर दृष्टि प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। उधर तकनीकी ग्रह मंगल की भी चतुर्थ दृष्टि शुक्र पर एवं अष्टम दृष्टि लग्न पर होकर दोनों प्रभावित हैं। शनि मंगल का नवम पंचम योग भी जातक की कुंडली में तकनीकी ज्ञान की बहुलता दर्शा रहा है।

जन्म कुण्डली 12 जुलाई 1962 18:15:00	नवांश (जीवनसाथी)

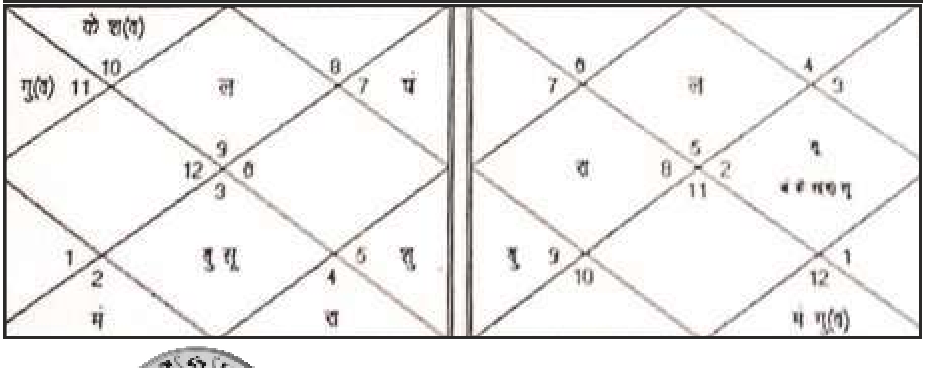

अपना व्यापार करने के ग्रह योग

श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस

हर व्यक्ति अपना व अपने कैरियर का भरण पोषण करने हेतु कोई ना कोई व्यवसाय अवश्य करता है। व्यवसाय चाहे किसी चीज का व्यापार हो या फिर किसी उत्पाद से संबंधित डीलरशिप/एजेंसी प्राप्त कर धन कमाना हो। जब तक जातक के जन्म कुंडली में ग्रह योग संबंधित व्यवसाय करने के नहीं होंगे, तब तक जातक इस और उन्नति नहीं कर पाएगा।यदि यह मालूम हो जाए कि जातक के ग्रह योग उसे इस तरह के व्यवसाय से संबंधित कार्य करने हेतु इंगित कर रहे हैं, तो जातक उस तरह के व्यवसाय करने में अधिक सफल होगा।इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए कुंडली में बनने वाले ग्रह योगों के आधार पर व्यवसाय चयन हेतु कुछ योगों को आगे दिया जा रहा है। इसके पहले यह देखना अनिवार्य है,कि व्यवसाय के लिए कौन-कौन से संबंधित भाव एवं भाव अधिपत्य एवं ग्रह होते हैं निम्नानुसार देखें-

1. भाव 7 और 10 व्यवसाय से संबंधित भाव, 2,10,11 धन संबंधित होते हैं और बुध ग्रह को व्यवसाय से संबंधित ग्रह माना गया है।
2. लग्न, चंद्र लग्न एवं सूर्य लग्न में जो बली हो उसके भाव 10 से व्यवसाय विचार किया जाता है।
3. दशमेश जिस नवांश में हो उसके नवांश अधिपत्य को व्यवसाय चयन हेतु प्रमुखता दी जाती है।

अब व्यवसाय में सफलता के कुछ ग्रहयोग देखें-

1. लग्न, चंद्र लग्न, सूर्य लग्न में से जो भी अत्याधिक बली हो उस लग्न से भाव 10 में यदि बुध हो तो जातक व्यापारी होकर व्यवसाय में सफल होता है।
2. यदि भाव 10 में कई शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो भी जातक व्यापारी होगा।
3. यदि कुंडली में लग्नेश व दशमेश एक साथ हो, तो व्यापार योग बनता है।
4. यदि भाव 10 में लग्न का स्वामी हो तो भी व्यापारी बनता है।
5. भाव 10 का स्वामी यदि भाव 1,4,7,10 केंद्रों या भाव 5,9 या भाव 11 में शुभ ग्रह से दृष्ट होकर बैठा हो, तो सफल व्यापारी बनता है। यदि दशम में बैठा ग्रह उच्च का हो, तो जातक को अधिक प्रगति कराता है। यदि दशम में बैठा ग्रह नीच का हो, कम उन्नति करते हुए उतार-चढ़ाव व्यापार में होता है।
6. चंद्रमा से बुध, शुक्र, गुरु तीनों या कोई भी ग्रह यदि भाव 1,4,7,10 में ऐसे किसी में हो तो व्यापारी बनने के योग बनते हैं।
7. बुध ,शुक्र, चंद्र यदि एक दूसरे से द्वितीयस्थ या द्वादशस्थ हो, तो भी व्यापारी बनने का योग बनता है।
8. चंद्रमा से यदि गुरु, शुक्र तीसरे या ग्याहरवें बैठे हो, तो भी व्यापारी बनने का योग बनता है।
9. यदि भाव 2 का स्वामी भाव 11 में एवं भाव 11 का स्वामी भाव 2 में हो, तो जातक को बहुत सफल व्यापारी बनाता है।
10. यदि केंद्र में पाप ग्रह हो और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो जातक मछली वह मांस से संबंधित व्यवसाय करता है। यदि भाव 9 में शनि, बुध,शुक्र हो, तो जातक कृषि द्वारा धनवान होता है।
11. यदि मंगल और भाव 4 का स्वामी किसी एक केंद्र में हो गया किसी एक त्रिकोण में या फिर भाव 11 में हो तथा भाव 10 का स्वामी चंद्र, शुक्र से युति या दृष्ट हो, तो जातक कृषि एवं पशुपालन का व्यवसाय करता है।
12. भाव 10 का स्वामी यदि सूर्य के नवांश में हो तो जातक दवा,ऊन, अन्न, सोना और मोती आदि का व्यापार कर लाभ उठाता है।
13. यदि भाव 10 का स्वामी चंद्र के नवांश में हो तो मोती, कृषि, बच्चों के खिलौने, फैंसी स्टोर, रेडीमेड स्टोर आदि का व्यवसाय करता है।

14. यदि भाव 10 का स्वामी मंगल के नवांश में हो, तो तांबा पीतल के बर्तन की दुकान व कोयला आदि का व्यापार करता है।

15. यदि भाव 10 का स्वामी बुध के नवांश में हो, तो जातक लकड़ी का कारखाना, फर्नीचर, ज्योतिष शास्त्र या वैद्य का काम करता है।

16. यदि भाव 10 का स्वामी गुरु के नवांश में हो, तो अध्यापक वृत्ति तथा स्टेशनरी आदि का व्यापार करता है।

17. यदि भाव 10 का स्वामी शुक्र के नवांश में हो, तो जानवरों की खरीद फरोख्त, चावल, किराना अथवा फैंसी स्टोर का व्यापार करता है।

18. यदि भाव 10 का स्वामी शनि की नवांश में हो, तो लोहे का व्यापार या तिल,तेल,ऊन आदि का व्यापार करता है।

19. यदि व्यापार का कारक ग्रह बुध भाव 2,3,7 या 11 मे उच्च या स्वगृही हो और क्रूर ग्रहों से ना देखा जाता हो, तो जातक एक सफल व्यापारी होता है। इस ग्रह की राशि मिथुन या कन्या उक्त भागों में पड़ी हो और बुध किसी शुभ ग्रह के साथ हो या शुभ योग बना रहा हो, तो भी कुशल व्यापारी होता है।

20. यदि भाव 10 में वायु तत्व की राशि मिथुन, तुला, कुंभ में से हो, तो इलेक्ट्रॉनिक्स के कार्य, वैज्ञानिक का कार्य करने की संभावना होती है। यदि भाव 10 में अग्नि तत्व की राशि मेष, सिंह या धनु हो तो जातक इंजीनियर या लोहे या धातु से संबंधित कार्य करता है। यदि भाव 10 में पृथ्वी तत्व राशि वृष कन्या या मकर हो, तो जातक प्रशासनिक कार्य, आर्थिक कार्य, सिविल कार्य,धातु संबंधित कार्य या खेती-बाड़ी या एजेंसी का कार्य करता है। और यदि भाव 10 में जल तत्व की राशि कर्क, वृश्चिक, मीन में से कोई हो, तो तरल पदार्थ, रसायन, डेरी व्यापार,सामुद्रिक जहाजरानी या ठंडे पेय पदार्थों से संबंधित कार्य करने की संभावना होती है।

21. श्री दशमेश चंद्र पराक्रम में धनु राशि में हो और इस पर धनेश मंगल व लग्नेश शुक्र की नवम भाव में बैठकर दृष्टि हो, लाभेश सूर्य भाग्येश बुध के साथ लाभ भाव में होकर पंचमेश शनि से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक अपना स्वतंत्र व्यवसाय सौंदर्य प्रसाधन से संबंधित कार्य करता है।

22. यदि कर्मेश शुक्र पर शनि की दृष्टि हो, भाग्येश मंगल- लग्नेश सूर्य पंचमेश गुरु राहु के साथ युति कर केंद्र में हो और लाभेश बुध की स्वगृही चंद्रमा पर दृष्टि हो, तो ऐसा जातक बिल्डिंग डिजाइन आदि का स्वतंत्र व्यवसाय करता है।

23. यदि दशमेश मंगल स्वगृही होकर धनेश सूर्य के साथ दशम में हो, भाग्येश गुरु लग्नेश चंद्र के साथ गजकेसरी योग बनाता हो, लाभ भाव में राहु वृषभ का हो, लाभेश शुक्र कुंडली में उच्चाभिलाषी हो, साथ ही पराक्रम भाव का स्वामी बुध दशम भाव से दशम अर्थात सप्तम के स्वामी शनि के साथ भाग्य भाव में युति करता हो, तो ऐसा जातक कपड़ा व्यापार के क्षेत्र में सफलता अर्जित करता है।

24. कुंडली के धनभाव में स्वगृही चंद्र राहु के साथ स्थित होकर भाग्येश शनि के साथ परस्पर दृष्टि संबंध रखता हो, कर्मेश गुरु भाग्यस्थानस्थ होकर लग्न में बैठे आयेश मंगल पर, पराक्रम भाव उसके स्वामी सूर्य पर,पंचम भाव में शुक्र की राशि पर दृष्टि देता हो, इन सबके अतिरिक्त व्यापार का कारक बुध लग्नेश होकर पंचमेश शुक्र के साथ चतुर्थ में बैठकर दशम पर दृष्टि देता हो, कैसा जातक रेडिमेट कपड़े जैसे व्यवसाय में अति सफल होता है।

25. लग्न कुंडली के अष्टम भाव में लाभेश शनि उच्च राशि का होकर धनेश स्वगृही मंगल से परस्पर दृष्टि संबंध बनाता हो, साथ ही अष्टमेश व पराक्रमेश शुक्र व्यवसाय के कारक बुध के साथ लाभ भाव में स्थित हो और कर्मेश गुरु स्वयं कर्म भाव पर पूर्ण दृष्टि करता हो, तो ऐसा जातक लोहे के व्यवसाय में सफलता अर्जित करता है।

26. कुंडली के दशम भाव में इंजीनियरिंग का कारक शनि राहु के साथ हो, कर्मेश सूर्य लाभेश बुध, धनेश व पंचमेश गुरु, दशम से दशम भाव यानी सप्तम भाव का स्वामी शुक्र के साथ भाग्य भाव में चतुर्ग्रही योग बनाकर शनि की पराक्रम भाव की मकर राशि पर दृष्टि देते हो तथा लग्नेश मंगल अष्टम भाव में बैठकर धन भाव में बैठे भाग्येश से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक बिल्डिंग डिजाइन से संबंधित कार्य का अपना स्वतंत्र व्यवसाय करता है।

इसके अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की ग्रह योग भी स्वतंत्र व्यवसाय या व्यापार करने के होते है, परंतु उन सभी को यहां विषय विशालता एवं स्थानाभाव को ध्यान में रखते हुए दिया जाना संभव नहीं हो पा रहा है। उन ग्रहयोगोको तो जातक स्वयं भी आगे दी जा रही कुछ विभिन्न प्रकार के स्वतंत्र व्यवसाय से संबंधित कुंडलियों के विवेचन में से निकालने का प्रयास कर सकते हैं। आगे हमने विभिन्न व्यवसायों को अलग-अलग विस्तार से उल्लेखित किया है जिन्हें पाठक देखें। इसके अतिरिक्त उन्ही विभिन्न व्यवसायों से संबंधित सफल व्यवसायियों की कुंडलियों का विवेचन दे रहे हैं, जिनमें उक्त ग्रहयोगों को स्वतः देखा जा सकता है। **निरंतर...**

राहुमंगल अंगारक योग के फल

पं. सी आर शर्मा
(गौतम गुरु जी) भोपाल

राहु के साथ मंगल की युति को अंगारक योग कहा जाता है अंगारक योग से ही स्पष्ट है कि यह उग्रता तथा शीघ्र निर्णय की आदत के कारण से कार्य में असफलता और व्यवधान उपस्थित कराता है उसका विस्तृत विवेचन निम्नानुसार है...

राहु+मंगल की युति फल

राहु +मंगल की युति लगभग वर्ष में एक बार होती है। ज्योतिष की भाषा मे ऐसे अंगारक योग के नाम से जाना जाता है। मंगल की राहु की युति से क्रूरता एवम उग्रता बढ़ जाती है।

राहु एवम मंगल में स्वभावगत समता एवम मैत्री भाव है।

यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि यह युति कौन सी राशि एवम कौन से भाव में बन रही है , इस प्रकार 12 लग्न 12 भाव मिलकर =144 प्रकार से यह युति घटित होती है ।वास्तविक फलादेश जन्म कुंडली मे स्थिति और युति देखकर बताये जा सकते है।

ऐसा जातक अति उत्साही होगा,गुस्सा जल्दी आएगा। इस स्वभाव के कारण जातक प्रत्येक कार्य में उतावलापन रखता है जल्दी कार्य का निपटारा और लाभ लेने की इच्छा रखता है इस कारण असफलता और नुकसान की संभावना अधिक रहती है यात्रा करते समय वाहन से सतर्कता आवश्यक होती है अन्यथा दुर्घटना अथवा मशीनरी कार्यो से भय रहेगा। रक्त विकार, ब्लड प्रेशर की शिकायत रहेगी। यह युति भाव क्रं. 1/3/6/10 स्थानों में पराक्रम में बृद्धि करेगी।प्रायः जातक के बड़े भाई नही होते है अथवा घर मे स्वयम ही बड़ा होता है। पूर्वजों की सम्पति नष्ट हो जाती है। अदालती व्यवहार में असफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक खेलकूद प्रतियोगिता में एवम साहसिक कार्यो में आगे बढ़ता है। जातक को विष बाधा का शत्रु षड्यंत्र का भय रहता है। राहु को सूर्य के समान तथा मंगल को नेवले के समान माना जाता है,अतः मंगल के प्रभाव से जातक विष एवम विषैले शत्रु को समूल नष्ट करने में जातक सफल होता है। कर्क राशि मे यह युति सार्थक, सकारात्मक होती है जबकि मिथुन एवम मकर राशि मे भी सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए है।

1-नाड़ी ज्योतिष अनुसार ऐसा जातक अत्यधिक भावुक होता है,छोटी छोटी बातों पर क्रोधित भी होता है,जातक अंहकारी भी हो जाता है।जातक को खून में खराबी या रक्तचाप का पूरा पूरा खतरा होता है।

2-नाड़ी ग्रंथो के अनुसार जातक का बड़ा भाई नही होता है साथ ही उसका एक भाई को आकस्मिक कष्ट या मृत्युकारक रोग किन्ही कारणों से हो सकता हैसावधानी औरवैदिक उपाय करना अशुभत्व में कमी देसकता है।

राहु+बुधकी युति परिणाम

बुध के साथ राहु की युति वर्ष में एक बार ही सम्भव है।फलित ज्योतिष मे इसे शुभयोग नही कहा जाता है । राहु एवम बुध में नैसर्गिक मित्रता है।बुध की राशि कन्या में राहु को स्वग्रही राहु कहा जाता है तथा मिथुन राशि मे उच्च का कहा जाता है। परंतु जब राहु एवम बुध की युति होती है तब राहु जातक की बुद्धि को कुंठित कर देता है। यह देखना सबसे महत्वपूर्ण है कि 12 राशि +12 भाव=144 प्रकार की युति में से जातक को कौन सी युति है अतः वास्तविक फलादेश हेतु जातक की पत्रिका में योग देखना आवश्यक है।

ऐसा जातक प्रखर बुद्धिमान होते हुए भी मानसिक रूप से रुग्ण होगा। घर या ऑफिस के पास किसी विजातीय परिवार से पारिवारसे संपर्क बन जाते है।

यह युति 1/3/5/9/10/11वे भावों में शुभ फल दायक स्थिति मानी जाती है।ऐसा जातक खुद को बहुत होशियार ओर दूसरों को महामूर्ख समझता है।ऐसे जातक को उच्च शिक्षा में बहुत बाधाये आती है। अशुभ प्रभाव होने से शिक्षा अधूरी छूट जाती है।

इस युति का सबसे रचनात्मक प्रभाव कन्या राशि मे शुभ होता है।

1-नाड़ी ग्रंथो के अनुसार ऐसे जातक के जन्म स्थान के पास विजातीय धर्म का धर्म स्थल होता है।

ऐसे जातक को विजातीय महिला से लाभ (मित्रता)होती है।उसके ललाट या सर में कोई विकृति का चिन्ह होता है।जातक फोटो ग्राफी में सिद्धहस्त होता है।अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय नुकसान दायक होगा।

2-जातक की बहन का सम्बंध भी विजातीय पुरुष के साथ होने की सम्भवना भी हो सकती है।

क्रमशः आगे राहु+गुरु एवम राहु +शुक्र के बारे में जानिए।

कुण्डली मिलान में अष्ट कूट के साथ ग्रहयोग मिलाना भी जरूरी

आचार्य रामअभिलाष शर्मा

सनातन धर्म में विवाह एक प्रमुख संस्कार है। बहुधा अष्टकूट मिलान में गुणों के आधार पर विवाह निश्चित होता है। सामान्य तौर पर कुंडली मिलान में अष्टकूट गुण मिलान तथा मांगलिक मिलान का विचार किया जाता है।

पारम्परिक भारतीय ज्योतिष में ये नहीं मिलता है कि कुंडली मिलान प्रस्तुत जातकों की कुंडलियों के अनुसार जातकों का विवाह होना सम्भव है या नहीं। मेरे मन में यह विचार एक अभिभावक के लड़के के लिए 21लडकियों के कुंडली मिलान के बाद आया और उनमें भी आज तक विवाह की आपसी सहमति नहीं बन पाई।

इस सन्दर्भ में वैदिक पद्धति के अलावा कृष्णमूर्ति पद्धति के सिद्धांत जिसकी सहायता से यह जाना जा सकता है कि जिन जातकों की कुंडली मिलाई जा रही है या मिलान हेतु आई है। लड़के अथवा लड़की का विवाह उनमें से किस कुंडली वाली लड़की या लड़के से होगा या उनमें से किसी से नहीं होगा।

सिद्धान्ततः यदि लड़के की जन्म कुंडली के शासक ग्रह लड़की की वर्तमान दशा, अंतर्दशा,प्रत्यन्तर दशा से मेल खाते हो। इसी तरह लड़की की जन्म कुंडली के शाशक ग्रह लड़के की वर्तमान दशा अंतर्दशा एवं प्रत्यन्तर दशा से मेल खाते हों तो ऐसे लड़के लड़की का विवाह अवश्य होता है, अष्टकूट मिलान चाहे कुछ भी हो।यह प्रामाणिक है एक विवाह मेरी अनुसंशा पर सफल भी हुआ है। प्रेम विवाह में अक्सर कुंडली मिलान के चक्कर में जातक उनके परिजन ऐसा भ्रमित

होते हैं कि विवाह की सफलता पर हमेशा संशय एवं प्रश्न चिह्न बना रहता है यह एक ऐसी पद्धति है जिसमें यदि एक साथ अनेक कुंडलियां मिलान हेतु आ जांय और उनमें से एक कुंडली के साथ अनेक कुंडलियां अच्छी तरह से मिल भी रही हों तो भी इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि इनमें किस के साथ विवाह होगा। वैदिक ज्योतिष में अष्टकूट मिलान पद्धति के विषय में अधिकांश ज्योतिषों का ज्ञान कम्प्यूटर साफ्टवेयर तक ही सीमित है । जबकि सटीक जानकारी के लिए उन्हें और जानने की आवश्यकता है। यदि गुण कम मिल रहे हों तो भी विवाह हो सकता है अधिकांश ज्योतिष भी ऐसे ही करते हैं किन्तु साधारण व्यक्ति ऐसा इसलिए मानने को तैयार नहीं क्योंकि उसने यही अब तक जाना है कि 18 गुणों से कम विवाह शुभ नहीं होता है। कम्प्यूटर साफ्टवेयर सब बताने के बाद भी यह लिखता है कि किसी योग्य ज्योतिषी से सलाह लें, अधिकांश ज्योतिषी भी ऐसे ही हैं। गुण मिलान में सर्वाधिक अंक नाड़ी के 8 अंक तत्पश्चात भकुट के 7 अंक। अन्य कूटों को छोड़ दें तो 15 अंक इन्ही दोषों के घट जाते हैं। यहां यह भी बताते चलें कि जिन दोषों का परिहार कुंडली में हो जाता है उनके अंक गुण मिलान में जुड़ जाते हैं और गुण बढ़ जाते हैं। अष्टकूट गुण मिलान में सबसे पहले ग्रह मैत्री देखें यदि यह ठीक है तो सब ठीक है। भकुट दोष के लिए हम इसे देखते हैं ।बारह राशियों के उनके स्वामी ग्रहों की मित्रता के अनुसार 6-6के दो वर्गों में बांटते हैं। मेष ,कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु एवं मीन यह 6 राशियां आपस में मित्र राशिया हैं ।शेष 6 राशियां वृषभ, मिथुन, कन्या ,तुला, मकर और कुंभ आपस में मित्र राशियां हैं। मित्र राशियों में आपस

में भकुट दोष नहीं लगता है। उदाहरणार्थ वृषभ और तुला इन दोनों राशियों के स्वामी (शुक्र) एक हैं राशीश मित्रता है षडाष्टक भकुट दोष है लेकिन इसका परिहार हो रहा है। मित्र राशियों में भी भकुट दोष नहीं लगता ।लेकिन कम्प्यूटर में भकुट दोष बतायेगा। अब जिन ज्योतिषियों का ज्ञान कम्प्यूटर साफ्टवेयर तक ही सीमित हैं वो तो भकुट दोष ही बतायेंगे। भकुट दोष तीन प्रकार का होता है। । 1. द्विर्द्वादश 2.षडाष्टक 3.नवं पंचम।

विशेष ध्यान दें नवम पंचम भकुट दोष में पूर्व सिद्धान्त पूरी तरह से लागू नहीं होता है। राशियों के चार जोड़े मित्र होते हुए भी भकुट दोष का प्रभाव देते हैं।

1.वर की राशि यदि कर्क हो तथा कन्या की राशि वृश्चिक हो

2.वर की राशि कन्या हो तथा लड़की की राशि मकर हो 3.वर की राशि कुंभ हो तथा कन्या की राशि मिथुन

4.वर की राशि मीन हो तथा कन्या की कर्क हो तो इन चार जोड़े की राशियों में भकुट दोष लगेगा।

लेकिन यही राशियों का क्रम विपरीत हो जाय यानि जो लड़के की राशियां हैं वह कन्या की राशि तथा कन्या की राशि वर की राशि का स्थान परिवर्तन हो जाय तो भकुट दोष का परिहार हो जाता है ।

अष्टकूट में भकुट के बाद सबसे ज्यादा अंक नाड़ी के होते हैं। सिद्धान्तत : कुंडली मिलान में यदि तारा दोष नहीं तो नाड़ी दोष नहीं लगता है। इसके अतिरिक्त लड़के का जन्म इन 8 नक्षत्रों रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, विशाखा, श्रवणा, उत्तराभाद्रपद और रेवती में तो नाड़ी दोष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यदि लड़की का जन्म भी इन आठ नक्षत्रों में हुआ हो तो लड़के का जन्म नक्षत्र देखने की कोई आवश्यकता नहीं।

नाड़ी दोष बिप्राणां,
वर्ण दोष स्य च क्षत्रिय ।
गण दोषस्य वैश्येतु
योनि दोषस्य सुताम्जा।।

नाड़ी दोष केवल ब्राह्मण वर्ण में देखा जाता है। कुछ लोग ब्राह्मण वर्ण को ब्राह्मण जाति समझते हैं ऐसा बिल्कुल नहीं है। ब्राह्मण वर्ण राशि के ब्राह्मण वर्ग से देखना चाहिए। कर्क, वृश्चिक,मीन राशियां ब्राह्मण वर्ण में आती हैं । अतः नाड़ी दोष केवल इन्हीं राशियों में देखना चाहिए, बाकी की राशियों में नाड़ी दोष देखना ही नहीं है।इन सिद्धान्तों के अतिरिक्त भी नाड़ी दोष परिहार के अन्य सिद्धान्त हैं।

1.राशियां एक हों नक्षत्र अलग-अलग हों, नक्षत्र भी एक हों तो उनके चरण अलग-अलग हों पदाभेद को देखना चाहिए तो यहां नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है।

2.यदि राशीश मैत्री हो तो नाड़ी दोष नहीं देखना चाहिए यदि नाड़ी दोष है भी तो प्रभाव शून्य होता है।

3.इन 14 नक्षत्रों में नाड़ी दोष नहीं लगता है लेकिन नक्षत्र चरण अलग-अलग हों तथा ग्रह मैत्री का मिलान हो रहा हो।

नक्षत्र इस प्रकार हैं, भरणी, कृतिका , रोहणी ,मृगशिरा आर्द्रा, पुष्य ,मघा, विशाखा, अनुराधा, श्रवणा ,घनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद , उत्तराभाद्रपदा, एवं रेवती। कन्या एवं धनु राशि को छोड़कर इसमें दस राशियां तो आ ही गई। अष्ट कूट से ज्यादा सटीक कालप्रकाशिका पद्धति (दस कूट मिलान) है। लेकिन उत्तर भारत में यह प्रचलन में नहीं है।

कुंडली मिलान में अष्टकूट के अंकों से ज्यादा महत्वपूर्ण सप्तम भाव, सप्तमेश गुरु और शुक्र की शुभता पर अधिक ध्यान देना चाहिए। सप्तमेश अस्त या पाप ग्रहों के प्रभाव में तो नहीं है। सन्तान भाव लग्नेश आदि को भी देखना चाहिए।

विवाह जन्म जन्म का बन्धन है,मात्र कम्प्यूटर साफ्टवेयर पर आधारित प्राप्त अष्ट कूट अंकों पर ही निर्भर होकर कोई निर्णय न दें।

कुंडली का सूक्ष्म अवलोकन कर ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

फलित ज्योतिष में नाभस योग का महत्व

ऋषिकुमार शुक्ला
से.नि.डीजीपी मप्र

नाभस विषय के नाम मात्र से ही स्पष्ट है कि यह नाभस योग, नभ अर्थात् आकाश से जुड़ा है। यह एक योग नहीं अपितु योगों का समूह है।

समस्त सातों ग्रह मिलकर इस योग को निर्मित करते हैं। सूर्य से सभी ग्रहों का सम्बंध ही ज्योतिष का आधार है। यह योग समूह किसी भी कुंडली को परिभाषित कर देते हैं। इनको सारांश में समेटना ज़रा कठिन है। यह कुल 32 योग माने, 20 आकृति योग, 7 सांख्य योग, 3 आश्रय तथा 2 दल योग। ऐसी कोई कुंडली नहीं जिन में इन में से कोई योग ना हो। चूँकि सभी ग्रह मिल कर इन योगों का सृजन करते हैं अतएव बिना इनके अध्ययन के कुंडली पर फलित करना सही फलित निरूपणा मे पूर्णता हेतुउचित नहीं होता।

नाभस योग एक संक्षिप्त नजर

लेखक दैवज्ञ आभिमंत्रा

नभ में निर्मित आकृतियाँ ही राशि तथा नक्षत्रों को स्वरूप देते है. इन्ही को नाभसयोग कहा जाता हैं। नाभस योग एक संक्षिप्त नजर में ज्योतिष आचार्य दैवज्ञ आभिमंत्रा परम आदरणीय ऋषिमहर्षि पाराशर जी ने अपने होरा शास्त्र में कुछ विशेष योगों का वर्णन किया है, जिनकी संख्या 32 है, जो निम्न हैं........

1. आश्रय योग- (3)
2. दल योग - (2)
3. आकृति योग- (20)
7. संख्या योग- (7)
कुलयोग- (32)

प्रथम 3 योग (आश्रय) राशियों के स्वभाव पर आधारित हैं, शेष योग ग्रहों की स्थिति पर बनते हैं, आश्रय योगकुल 3

रज्जु योग- सभी ग्रह चर राशियों में हों,

मूसलयोग- सभी ग्रह स्थिर राशियों में हों, **दलयोग** -कुल2

सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में होंने पर दल योग कहलाता हैये दो प्रकार के है।

माला - सभी शुभ ग्रह केन्द्र में तथा क्रूर या पाप ग्रह केन्द्र से बाहर हों,

सर्प - सभी क्रूर ग्रह केन्द्र में तथा शुभ ग्रह केन्द्र से बाहर हों,

केन्द्र में लग्न भावसम्मिलित नहीं है,

संख्यायोग कुल 7

गोल - जब सभी 1ही भाव में,
युग - सभी ग्रह 2 भावों में
शूल - सभी ग्रह 3 भावों में
केदार - सभी ग्रह 4 भावों में
पाश - सभी ग्रह 5 भावों में
दाम - सभी ग्रह 6 भावों में
वीणा - सभी ग्रह 7 भावों में

इन्हें याद कैसे किया जाये तो सूत्र प्रस्तुत है. एक पंक्ति याद कर लें विंशोतरी दशा पर करें सारे योग गोल

वि- वीणा
द - दाम
प - पाश
क - केदार
स - शूल
य - युग
ग - गोल

आकृति योग (20)

3 योग ! गदा, !! शकट !!! पक्षी

(इन योगों में केवल 2 भावों में सभी ग्रह होते हैं,)

1. गदा योग- जब लगातार 2 केन्द्रों में सभी ग्रह हों, 1-4, 4-7, 7-10, या 10-1, (इन चारों के भी अलग अलग नाम हैं,)

2. शकट योग- सभी ग्रह लग्न व सप्तम (1-7) में हों,

3. विहग योग - सभी ग्रह चतुर्थ व दशम (4-10) में हों, (इसे पक्षी योग भी कहते हैं

(निम्न 2 योग 3 भावों से बनते है, यह भी 4 प्रकार से बनता है,

(1,5,9, 2,6,10, 3,7,11, 4,8,12), भाव अनुसार फल होते हैं,

4. श्रृंगाष्टक योग- सभी ग्रह लग्न से तीनों त्रिकोण (1,5,9) में हों

5. हल योग- यदि लग्न के अतिरिक्त अन्य त्रिकोण में (2,6,10, 3,7,11, 4,8,12) में सभी ग्रह हों तब। (निम्न 4 योग - ये चार भावों से बनते हैं)

6. वज्रयोग- सभी शुभ ग्रह लग्न व सप्तम (1-7) व पाप ग्रह चतुर्थ व दशम (4-10) में

7. यव योग - सभी पाप ग्रह लग्न व सप्तम में (1-7) और शुभ ग्रह चतुर्थ व दशम (4-10) में

8- कमलयोग- सभी ग्रह चारों केन्द्र में

9. वापीयोग- ग्रह चारों केन्द्रों के बाहर हों, (अर्थात पणफर व अपोक्लिम में,) (निम्न 4 योग जब लगातार 4 भावों में सभी ग्रह हों)

10. यूप योग- लग्न से चतुर्थ तक

11. शरयोग- चतुर्थ से सप्तम तक

12. शक्तियोग -सप्तम से दशम तक

13. दण्डयोग- दशम से लग्न तक (यहां ध्यान दें कि- किसी भी ग्रह की भाव स्थिति उस भाव के मध्य भोगांशों से करें,जैसे - यदि लग्न में स्थित ग्रह 15 अंश से कम पर है तो वह दशम से लग्न तक माना जाता है, अधिक अंश पर लग्न से चतुर्थ तक माना जाएगा,) (निम्न 4 योग - जब सभी ग्रह किसी भी केन्द्र से लगातार 7 भाव (लेकिन 180 अंश के अंतर तक) हों, भावमध्य भोगांशों से निर्धारित करें,)

14. नौकायोग- सभी ग्रह लग्न से सप्तम तक,

15. कूटयोग- सभी ग्रह चतुर्थ से दशम तक,

16. छत्रयोग- सभी ग्रह सप्तम से लग्न तक,

17.- चाप वोग- सभी ग्रह दशम से चतुर्थ तक

18. अर्ध चंद्रयोग - किसी भी भाव से प्रारंभ करते हुए लगातार 7वें भाव तक सभी ग्रह स्थित हों(180अंश की अक्ष में)

19 - चक्र योग- लग्न से प्रारंभ करते हुए सभी ग्रह 1- 1 भाव छोड़कर स्थित हों, 1,3 5,7,9,11 में

20 - समुद्रयोग - सभी ग्रह द्वितीय भाव से 1-1 भाव छोड़कर स्थित हों, 2,4.6,8 10,12

फलित ज्योतिष में नाभस योगों के फल

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

परिभाषाः- नाभस योग, नभ अर्थात आकारी से जुड़ा है आकाश में ग्रहों की स्थिति के अनुसार खास आकृति के आधार से बनने वाले योग को नाभस योग कहा जाता है। अर्थात् आकाश में विशेष आकार प्रकार से दिखने वाले ग्रहों के योग को नाभस नाम से जाना जाता है।

महत्वः- नाभस योगों का फल किसी दशा विशेष पर आधारित नहीं होकर जीवन भर मिलता है। अर्थात् इस योग में जन्म लेने वाले व्यक्ति पर जीवन भर इस योग का प्रभाव रहता है।

योग की संख्या और योग के प्रकारः- नाभस योग की संख्या 32 होती है। इस योग में 7 ग्रहों को ही माना जाता है राहु-केतु की गणना नहीं होती। नाभस योगों को 4 विभागो में बांटा गया है।

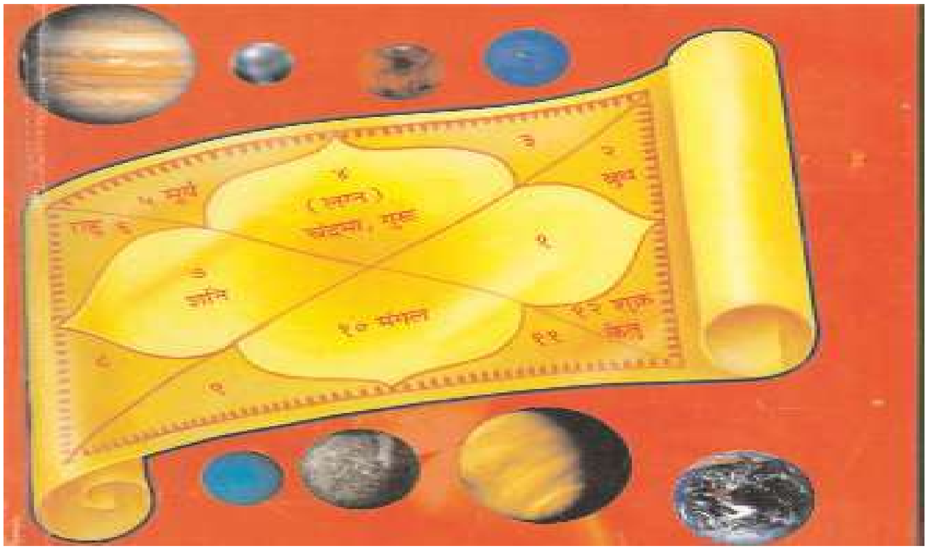

(अ) बीस आकृति योग

(ब) तीन आश्रय योग

(स) दो दल योग

(अ) बीस आकृति योग

क्रं.	आकृति	योग का नाम	पहचान	फल
1	नौ	नौ	1 से 7 भावों तक लगातार ग्रह	पानी से लाभ प्राप्ति लेकि कंजूस वृत्ति
2	ढेर, चोरी	कूट	चौथे भाव से दसवें भाव तक लगातार ग्रह	क्रूर स्वभाव, दण्ड देने वाला अथवा जांच अधिकारी
3	छतरी	छत्र	7 से 1 भाव तक लगातार ग्रह	बुद्धिमान, राजयोग, दीर्घायु
4	धनुष	चाप	10 से 4 भावों तक लगातार ग्रह	निर्बल भाग्य, झूठ बोलने वाला, प्रौढ़ावस्था में सुख, जेल अधीक्षक
5	खम्भ	यूप	1 से 4 भावों में लगातार ग्रह	आध्यात्मिक, अनुशासित, स्त्रीसुख यज्ञ करने वाला
6	बाण	शर	4 से 7 भावों में लगातार ग्रह	हिंसक वृत्ति, सुरक्षा देने वाला, गिरफ्तार करने वाला
7	माला	शक्ति	7 से 10 भावों में लगातार ग्रह	निर्धन, दीर्घायु, आलसी, विवाद करने वाला
8	डंडा	दण्ड	10 से 1 भाव में लगातार ग्रह	धन एवं परिवार सुख में कमी, दुखी प्रकृति, सेवा करने वाला
9	आधाचांद	अर्धचंद्र	के 3 रहित भाव से लगातार 7 भावों में ग्रह	धनवान, राजसुख, भाग्यशाली
10	बावड़ी	वापी	केन्द्र रहित आपस में केन्द्र में ग्रह	राजयोग, धनयोग, संतोषी
11	कमल	कमल	1,4,7,10 में सातों ग्रह	वैभव, दीर्घायु, प्रसिद्ध राजयोग
12	पक्षी	विहग	4 एवं 10 में सातों ग्रह	भ्रमणशील, परदेशी, दूत, काम क्रिया से धन
13	गाड़ी	शकर	1 से 7 में सातों ग्रह	रोगी, धनहीन, कम सहयोगी, चालक
14	हल	हल	लग्न रहित परस्पर त्रिकोण में ग्रह	कृषि में रूचि, कम सहायक, खिन्न मन वाला
15	तिकोन	श्रृंगाटक	1,5,9 में सातों ग्रह	राजप्रिय, मुकाबलेवाज, धनी, द्वेषी
16	गढा	गढा	पास पास के दो केन्द्रों में ग्रह	धनी प्रसिद्ध, गायन कुशल
17	चक्र	चक्र	1,3,5,7,9,11 में सातों ग्रह	चक्रवर्ती राजा, सर्वमान्य
18	समुद्र	समुद्र	2,4,6,8,10,12 में सातों ग्रह	धनी, लोकप्रिय, पुत्रवान, सदाचारी
19	बिजली	वज्र	1,7 में निसर्ग शुभ, 4,10 में निसर्ग पाप	सुखी, सफल, प्रौढ़ावस्था में दुखी
20	जौ	यव	1,7 में निसर्ग पाप, 4,10 में निसर्ग शुभ	धन, पुत्र, यश मंगल कार्य, प्रौढ़ावस्था में सुख

तीन आश्रय योग

नाम	पहचान	फल
रज्जु	सातों ग्रह चर राशि में	भ्रमणशील, दूर देश में वास, कठोर क्रोधी
मुशल	सातों ग्रह स्थिर राशि में	विद्या, मान, धन, स्थिर, विचार, राजप्रिय, पुत्र सुख
नल	सातों ग्रह द्विस्वभाव राशि में	जमाधन, कुशल, उपकारी शरीर में विफलता

दो दल योग

माला	4,7,10 में बुध, गुरु, शुक्र	धनी, परिवार, सुखी, सुदर्शन सम्पन्न खानपान का वैभव
सर्प	4,7,10 में सूर्य, मंगल, शनि	निर्धन, क्रूर, दीनदुखी, चालाक, परायामाल हड़पने वाला

(द) सात संख्या योग

आकार	नाम	पहचान	फल
गुट	गोल	1 राशि में सातों ग्रह	दरिद्र, आलसी दुखी
जोड़ा	युग	2 राशि में सातों ग्रह	पाखण्डी, अनादर, निर्धन
त्रिशूल	शूल	3 राशि में सातों ग्रह	तीखा, हिंसक, मुकाबलेबाज, कम आदर करने वाला
भूखण्ड	केदार	4 राशि में सातों ग्रह	धन सम्पत्ति, सत्यप्रिय, परोपकारी, सुखी
जाल	पाश	5 राशि में सातों ग्रह	सदाव्यस्त, मजबूर, बहुभाषी, सेवकयुक्त
रस्सी	दाम	6 राशि में सातों ग्रह	नीति नियम वाला, माननीय, प्रसिद्ध, समृद्ध, विद्वान
वीणा	वल्लकी	7 राशि में सातों ग्रह	धनी, धैर्यशाली, सुखी, शौकिन

(द) सात संख्या योग

इन 32 नाभस योगो में ही सब मनुष्य का जन्म होता है अर्थात् इनमें से कोई ना कोई योग हर कुण्डली में मिलेगा। आकृति, आश्रय एवं दल योग का आधार भाव है संख्या योग, राशि संख्या से बनते हैं। तीन तरह के योग यदि एक ही कुण्डली में बनते हैं तो उस कुण्डली में आकृति योग का फल मिलेगा।

अविवाहित और बेरोजगार होने के ज्योतिषीय योग

डॉ.मुक्ता जैन

फलित ज्योतिष के अंतर्गत प्रयास करते रहने पर भी विवाह और रोजगार उपलब्ध नहीं होता यदि होता भी है तो समय निकलने के पश्चात बड़ा विलंब होता है ज्योतिषी दृष्टि से ऐसे योग को ढूंढ कर उनका उपाय और प्रयास किया जाए तो शीघ्र सफलता मिलने के अवसर मिल सकते हैं।पहले हम अविवाहित रहने के योग को स्पष्ट करते हैः

अविवाहित योग

विवाह नही होने के कई कारण हो सकते है। जैसे -

1 - उच्च शिक्षा करने में विवाह की उम्र निकल जाना।

2 - सही उम्र में सही दशा का न आना।

3 - घरेलू जिम्मेदारी का होना।

4 - मन पसन्द जीवन साथी का नही मिलना।

5 - घर से प्रेम विवाह की अनुमति का नही मिलना।

6 - अपने कॅरियर को ले कर उच्च महत्वाकांक्षी होना।

7 बेरोजगार होना

ओर भी अनेक कारण हो सकते है जिसके कारण विवाह नही होता या चाह कर भी विवाह नही कर पाते है।

जब कुंडली में वैवाहिक जीवन के सभी घटक पीड़ित और कमजोर हो और शुभ प्रभाव से हीन हो अविवाहित योग बनता है।

यदि कुंडली के सप्तम भाव में कोई पाप योग (गुरु-चांडाल योग, ग्रहण योग अंगारक योग आदि) बना हुआ है, सप्तम भाव में कोई पाप ग्रह नीच राशि में बैठा है ,राहु-केतु सप्तम भाव में शत्रु राशि

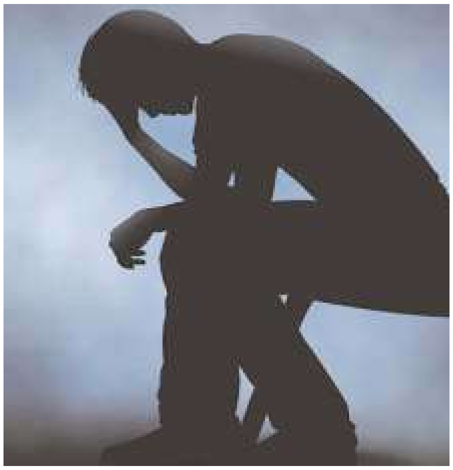

में है। सप्तम भाव के आगे और पीछे दोनों ओर और पाप ग्रह, सप्तमेश का पाप भाव (6,8,12) शुक्र नीच राशि (कन्या) में , केतु के साथ हो, सूर्य से अस्त हो, अष्टम भाव में हो या अन्य किसी प्रकार पीड़ित हो स्त्री की कुंडली में मंगल नीच राशि (कर्क) में हो, राहु शनि से पीड़ित हो, बृहस्पति नीचस्थ हो राहु से पीड़ित हो पाप भाव (6,8,12) के स्वामी यदि सप्तम भाव में हो सप्तम में शत्रु राशि या नीच राशि (तुला) में सूर्य हो तो विवाह नहीं होता।

योग सूत्र

लग्नाधारित कुंडली में 2/7/8/12 भाव/भावेश पीड़ित, सप्तम भाव/भावेश दो पापी ग्रहों से या त्रिक भाव/भावेश से युति/दृष्टि/राशि/नक्षत्र द्वारा संबंध बनाए अथवा वक्री/अस्त/पाप कर्तरी/नवांश शत्रु राशि का हो,विवाह कारक गुरु,शुक्र,मंगल पीड़ित हों तो कुंडली मे अविवाहित योग बनता है।

बेरोजगार होने के ग्रह योग

जन्मकुंडली में स्थित ग्रह व्यक्ति के जीवन के हर क्षेत्र पर कार्य करते है। ग्रहों का अच्छा या बुरा प्रभाव जन्मकुंडली में उनकी स्थिति के साथ-साथ भाव स्वामित्व, ग्रह कला, ग्रह बल, ग्रह फल तथा इनकी महादशा व अंतर्दशा पर निर्भर करता है। जीवनचक्र में सही आयु में किसी शुभग्रह की महादशा या अंतर्दशा के आने पर व्यक्ति को जीवन के सुखसमृद्धि की प्राप्ति करवाती है। यदि पढ़ाई पूरी करने के बाद अच्छी नौकरी ढूंढते समय में शुभग्रह की दशा चल रही हो तो अच्छी जॉब व पदप्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। यदि जवानी के दौरान अशुभग्रह की दशा चल रही हो तो उच्चशिक्षित व बहुकुशल होने के उपरांत भी अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं होती। दशमेश की स्थिति कमजोर हो दशम भाव में पाप ग्रह की दृष्टि बन रही हो तो जीवन में रोजगार के लिए व्यक्ति को संघर्ष करना पड़ता है यदि चतुर्थेश भी कमजोर हो पाप युक्त हो सुख भाव में पाप ग्रह बैठे हो पाप दृष्टि बन रही हो तो रोजगार के लिए संघर्ष व्यक्ति का बना रहता है यदि सप्तमेश की स्थिति भी कमजोर हो जाए तो जीवन पर्यंत ही बेरोजगारी बनी रहती है।

केतु एक वैराग्य कारक ग्रह है

यह जहां होता है या दृष्टि डालता है या जिस भाव के स्वामी के साथ युति में होता है उस भाव के फलों में कमी कर देता है। अध्ययन मे पाया गया कि जब केतु दशम भाव या दशमेश से युति करता है आलसी हो जाता है और किसी भी काम में उसका मन नहीं लगता। लगनआधारित कुंडली पर यदि लग्न/ दशम/ दशम पर केतु का सीधा प्रभाव पड़ता है और लग्नेश सप्तमेश व दशमेश बल्हीन तो व्यक्ति बेरोजगार होता है।

अरुण मित्तल,कोटा,राजस्थान

अंक ज्योतिषी में दो नम्बर का महत्व

ऐसे तो सभी नम्बर बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु दो नम्बर का विशेष महत्व है क्यो की यह मन से जुड़ा होता है। दो नम्बर को चन्द्रमा का प्रतिनिधित्व प्राप्त है। अर्थात दो नम्बर का स्वामी ग्रह चन्द्रमा होता है।

जैसे चन्द्रमा में सुन्दरता, खूबसूरती, शांत, शीतल, भावनात्मक, आध्यात्मिक, ज्ञानी, पथ प्रदर्शक, इमोशन आदि के गुण होते हैं साथ ही इसमे तरलता,जल तत्व प्रधानता,सोलह कलाएं,विचारधारा बदलने का गुण,विचार शक्ति, रिसर्च, ज्योति के गुण भी विद्धमान रहते है।

वैसे ही जिन भी व्यक्तियों का जन्म 2,11,20,29 तारीखों को होता है उनमें इन गुणों की अधिकता पाई जाती है।

2 मूलांक वाले स्त्री या पुरुष जॉब में सहजता रखने वाले, आर्टिस्ट, सिंगिग, डांस में रुचि रखने वाले देखे गए है।

2 मूलांक वाले व्यक्ति पानी से सम्बंधित समस्त कार्य, आई सर्जन, मनोवैज्ञानिक,मनोरोग विशेषज्ञ, जज, चांदी के व्यापारी, सेनेटरी, कोल्डड्रिंक, दूध,दही,घी,पनीर,चॉवल आदि का कार्य अन्य से अधिक कुशलता पूर्वक कर सकते है।

2 मूलांक वाले व्यक्ति भावना प्रधान होने से अक्सर प्यार के मामले में धोखा खा जाते हैं या इनका प्यार एक तरफा अधिक होते देखा गया है।

आचार्य श्री राम शर्मा (गायत्री परिवार), महात्मा गांधी, ओशो, हिटलर भी दो मूलांक वालों में है। इनमें अपनी बातों से दूसरों को प्रभावित करने की अदभुद क्षमता थी।

2 मूलांक वाले व्यक्तियों को एक सलाह दी जाती है कि किसी का अनुसरण न करके अपनी स्वयं की विचारधारा अपनानी चाहिए।

जिन व्यक्तियों की सम्पूर्ण जन्म दिनांक में 2,2,2 नम्बरों की अधिकता होती है वे अच्छे आध्यात्मिक होते है। शालीनता से रहने वाले होते है। और अगर उनका भाग्यांक 8 बन जाये तो बहुत अच्छे रेकी हिलर बन सकते है। साथ ही अच्छे ज्योतिषी, हिप्नोथेरेपिस्ट, अंक ज्योतिष, काउंसलर भी बन सकते है।

एक्ट्रेस आशा पारेख भी 2 मूलांक वाली है इनकी नृत्य कला से कौन अभिनिज्ञ है।

यह लोग ज्यादा सोच विचार वाले,किसी को जाने अनजाने में दुःख पहुंचाकर पश्चाताप करने वाले,बात बात में इमोशनल हो जाने वाले होते है।

इनका शुभ दिन रविवार,सोमवार व शुक्रवार व शुभ रंग सफेद, पीला, गुलाबी व हल्का हरा है।

इनका नकारात्मक पहलू प्रलय लाने वाले,सुनामी पैदा करने वाले व जिद्दी स्वभाव है।

इनके जीवन मे अप्स व डाउन ज्यादा होते हैं।

इनके लिए सलाह है कि किसी से भी सम्बन्ध बनाने,नया कार्य शुरु करने से पहले अपनी भावनाओं को दबा कर रखे व अपने दिल की जगह दिमाग से अधिक विचार करे।

विष्टीकरण याने भद्राविवरण

लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी ग्वालियर म,प्र,

पंचांग के पांच अवयव होते हैं। नक्षत्र, वार , तिथि , करण और योग को मिलाकर ही पंचांग बनता है। तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं। ये करण 11 प्रकार के होते हैं जिसमें 7 करण मास में चार बार पुनरावृत्ति करते हैं और 4 करण मास में एक बार ही आते हैं इन सात पुनरावृत्ति करने वाले करणो में एक करण का नाम है विष्टि जिसे भद्रा भी कहा जाता है।

विष्टि अर्थात भद्रा का नामकरण भद्र अर्थात शिव से होने के कारण है। देवासुर संग्राम में देवताओं की पराजय होते देख शिवजी को क्रोध आया तो इस क्रोधपूर्ण दृष्टि से एक शक्ति उत्पन्न हुई जिसने प्रेत पर सवार होकर असुरों का संहार किया इससे प्रसन्न होकर देवताओं ने उसे अपने कर्णो के समीप स्थापित किया और इसकी गणना करणो में होने लगी। भद्रा का जन्म फाल्गुन कृष्ण दशमी को रविवार को मूल नक्षत्र में हुआ रात्रि में यह शंकर जी के यहां पहरा देती है। भविष्य पुराण में इसे सूर्य की पुत्री कहते हैं

भद्रा को भयानक रूप वाला बताया गया है। मुख गधे के समान, तीन पैर, सात भुजाएं, लंबी व पतली पूंछ,पतला पेट, बड़े बड़े दांत,लंबी नाक,पुष्ट हनु व गाल, मोटी पिण्डली/ जांघ, केश लंबे,गर्दन सिंह के समान है। प्रेत व शव इसके वाहन है। वह दैत्यों का संहार,कार्यों का नाश, विघ्न उत्पन्न करने वाली, अग्नि ज्वाला के समान है। भद्रा छह भागों में विभक्त है मुख, कंठ,हृदय, नाभि, कटि और पूंछ शुक्ल पक्ष में अष्टमी व पूर्णिमा में तिथि के पूर्वार्द्ध में और एकादशी और चतुर्थी को उत्तरार्ध में भद्रा होती है। कृष्ण पक्ष में तृतीया और दशमी तिथियों में उत्तरार्ध और सप्तमी/ चतुर्दशी को पूर्वार्द्ध में भद्रा होती है

कृष्ण पक्ष में इसे वृश्चिकी और शुक्ल पक्ष में सर्पिणी की संज्ञा दी गई है अतः वृश्चिकी का पिछला भाग और सर्पिणी का अग्र भाग वर्जित माना गया है।

भद्रा में मंगल कार्य निषिद्ध है परन्तु कुछ मामलों में शुभ कार्य के अतिरिक्त अमंगल/ आक्रामक कार्यों में इसका प्रयोग किया जा सकता है। भद्रा में वध, आक्रमण बंधन, तांत्रिक उपाय इत्यादि किया जा सकता है यद्यपि इसमें में मुख और पुंछ का विचार अनिवार्य है।

भद्रा का वास जब चंद्रमा 11;12 राशि में हो तो मृत्यु लोक में, 1;2;3;8 राशि में हो तो स्वर्ग में व 6;9;7;10 राशि में हो तो पाताल लोक में रहता है। जब भद्रा का वास जहां भी हो वही इसका अशुभ फल अधिक होता है।

धार्मिक पर्व एवं मुहुर्त ज्योतिष में भद्रा का महत्व

श्री प्रशान्त ज्योतिषशास्त्री

जब विष्टि करण किसी तिथि में आता है तो इसे ही भद्रा कहते हैं विष्टि करण के स्वामी यम माने गए है। इसे मुहूर्त के लिऐ बुरा समझा जाता है।

भद्रा का वास किसी भी मुहूर्त काल मे 5 घटी मुख मे, 2 घटी कण्ठ मे, 11 घटी हृदय में, 4 घटी नाभि मे , 5 घटी कमर मे और 3 घटी पुच्छ मे रहता है। पौराणिक आख्यान अनुसार भद्रा सूर्य पत्नी छाया से उत्पन्न है और शनि की सगी बहन है।

ब्रम्हपुराण के अनुसार भद्रा मे भद्रातीर्थ के वर्णन प्रसंग मे यह बात आयी है कि सूर्य ने अपनी पुत्री भद्रा के विश्वकर्मा के पुत्र विश्वरूप से विवाह हेतु स्वंयवर का आयोजन किया तो भद्रा ने तोरण, मंडप, आसन सब उखाड़ फेंका। आयोजन का विध्वंस हो गया।

सूर्यनारायण की प्रार्थना पर ब्रम्हा जी ने आकर भद्रा को समझाया कि हे भद्रे! तुम बव,बालव,कोलव, तैतिल आदि चर करणो के अंत में सातवें (विष्टि) करण के रूप मे स्थित रहो और जो व्यक्ति तुम्हारे समय मे यात्रा, गृहप्रवेश, खेती, व्यापार, उद्योग और अन्य मंगलकार्य करें तो तुम उसमे विघ्न डालो जो तुम्हारा आदर न करे उसका कार्य ध्वस्त कर दो।1

भद्रा ने ब्रम्हा का आदेश मान लिया और वह काल के एक अंश के रुप मे अद्यतन विद्यमान है।

भद्रा की उत्पत्ति के सबंध मे एक प्रचलित पौराणिक आख्यान (तथा मुहूर्त चिंतामणि की पीयूष धारा टीका मे श्रीपति का उद्धत वचन भी) है कि जब एक बार देवासुर संग्राम मे दैत्यों ने देवताओं को पराजित किया, तब शिव जी ने क्रोधित होकर अपने हृदय के तेज से दैत्यों हेतु विनाशक भद्रा को उत्पन्न किया। उसका मुख गर्दभ के समान था। उसके तीन पैर और पूछ थी। वह सात भुजा वाली, सिंह सदृश गर्दन वाली, पतले उदर प्रेत पर सवार सी थी। वह अपने अभ्युदय से ही असुरों का संहार करने लगी।

जिस समय भद्रा मुख मे हो उस समय किया हुआ कार्य ध्वस्त हो जाता है। वक्षस्थल और कटिप्रदेश की घटियो मे बुद्धि की हानि होती है, कण्ठ मे धन का नाश करती है। भद्रा का नाभि वास कलहकारक होता है। भद्रा कि पूछ (विष्टि करण की अंतिम तीन घटिया) विजयदायिनी होती है। इस प्रकार भद्रा का लगभग 12 घण्टे मे से मात्र 1 घण्टा 12 मिनट का अंतिम समय शुभकारी होता है। एक वर्ष मे भद्रा 96 बार आती है ।

भद्रा का वास स्वर्ग लोक, पाताल लोक और पृथ्वी लोक तीनों लोकों में माना जाता है। भद्रा के स्वरूप के संबंध मे एक पहेली हिंदी भाषा मे प्राचीन ज्योतिषियों मे प्रचलित रही हैं-

एक नारी अति सुंदरी तीन लोक भय देत।
षट् रितु बारह मास मे
जन्म छियानवे लेत।।

वध, बंधन, दहन, अस्त्र, छेदन और उच्चाटन यज्ञ इत्यादि कार्यों मे भद्रा को सिद्ध माना गया है अन्य कार्यों हेतु भद्रा त्याज्य है।

ज्योतिष शास्त्र में हर्षल वरूण एवं यमग्रह

बीना देसाई मुम्बई

हर्षल ग्रह की शोध विलयम हर्षल नाम के खगोल शास्त्री ने 13/3/1781 को की थी उसी आधरित ये ग्रह का नाम हर्षल हुआ, ये एक राशि मे कुछ लगभग 7 साल रहता है, इसलिए इनके इफ़ेक्ट कुंडली मे जल्दी दिखाई नही देती। इसकी प्रकृति विस्फोटक है,संशोधन, टेक्नोलॉजी, बोम्ब, अणु शक्ति का दाता है इसकी कुंभ राशि स्वग्रही कहलाती है, बाकी वायुतत्व की राशि मे अगर कोई अशुभप्रभाव ना हो तो व्यक्ति में रिसर्च करने की चाह होती है बुध,गुरु साथ का हर्षल एक संशोधन स्वभाव देगा, हर्षल रुढ़िबद्ध विचारों की अवहेलना करता है, उसको नई खोज,नए विचार,और तर्क का स्वभाव है, अगर अशुभ ग्रह का प्रभाव ना हो तोह अच्छा फल देगा ये अगर अष्टम में अशुभ ग्रह के साथ हो तोह कहते है इंसान की मत्यु सामुहिक विस्फोट जनक स्थिति मे हो सकती है इसका रत्न अलेक्ज़ेंडर नामक रत्न है।

नेपच्यून(वरुण)

इसकी शोध 1846 में हुई प्लुटो भी एक राशि में लगभग 6 या 7 साल रहता है। ये एक सेन्सिटिव जलतत्व और शुक्र जैसा स्वभाव रखता है, इंसान के 1,2,3,5,9 में गुरु साथ होकर शुभ हो तो जातक में इंट्यूशन पावर अच्छी होती है।अगर ये सप्तम स्थान में दूषित हुआ तो जातक को अपने पार्टनर से धोखाधड़ी का अहसास होता है। ये एक सेन्सिटिव ग्रह है अगर ये खराब होकर लग्न या लग्नेश से जुड़े तोह मानशिक बीमारी तक दे पाता है। अष्टम बैठा नेपच्यून कोमा में जातक को ले जा सकता है अगर दूषित होकर पाप ग्रह से जुड़ा तोह इसका रत्न ओपल है शुभ नेपच्यून अंत स्फूर्ति साथ दैवीशक्ति का परिचय देता।

प्लूटो(यम)

ये ग्रह की शोध पर्सिविहल लोवेल खगोल शास्त्री ने 1930 मैं की थी ये भी विस्फोटक प्रवृति रखता है, ये एक राशि मे 24 साल होता है दिन की सिर्फ 48 विकला जितनी गति है। जो भाव में हो उसको कुछ न कुछ खराब फल देगा जो अचानक होगा साथ हमेशा के लिए उसकी छाप छोड़ेगा।इसलिए इसको मेदनी ज्योतीष और देश के लिए देखा जाता है।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श

ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

बी-14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755-2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com

परामर्श के लिए
पूर्व समय लेना आवश्यक :

पांच दिवस का पर्व दीपावली

दीपावली पर्व 5 दिनों की एक पर्वश्रंखला है जिसमें समाज के सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ध्यान दिया जाता है सबसे पहले दीपावली पर्व स्वच्छता के रूप में पूरे घर की साफ सफाई करने से आरंभ होता है जिसके बाद धनतेरस का पहला पर्व होता है स्वास्थ्य एवं सुख समृद्धि वर्धक यह पर्व अपनी विशेषता रखता है जिसमें धनवंतरी जोकि स्वास्थ्य के देवता है उनका जन्मोत्सव के रूप में माना जाता है जब समुद्र मंथन हुआ था देवताओं एवं दानवों के द्वारा क्षीरसागर का मंथन किया गया था उस समय भगवान धन्वंतरि का प्राकट्य हुआ था यह 24 अवतारों में से एक है कार्तिक कृष्ण पक्ष.त्रयोदशी के दिन भगवान धन्वंतरी का पूजन किया जाताहै। इस दिन सायंकाल में घर के बाहर दरवाजे पर अन्न का एक पात्र में अन्न रखकर उसके ऊपर यम कोण की तरफ दीपक लगाने का विधान है जिससे कि अपमृत्यु का भय नही रहता। तथा परिवार के सदस्य स्वस्थ्य रहते है। धन प्राप्त करने का मुख्य उद्गम जोभी है उसकी पूजन करके धन केस्वामी कुबेर का पूजन का भी विशेष महत्व है। ग्रामीण क्षेत्र में किसान गोपूजन करते है।

रूप चौदस पर्व : कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी के दिन रूप चौदस जिसे नरक चतुर्दशी भी कहते है। रूप सुन्दरता के स्वरूप भगवान कृष्ण की पूजन की जाती है। सूर्यादय पूर्व तेल का उबटन लगाकर अपामार्ग का पौधा जल में डालकर स्नान करने के,बादमें दीपदान का महत्व है कहाजाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इसदिन नरकासुर का वध किया था दीपदान करने से रोग एवं कष्ट से मुक्ति मिलती है।

लक्ष्मी पूजन का दिन दीपावली पर्व : कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या के दिन दीपावली का पर्व मनाया जाता है इस पर्व के बारे में यह मान्यता है कि देवताओं एवं राक्षसों के द्वारा समुद्र मंथन किया गया था तब समुद्र मंथन के समय क्षीरसागर से महालक्ष्मी प्रकट हुई थी इस महालक्ष्मी ने भगवान विष्णु को अपने पति के रूप में स्वीकार किया था इसी कारण दीपावली के दिन सुख समृद्धि की कामना से लक्ष्मी पूजन की जाती है लक्ष्मी को चंचला भी कहते हैं यह स्थिरता से कहीं नहीं रहती है इस कारण से दिवाली के दिन स्थिर लक्ष्मी के लिए स्थिर लग्न में लक्ष्मी पूजन किया जाना चाहिए वृषभ सिंह कुंभ एवं वृश्चिक लग्न स्थिर लग्न कहलाते हैं विशेषकर प्रदोष काल में वृषभ लग्न रहता है इस कारण से वृषभ लग्न में लक्ष्मी पूजन करना स्थिर लक्ष्मी के लिए शुभ माना गया है स्थिर लग्न के लिए

मुहूर्त तो निम्नानुसार हैं:-

दीपावली शुभ मुहूर्त चौघडिया अनुसार

6.35 से 7.59 शुभ
12.10 से 13.34 लाभ
13.34 से 14.58 अमृत
16.22 से 17.46 शुभ
17.46 से 19.22 अमृत

स्थिर लग्न के अनुसार लक्ष्मी पूजन मुहूर्त

प्रदोष् काल में स्थिर वृषभ लग्न
सायं 18.20 से 19.22
अमृत चौघड़िया के साथ
महानिशीथ काल रात्रि
24.11 से 25.47 के बीच

यह भी मान्यता है कि भगवान रामचंद्र जी 14 वर्ष का वनवास पूर्ण करने के उपरांत राक्षसों का वध करने के पश्चात धर्म प्राण समाज को अभयदान देते हुए वापस अयोध्या आगमन हुआ था इसी कारण समग्र समाज में दीप जलाकर खुशियां मनाई थी ,इसी खुशी में दीपोत्सव मनाया जाता है।.

अन्नकूट महोत्सव ,गोवर्द्धन पूजन : कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन सवेरे गोवर्धन पूजा की जाती है गाय के गोबर से घर के द्वार पर गोवर्धन की प्रतिमा बनाई जाती है तथा उसके पूजन की जाती है यह प्रथा भगवान कृष्ण के गोवर्धन पर्वत अपनी कनिष्ठा उंगली से उठा कर इंद्र के प्रकोप से बचाव के लिए किया गया। दिन में सभी प्रकार के छप्पन भोग बनाए जा कर भगवान को प्रसाद के रूपमें भोग लगाकर अन्नकूट किया जाता है। वर्षा के समय से (चतुर्मास में) पत्तीदार सब्जिया,पालक मेथी, मूली बेगन आदि का कई धर्म प्राण व्यक्तियों द्वारा त्याग किया जाता है जिसे अन्नकूट के भोजन में सम्मिलित किया जाकर नियमित सेवन में लिया जाता है।

भाई दूज, कलम दवात पूजन : कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया को भैया दूज का पर्व मनाया जाता है इस दिन भाई बहन के घर जाकर भोजन करता है । इस पर्व के बारेमें एक पौराणिक मान्यता है कि यम एवं यमुना भगवान सूर्य की संतान हैं ।यमराज की व्यस्तता के कारण यमुना अपने भाई से नहीं मिल पाती थी ,एक दिन वह स्वयं मिलने आई ।इस पर यमराज प्रसन्न हुए एवं बहन को वर मांगने को कहा बहन यमुना ने कहा कि आज के दिन मुझमें जो स्नान करेगा उसे यमलोक नहीं जाना पड़े इस पर यमराज ने तथास्तु कहा एवं उस दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि थी। इस कारण इस दिन यमुना में स्नान करने का भी विशेष महत्व है ।साथ ही बहन के घर भाई स्वयं जाकर बहन को संतुष्टि पूर्वक द्रव्य दान देकर भोजन करता है इसका विशेष महत्व बताया गया है जिससे भाई एवं बहन को स्वास्थ्य लाभ तथा बहन के सौभाग्य की वृद्धि होती है। इस दिन चित्रगुप्त की पूजन करना भी शुभ माना गया है ।इस कारण दवात कलम अर्थात लेखनी की पूजन करना ज्ञान वृद्धि के लिए माना गया है इस प्रकार दीपावली का 5 पर्वों की श्रृखला का पर्व है जिसे उत्साह पूर्वक मनाया जाना चाहिए।

दीपावली पर्व पर विशेष

लक्ष्मी माता को प्रसन्न करने के लिए श्रीसूक्त

दीपावली पर्व से आरंभ करके प्रतिदिन श्री सूक्त का पाठ करना प्रत्येक परिवार की लक्ष्मी, सम्पति, समृद्धि और पारिवारिक सुख की वृद्धि करता है। पाठकों के लाभार्थ श्रीसूक्त अर्थ सहित निम्नानुसार दिया जारहा है।

ऊँ हिरण्यवरर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम।
चंद्राम् हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आवह।।1।।

हे जात वेदा अग्नि देव? आप बीते हुए सभी बृत्तांतो को जानने वाले तथा बतलाने वाले हैं अतः सुवर्ण के समान पीत वर्ण वाला तथा हरित वर्ण वाली हरिणी रूप धारिणी सुवर्ण मिश्रित रजत की माला धारण करने वाली चांदी के समान धवल पुष्पों की माला धारण करने वाली चंद्रमा के सदृश प्रकाशमान तथा चंद्रमा की तरह संसार को प्रसन्न करने वाली चंचला के समान रूप वाली हिरण्यमय ही जिसका शरीर है ,ऐसे गुणों से युक्त लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ।

ताम आव ह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।2।।

हे जातवेदा अग्नि देव? आप उन जगत प्रसिद्ध लक्ष्मी जी को मेरे लिए बुलाओ जिनके आवाहन करने पर मैं सुवर्ण गौ,अश्व और पुत्र पौत्रादि को प्राप्त करुं।।2।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्,
श्रियं देवीमुप ह्वयेश्रीर्मा देवी जुषताम्।।3।।

जिस देवी के आगे घोड़े और मध्य में रथ है अथवा जिसके सम्मुख घोड़े रथ में जुते हुए हैं ऐसे रथ में बैठी हुई ,हाथियों के निनाद से संसार को प्रफुल्लित करने वाली देदीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देने वाली लक्ष्मी को मैं अपने सम्मुख बुलाता हूं दीप्यमान तथा सबकी आश्रय दाता वह लक्ष्मी मेरे घर में सर्वदा निवास करें।।3।।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ,
ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्,
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ 4 ॥

जिसका स्वरूप वाणी और मन का विषय ना होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मंदहास्ययुक्ता है ,जो चारों और सुवर्ण से ओतप्रोत है एवं दया से आर्द्र हृदय वाली या समुद्र से प्रादुर्भाव होने के कारण आर्द्र शरीर होती हुई भी देदीप्यमान है स्वयं पूर्ण काम होने के

कारण भक्तों के नाना प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करने वाली, कमल के ऊपर विराजमान ,कमल के सदृश्य गृह में निवास करने वाली संसार प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने पास बुलाता हूं।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती,
श्रियं लोके देवजुष्ठामुदाराम्।
तां पद्मीनीमीं शरणं प्रपद्ये,
अलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणोमि।।5 ।।

चंद्रमा के समान प्रकाशमान कांति वाली कीर्ति से प्रकाशित स्वर्ग में देवताओं द्वारा सेवित अत्यंत उदार हृदया, कमलवत आकार वाली लक्ष्मी को में शरण में आश्रय पाने के लिए एवं अपनी दरिद्रता को दूर करने के लिए आपको स्वीकार करते हुए आश्रय लेता हुं॥ 5

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्व
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु,
यान्तरा याश्च बाह्याऽअलक्ष्मी

हे सूर्य के समान कांति वाली आपके तेजोमय प्रकाश से बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष विशेष उत्पन्न हुआ तद् अंतर आपके हाथ से बिल्व का वृक्ष उत्पन्न हुआ ।उस बिल्व का वृक्ष का फल मेरे बाह्यऔर आभ्यंतर की दरिद्रता को नष्ट करें।6।।

उपेतु मां देव सखः कीर्तिश्च
मणिना सह।
प्रादुर्भुतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्
कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।7 ॥

हे लक्ष्मी? महादेव के सखा कुबेर ,इंद्र आदि देवताओं की अग्नि एवं मणि के साथ अर्थात चिंतामणी के साथ कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ,कीर्ति अर्थात दक्ष कन्या कुबेर की कोषशाला अथवा यश आदि मुझे प्राप्त हो मैं इस (भारत) देश में उत्पन्न हूं अतः मुझे ऐश्वर्यऔर यश दे।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मी
नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां
निर्णुद मे गृहात् ॥ 8 ॥

लक्ष्मी की जेष्ठ भगिनी अलक्ष्मी जो भूख और प्यास से मलीन तथा क्षीण रहती है उसका मैं नाश चाहता हूं हे देवी मेरे घर से असमृद्धि और अनैश्वर्य को दूर करो।।8 ॥

गन्ध द्वारा दुराधर्षा नित्यपुष्टां
करीषिणीम्,
ईश्वरी सर्वभूतानां ,
तामिहोपह्वये श्रियम् ।।9।।

सुगंधित पुष्पों को समर्पित करने पर उनसे प्राप्त करने योग्य किसी के वश में रहने वाली धन-धान्य आदि से परिपूर्ण गो अश्व आदि पशुओं की समृद्धि को देने वाली सभी प्राणियों की ईश्वरी आधारभूत पृथ्वी रुपी लक्ष्मी का मैं आवाहन करता हूं।9।।

मनसः काममाकूतिं वाचः
सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि
श्रीः श्रयतां यशः।10 ॥

हे लक्ष्मी? मैं आप के प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं संकल्प, वाणी की सत्यता, गो आदि पशुओं के रूप एवं अन्नो के रूप (भक्ष्य,भोज्य,चोष्य,लेह्य चतुर्विध भोज्य पदार्थ)इन सभी पदार्थों को प्राप्त करूं संपत्ति और यश मुझ में आश्रय लें अर्थात मैं लक्ष्मी वान एवम कीर्तिमान बनूं ॥10॥।

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं,
पद्म मालिनीम् ॥ 11 ॥

कर्दम नामक ऋषि पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्र वाली हुई है। हे कर्दम !तुम मुझ में अच्छी प्रकार से निवास करो अर्थात कर्दम ऋषि की कृपा होने पर लक्ष्मी को मेरे यहां रहना ही होगा हे कर्दम! मेरे घर में लक्ष्मी निवास करें ,केवल इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करने वाली संपूर्ण संसार की माता लक्ष्मी को मेरे वंश में निवास कराओ।।11।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि
चिक्लीत वस में गृहे।.
नि च देवीं मातरं श्रियं
वासय मे कुले ।।12।।

वरुण देवता स्निग्ध अर्थात मनोहर पदार्थों को उत्पन्न करे स्नेह युक्त पदार्थो को उत्पन्न कराकर ,हे चिक्लित ! लक्ष्मी पुत्र आप मेरे घर में माता लक्ष्मी देवी सहित वास करो।

आर्द्रां पुष्कारिणीं पुष्टिं
पिगलां पद्ममालिनिम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं ,
जातवेदो म आ वह ।।13।।

हे अग्निदेव! तुम मेरे घर में पुष्करणी अर्थात दिग्गज हाथियों के शुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना पुष्टि को देने वाली अथवा पुष्टि रुपा रक्त और पीत वर्ण वाली कमल की माला धारण करने वाली, संसार को प्रकाशित करने वाली, प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं,
सुवर्णां हेम मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं,
जातवेदो म आ वह ।14।।

हेअग्नि देव! तुम मेरे घर में भक्तों पर सदा दयार्द्रचित्त अथवा समस्त भुवन जिसकी याचना करते हैं ,दुष्टों को दंड देने वाली अथवा अथवा यष्टिवत् अवलम्ब नीया, सुंदर वर्ण वाली एवं सुवर्ण की माला वाली सूर्य रूपा ,प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ।

ताम ह्य आवह जात वेदो
लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो,
दास्योह्यश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥15॥

हे अग्निदेव !तुम मेरे यहां उन जगत विख्यात लक्ष्मी जी को जो मुझे छोड़ कर अन्यत्र ना जाने वाली हो उन्हें बुलाओ। जिन लक्ष्मी जी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य ,गो, दासी, घोड़े और पुत्र पौत्र आदि को प्राप्त करूं अर्थात स्थिर लक्ष्मी को प्राप्त करूं।15।।

यः शुचि;प्रयतो भूत्वा ,
जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पंश्चदशर्च च ,
श्रीकामः सततं जपेत्।16।

जो मनुष्य लक्ष्मी जी की कामना करता हो,वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गो घृत का हवन और साथ ही श्रीसूक्त की पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन पाठ करे।

दीपावली पर्व विशेष

ज्योतिष और लक्ष्मी योग

पं. रामदयाल पाण्डेय
गोवर्धनपुरा मंदसौर

इस भौतिक मानवीय जीवन में से लक्ष्मी का प्रभुत्व छोड़ दें तो शेष रह जाता है शून्य। लक्ष्मी है कि चिर युवा व चंचला होने के कारण एक जगह टिकती ही नहीं है।

चाणक्य ने ठीक ही कहा है कि निर्धनता आज के युग का सबसे बड़ा अभिशाप है। कैसी विचित्र स्थिति है कि शुक्र दैत्य गुरु है और बृहस्पति देवगुरु हैं। इनमें शुक्र संपत्ति का भोग व गुरु धनप्राप्ति कारक हैं एवं परस्पर शत्रु। दोनों की श्रेष्ठता हो तभी व्यक्ति धनोपार्जन कर, उसका भोग कर सकता है। आनन्द संग्रह कर सकता है। जन्मकुण्डली में उक्त दोनों ग्रह अर्थात बृहस्पति व शुक्र दिनपति सूर्य व निशानाथ चंद्रमा से अच्छा संबंध करते हों अर्थात इनके साथ हों या देखे जाते हों तो व्यक्ति जीवन में यथेष्ट मात्रा में धन संग्रह करता है। इसी कारण से शुक्र-चंद्र लाटरी योग व गुरु-चंद्र गज-केसरी योग बनाते हैं।

वृष लग्न, कन्या लग्न और मकर लग्न में उत्पन्न जातकों में धन प्राप्त करने की इच्छा व लालसा अन्य लग्नोत्पन्न जातकों से अधिक होती है लेकिन ये खर्च करना नहीं चाहते। मकर लग्नोत्पन्न व्यक्ति परोपकार व यशोपर्जन के लिए तो कम से कम धन खर्च कर ही लेता है। मिथुन, तुला व कुम्भ लग्नोत्पन्न जातक का आकर्षण धन के प्रति होता है। वे मितव्ययी तो होते हैं परन्तु कृपण नहीं। मेष, सिंह व धनु लग्न के जातक जीवन में हर भौतिक इच्छा पूर्ण करना चाहते हैं। वे ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने का मुख्य साधन मानते हैं। सिंह लग्न का व्यक्ति इसमें सबसे आगे रहता है। चंद्रमा चलायमान, चंचल व भावुक ग्रह हैं, अतः कर्क लग्नोत्पन्न व मंगल राशि, वृश्चिक व मीन राशि लग्नोत्पन्न व्यक्ति अत्यन्त भावुक होते हैं। इनमें धन संग्रह करने की तीव्र आकांक्षी होती है। शुक्र भोग-सेक्स, भौतिक सुख, संपत्ति, विलासिता, ऐश्वर्य, आनन्द का सूचक ग्रह है। बृहस्पति धन संपदा प्राप्ति कारक है। इस लेख में आपको विभिन्न ग्रहों की स्थिति, स्वामी एवं उच्च-नीच आदि शब्दों का प्रयोग जानना होगा, इसके लिए आपको इस सारणी का उपयोग फलदायक होगा। लग्न, पंचम एवं नवम भाव के स्वामी ग्रहों का चन्द्रमा व शुक्र सेसंबंध हो चो अचानक धन प्राप्त होता है। गुरु धन एवं समृद्धि का कारक है। चन्द्रमा तीव्रता का कारक है। शुक्र सौन्दर्य का, ऐश्वर्य का, गुप्त कार्यों का कारक है। यदि तीनों की स्थिति गोचर में जन्मकुण्डली के समन्वय करते हुए शुभ स्थानों में होती है साथ ही दशा अर्न्दशा भी अनुकूल हो तो व्यक्ति को अवश्य ही करोड़पति बना देती है। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि यदि उपरोक्त धन प्राप्ति के यगो भी जन्म कुण्डली में स्थित है लेकिन किस समय कौनसी दशा अर्न्दशा में धन प्राप्ति का, करोड़पति बनने का योग घटित होगा?

त्रिकोण भाव के स्वामी ग्रहों की

महादशा में या द्वितीय या एकादश भाव के स्वामी ग्रहों की महादशा एवं एकादश या द्वितीय भाव की अन्तर्दशा हो। पुनः इन्ही ग्रहों की प्रत्यन्तर दशा एवं सूक्ष्म दशा में परस्पर आपसी शुभ संबंध होने पर व्यक्ति करोड़पति बन जाता है।

कुछ धन हेतु उत्तम योग

द्वितीय, 8 व 9 भाव के स्वामी ग्रहों का केन्द्र त्रिकोण से शुभ संबंध होने पर साहसी, खतरनाक प्रतियोगिताओं, प्रतिस्पर्धाओं से धन प्राप्ति होती है। लग्न, पंचम एवं नवम भाव का अथवा उनके स्वामी ग्रहों का आपसी शुभ संबंध होने पर बुद्धि क्षमता वाली प्रतियोगिताओं से धन प्राप्ति होती है। धन, भाव एकादश भाव एवं भाग्य भाव में स्थित ग्रहों अथवा इन भावों से स्वामी ग्रहों का आपसी भाव परिवर्तन होने पर करोड़पति अवश्य बनता है।

एकादशेश तथा द्वितीयेश चतुर्थ भाव में हों तथा चतुर्थेश शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो जातक को आकस्मिक रूप से धन का लाभ हो है। यदि पंचम भाव में स्थित चन्द्रमा शुक्र से दृष्ट हो तो व्यक्ति को लाटरी, शेयर, सट्टे, रेस आदि से धन प्राप्त होता है। यदि धनेश शनि हो और वह चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित हो तथा बुध सप्तम भाव में स्वक्षैत्री होकर स्थित हो तो आकस्मिक रूप से धन का लाभ होता है। अब में प्रत्येक लग्न के अनुसार उनके धन-समृद्धि के योग स्पष्ट कर रहा हूं।

मेष लग्न- मेष लग्न हो, मंगल कर्मेश भाग्येश 5वें हो तो जातक लक्ष्मीपति बनता हैं। मेष राशिस्थ लग्न की कुण्डली में सूर्य स्वग्रह का हो, गुरु चंद्र की युति 11वें हों तो जातक लक्ष्मीपति होता है।

वृष लग्न - बुध एवं शनि द्वितीय स्थान में हों तो धन प्राप्ति होती है। शुक्र मिथुन का हो, बुध मीन का हो, गुरु ध्रुव केन्द्र में हो ते जातक को यकायक अर्थ की प्राप्ति होती है।

मिथुन लग्न - भाग्येश भाग्य भवन में बेठकर बुध से युति करे तो द्रव्य की प्राप्ति का योग होता है। द्वितीयेश उच्च स्थान में बैठा हो तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

कर्क लग्न - गुरु शत्रु भावस्था हो तथा केतु से युति करें तो जातक बहुत

ऐश्वर्यवान, योग्य व राजनीति पटु होता है। कर्क लग्न की कुण्डली में शुक्र 12वें या 2रे भाव में हो तो जातक धनवान होता है।

सिंह लग्न- शुक्र बलवान होकर चतुर्थेश केसाथ चतुर्थ भाव में हो तो जातक को आजीवन सुख प्राप्त होता। शुक्र सूर्य के नवांश में हो तो जातक ऊन, दवा, घास, धान, सोना, मोती आदि के व्यापार से अथोपार्जन करता है।

कन्या लग्न- शुक्र व केतु दूसरे भाव में हो तो व्यक्ति धनाढ्य होता है तथा आकस्मिक ढंग से अर्थ की प्राप्ति होती है। चन्द्रमा 10वें स्थान में मिथुन राशि का हो, दशमेश बुध लग्न में हो तथा भाग्येश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक धनवान भाग्यवान व उच्च पदाधिकारी होता है।

तुला लग्न- शुक्र यदि केतु सहित द्वितीय भाव में हो तो जातक को निश्चय ही लक्ष्याधिपति बना देता है। जन्म का लग्न तुला हो तथा राहु, शुक्र, मंगल, शनि 12वें भाव में यानी कन्या राशि में हों तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

वृश्चिक लग्न - गुरु व बुध पंचम स्थान में हों तथा चंद्रमा 11 वें भावस्थ हो तो जातक करोड़पति होता है। चन्द्रमा गुरु, केतु नवम भाव में हों तो विशेष भाग्योदय होता है। चंद्रमा भाग्येश है, गुरु के साथ स्तित हो गज केशरी योग बनाता है, गुरु अपनी उच्च राशि में भी होता है जो कि धनेश है।

धनु लग्न - गुरु, बुध लग्न में सूर्य, शुक्र द्वितीय भाव में मंगल, राहु, षष्ठम् भाव में तथा शेष 3 ग्रह अलग-अलग कहीं भी हों तो जातकआजीवन सुख भोगता है। चंद्रमा 8वें भाव में हों, कर्क राशि में सूर्य शुक्र शनि स्थित हों तो विख्यात, शिल्पादि कलाओं का जानकार पतला पर दृढ़ शरीर से युक्त अनेक सन्तानों से युक्त व निरन्तर संपत्तिवान रहता है।

मकर लग्न - चन्द्रमा व मंगल एक साथ 1/4/7/10 केन्द्र भावस्थ 5/9 त्रिकोण में अथवा 2/11 भाव में कही हो तो जातक धनाढ्य होता है। धनेश तुला राशि में एवं लाभेश मंगल मकर राशिगत अर्थात् लग्न में हो तो जातक धनवान होता है।

कुंभ लग्न - 10वें भाव में अर्थात वृश्चिक राशि में चन्द्र शनि का योग हो तो वह जातक कुबेर तुल्य ऐश्वर्य सम्पन्न होता है। कुंभ लग्न हो, शनि लग्न में स्व का स्थित हो, मंगल की 8वीं दृष्टि शनि पर हो तो राजराजेश्वर योग होने से जातक पूर्णरूपेण संपन्न, सुखी, धनवान, दीर्घायु होता है।

मीन लग्न - यदि दूसरे भाव में चन्द्रमा एवं 5वें भाव में मंगल हो तो मंगलकी दशा में श्रेष्ठ धन लाभ होता है। गुरु 6वें भाव में हो, शुक्र 8वें, शनि 12वें तथा चन्द्रमा मंगल 11वें भावस्थ हों तो उच्चाति उच्च धनदायक योग बनाते है।

जन्म-कुंडली में कैसे बनते हैं राजयोग और क्यों नहीं मिलता राजयोगों का भी शुभ फल

पं. के.आर. उपाध्याय, भोपाल

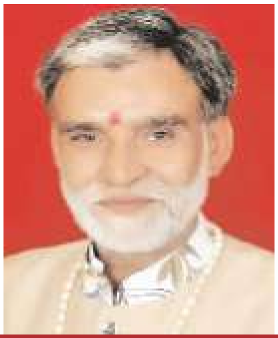

राजयोग कुंडली में बनने वाले सभी योगों के राजा कहलाते हैं क्योंकि इसमें विभिन्न प्रकार के ज्योतिषीय योगों की कुछ विशेषता अवश्य मिल जाती है । राजयोग के अनेक शाब्दिक और वैदिक अर्थ हैं। आधात्यमिक रूप में योग की अन्तिम अवस्था परमानंद समाधि को ही राजयोग कहते थे। परंतु सनानती सन्दर्भों में षठ दर्शन में से एक का नाम भी राजयोग है।

ज्योतिष में राजयोग का अर्थ होता है कुंडली में ग्रहों का इस प्रकार से संयोग बनना जो.... मानवीय लक्ष्यों, ऐश्वर्य, धन-संपदा, मान-सम्मान सहजता से प्राप्त कराता हो।

कुंडली में बनने वाले राजयोग

ज्योतिष के प्राचीन ग्रंथों में कुल 32 प्रकार के मुख्य राजयोग बताए गए हैं। जिस मनुष्य की कुंडली में 32 प्रकार के सभी योग पूर्ण रूप से घटित हो जाते हैं, वह मनुष्य चक्रवर्ती सम्राट बनता है। इसमें नीचभंग राजयोग भी प्रमुख माने जाते हैं। राजयोग होने पर व्यक्ति को उच्च पद, मान सम्मान, धन तथा अन्य प्रकार की सुख-संपत्ति प्राप्त होती हैं।

अगर जन्म कुंडली के नौवें या दसवें घर में सही ग्रह मौजूद रहते हैं तो उन परिस्थितियों में राजयोग का निर्माण होता है। जन्म कुंडली में नौवां स्थान भाग्य का और दसवां कर्म का स्थान होता है। कोई भी व्यक्ति इन दोनों घरों की वजह से ही सबसे ज्यादा सुख और समृद्धि प्राप्त करता है। राजयोग का आंकलन करने के लिए जन्म कुंडली में लग्न को आधार बनाया जाता है। कुंडली के लग्न में सही ग्रह मौजूद होते हैं तो राजयोग का निर्माण होता है।

कुंडली में जब शुभ ग्रहों का योग बनता है उसके आधार पर राजयोग का आंकलन किया जाता है। कुंडली के किसी भी भाव में चंद्र-मंगल का योग बन रहा है तो जीवन में धन की कमी नहीं होती है, मान-सम्मान मिलता है, सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है। कुंडली में राजयोग का अध्ययन करते वक्त अन्य शुभ और अशुभ ग्रहों के फलों का भी अध्ययन जरुरी है। इनके कारण राजयोग का प्रभाव कम या ज्यादा हो सकता है।

राजयोग वे ग्रह स्थितियां हैं जिनसे व्यक्ति विपुल धन संपदा, पद, गौरव, सुख और ऐश्वर्य पाता है। विपरीत राजयोग में व्यक्ति को प्राप्तियां तो होती हैं लेकिन वह उनका आनंद नहीं ले पाता। जिस किसी व्यक्ति की कुंडली में ये ज्योतिषीय योग बनता है तो व्यक्ति राज्याधिकारी बनता है। जब कुंडली में 2, 3, 5, 6, 8, 9 तथा 11, 12 में से किसी स्थान में बृहस्पति की स्थिति हो और शुक्र 8वें स्थान में हो तो ऐसी ग्रह स्थिति में जन्म लेने वाला जातक राज्याधिकारी ही बनता है। कभी-कभी हम लोग किसी साधारण परिवार में जन्मे बालक के राजसी लक्षण देखते हैं जो इसी योग के कारण बनते हैं। जब भी मनुष्य कोई कोशिश करता है या किसी चीज़ की इच्छा करता है तो उसके प्रयत्न विभिन्न योगों के अनुसार ही विकसित होते हैं।

निम्नलिखित स्थितियों में राजयोगों का सृजन होता है-

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में ग्रह एक-दूसरे की राशि में होते हैं तो शुभ फल प्राप्त होते हैं।

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में ग्रह एक-दूसरे से दृष्टि संबंध में हो तो शुभ फल प्राप्त होते हैं।

कुंडली में शुभ ग्रहों की परस्पर युति होने पर शुभ फल प्राप्त होते हैं।

कुंडली में एक ग्रह दूसरे ग्रह को संदर्भित करता हो तो शुभ।

नवम और पंचम स्थान के अधिपतियों के साथ बलवान केन्द्राधिपति का संबंध शुभफलदायक होता है। इसे राजयोग कारक भी बताया गया है।

योगकारक ग्रहों (यानी केन्द्र और त्रिकोण के अधिपतियों) की दशा में बहुधा राजयोग की प्राप्ति होती है। योगकारक संबंध रहित ऐसे शुभ ग्रहों की दशा में भी राजयोग का फल मिलता है।

योगकारक ग्रहों से संबंध करने वाला पापी ग्रह अपनी दशा में तथा योगकारक ग्रहों की अंतरदशा में जिस प्रमाण में उसका स्वयं का बल है, तदनुसार वह योगज फल देगा। (यानी पापी ग्रह भी एक

कोण से राजयोग में कारकत्व की भूमिका निभा सकता है।)

धर्म और कर्म भाव के अधिपति यानी नवमेश और दशमेश यदि क्रमश- अष्टमेश और लाभेश हों तो इनका संबंध योगकारक नहीं बन सकता है। (उदाहरण के तौर पर मिथुन लग्न) इस स्थिति को राजयोग भंग भी मान सकते हैं।

यदि मारक ग्रहों की अंतरदशा में राजयोग आरंभ हो तो वह अंतरदशा मनुष्य को उत्तरोतर राज्याधिकार से केवल प्रसिद्ध कर देती है। पूर्ण सुख नहीं दे पाती है।

अगर राजयोग करने वाले ग्रहों के संबंधी शुभग्रहों की अंतरदशा में राजयोग का आरंभ हो तो राज्य से सुख और प्रतिष्ठा बढ़ती है। राजयोग करने वाले से संबंध न करने वाले शुभग्रहों की दशा प्रारंभ हो तो फल सम होते हैं। फलों में अधिकता या न्यूनता नहीं दिखाई देगी। जैसा है वैसा ही बना रहेगा।

राहु-केतु यदि केन्द्र (विशेषकर चतुर्थ और दशम स्थान में) अथवा त्रिकोण में स्थित होकर किसी भी ग्रह के साथ संबंध नहीं करते हों तो उनकी महादशा में योगकारक ग्रहों की अंतरदशा में उन ग्रहों के अनुसार, शुभयोगकारक फल देते हैं। (यानी शुभारुढ़ राहु-केतु शुभ संबंध की अपेक्षा नहीं रखते। बस वे पाप संबंधी नहीं होने चाहिए तभी कहे हुए अनुसार फलदायक होते हैं।) राजयोग रहित शुभग्रहों की अंतरदशा में शुभफल होगा, ऐसा समझना चाहिए।

दशम स्थान का स्वामी लग्न में और लग्न का स्वामी दशम में, ऐसा योग हो तो वह राजयोग समझना चाहिए। इस योग पर विख्यात और विजयी ऐसा मनुष्य होता है।

नवम स्थान का स्वामी दशम में और दशम स्थान का स्वामी नवम में हो तो ऐसा योग राजयोग होता है। इस योग पर विख्यात और विजयी पुरुष होता है।

जन्मपत्री में जो नीच ग्रह अपने उच्चांश में बली हो तो व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्य भोगता है। जबकि उच्च के ग्रह अपने नीचांशों में होने पर व्यक्ति को गरीबी में जीवन बिताना पड़ता है।

जिस मनुष्य का पूर्ण बली चन्द्रमा लग्न को छोड़कर शेष केन्द्र या त्रिकोण (4,7,10,5,9) में यदि पूर्ण बली शुक्र या बृहस्पति से युति बनाता हो तो वह मनुष्य साक्षात् राजा के समान ही सुख-संपत्ति और वैभवपूर्ण जीवन जीता है।

किसी व्यक्ति के जन्म समय में जो भी ग्रह अपनी नीच संज्ञा वाली राशि में स्थित हो या बैठा हो, यदि उस राशि का स्वामी और उसकी उच्च संज्ञा राशि का स्वामी त्रिकोण (5,9) या केंद्र (1,4,7,10) में बैठा हो तो वह मनुष्य या तो राजा होता है या फिर चारों दिशाओं में घूमने वाला यशस्वी, धार्मिक नेता होता है। ऐसा व्यक्ति राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री, योगी, शंकराचार्य या इसी तरह के पद पर विराजमान होता है।

जिस मनुष्य का कर्क लग्न बृहस्पति से युक्त हो, शुक्र धर्म स्थान में विराजमान हो तथा शनि व मंगल सातवें घर में बैठे हों तो वह मनुष्य सम्राट होता है।

किसी व्यक्ति के जन्म के समय जो ग्रह नीच राशि में हो, उस राशि का स्वामी या उसकी उच्चराशि का स्वामी लग्न में हो या चंद्रमा से केंद्र (1,4,7,10) में हो तो वह व्यक्ति स्वभाव से अत्यंत धार्मिक तथा चक्रवर्ती सम्राट होता है।

जिस व्यक्ति के दूसरे, पांचवें तथा नवें या ग्यारहवें घर में सभी शुभ ग्रह विराजमान हो तो वह मनुष्य धनवान होता है। यदि लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त होकर केंद्र त्रिकोण में उच्च या स्वगृही बैठा हो तो मनुष्य बहुत धनवान राजनीतिज्ञ होता है।

यदि व्यक्ति की कुंडली में नवमेश अपने नवांशनाथ के साथ केन्द्र में पंचमेश से युति बना रहा हो तो ऐसे व्यक्ति का राजा भी सम्मान करते हैं। प्राय- ऐसे लोग उच्च पदस्थ सरकारी अफसर बनते हैं।

यदि मेष में गुरु, धन में शनि और चन्द्रमा, दशम में राहु-शुक्र साथ बैठे हों तो व्यक्ति बहुत बड़ा राजनेता बनता है। यदि सभी ग्रह (2,6,7,12) में बैठे हो तो व्यक्ति बहुत ही बड़ा प्रभावशाली राजपुरुष होता है।

प्रत्येक लग्न में राजयोग निर्माण की लिए अलग स्थिति निर्मित होती है-

1 **मेष लग्न-** मेष लग्न में मंगल और बृहस्पति अगर कुंडली के नौवें या दसवें भाव में विराजमान होते हैं तो यह राजयोग कारक बन जाता है।

2 **वृष लग्न-** वृष लग्न में शुक्र और शनि अगर नौवें या दसवें स्थान पर विराजमान होते हैं तो यह राजयोग का निर्माण कर देते हैं। इस लग्न में शनि राजयोग के लिए अहम कारक बताया जाता है।

3 **मिथुन लग्न-** मिथुन लग्न में अगर बुध या शनि कुंडली के नौवें या दसवें घर में एक साथ आ जाते हैं तो ऐसी कुंडली वाले जातक का जीवन राजाओं जैसा बन जाता है।

4 **कर्क लग्न-** कर्क लग्न में अगर चंद्रमा और ब्रहस्पति भाग्य या कर्म के स्थान पर मौजूद होते हैं तो यह केंद्र त्रिकोण राज योग बना देते हैं। इस लग्न वालों के लिए बृहस्पति और चन्द्रमा बेहद शुभ ग्रह भी बताये जाते हैं।

5 **सिंह लग्न-** सिंह लग्न के जातकों की कुंडली में अगर सूर्य और मंगल दशम या भाग्य स्थान में बैठ जाते हैं तो जातक के जीवन में राज योग कारक का निर्माण हो जाता है।

6 **कन्या लग्न-** कन्या लग्न में बुध और शुक्र अगर भाग्य स्थान या दशम भाव में एक साथ आ जाते हैं तो जीवन राजाओं जैसा हो जाता है।

7 **तुला लग्न-** तुला लग्न वालों का भी शुक्र या बुध अगर कुंडली के नौवें या दसवें स्थान पर एक साथ विराजमान हो जाता है तो इस ग्रहों का शुभ असर जातक को राजयोग के रूप में प्राप्त होने लगता है।

8 **वृश्चिक लग्न-** वृश्चिक लग्न में सूर्य और मंगल, भाग्य स्थान या कर्म स्थान (नौवें या दसवें) भाव में एक साथ आ जाते हैं तो ऐसी कुंडली वाले का जीवन राजाओं जैसा हो जाता है। यहाँ एक बात और ध्यान देने वाली है कि अगर मंगल और चंद्रमा भी भाग्य या कर्म स्थान पर आ जायें तो यह शुभ रहता है।

9 धनु लग्न- धनु लग्न के जातकों की कुंडली में राजयोग के कारक, बृहस्पति और सूर्य माने जाते हैं। यह दोनों ग्रह अगर नौवें या दसवें घर में एक साथ बैठ जायें तो यह राजयोग कारक बन जाता है।

10 मकर लग्न- मकर लग्न वाली की कुंडली में अगर शनि और बुध की युति, भाग्य या कर्म स्थान पर मौजूद होती है तो राजयोग बन जाता है।

11 कुंभ लग्न- कुंभ लग्न वालों का अगर शुक्र और शनि नौवें या दसवें स्थान पर एक साथ आ जाते हैं तो जीवन राजाओं जैसा हो जाता है।

12 मीन लग्न- मीन लग्न वालों का अगर बृहस्पति और मंगल जन्म कुंडली के नवें या दशम स्थान पर एक साथ विराजमान हो जाते हैं तो यह राज योग बना देते हैं।

जन्म-कुंडली में बनने वाले खास राजयोग

लक्ष्मी योग- कुंडली के किसी भी भाव में चंद्र-मंगल का योग बन रहा है तो जीवन में धन की कमी नहीं होती है। मान-सम्मान मिलता है। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है।

रूचक योग- मंगल केंद्र भाव में होकर अपने मूल त्रिकोण (पहला, पांचवा और नवा भाव), स्वग्रही (मेष या वृश्चिक में हो तो) अथवा उच्च राशि (मकर राशि) का हो तो रूचक योग बनता है।

रूचक योग होने पर व्यक्ति बलवान, साहसी, तेजस्वी, उच्च स्तरीय वाहन रखने वाला होता है। इस योग में जन्मा व्यक्ति विशेष पद प्राप्त करता है।*

भद्र योग- बुध केंद्र में मूल त्रिकोण स्वग्रही (मिथुन या कन्या राशि में हो) अथवा उच्च राशि (कन्या) का हो तो भद्र योग बनता है। इस योग से व्यक्ति उच्च व्यवसायी होता है। व्यक्ति अपने प्रबंधन, कौशल, बुद्धि-विवेक का उपयोग करते हुए धन कमाता है। यह योग सप्तम भाव में होता है तो व्यक्ति देश का जाना माना उद्योगपति बन जाता है।*

शश योग- यदि कुंडली में शनि की खुद की राशि मकर या कुम्भ में हो या उच्च राशि (तुला राशि) का हो या मूल त्रिकोण में हो तो शश योग बनता है। यह योग सप्तम भाव या दशम भाव में हो तो व्यक्ति अपार धन-सम्पति का स्वामी होता है। व्यवसाय और नौकरी के क्षेत्र में ख्याति और उच्च पद को प्राप्त करता है।*

गजकेसरी योग- जिसकी कुंडली में शुभ गजकेसरी योग होता है, वह बुद्धिमान होने के साथ ही प्रतिभाशाली भी होता है। इनका व्यक्तित्व गंभीर व प्रभावशाली भी होता है। समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करते हैं। शुभ योग के लिए आवश्यक है कि गुरु व चंद्र दोनों ही नीच के नहीं होने चाहिए। साथ ही, शनि या राहु जैसे पाप ग्रहों से प्रभावित नहीं होना चाहिए।*

सिंघासन योग- अगर सभी ग्रह दूसरे, तीसरे, छठे, आठवें और बारहवें घर में बैठ जाए तो कुंडली में सिंघासन योग बनता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति शासन अधिकारी बनता है और नाम प्राप्त करता है।

चतुःसार योग- अगर कुंडली में ग्रह मेष, कर्क तुला और मकर राशि में स्थित हो तो ये योग बनता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति इच्छित सफलता जीवन में प्राप्त करता है और किसी भी समस्या से आसानी से बाहर आ जाता है।

श्रीनाथ योग- अगर लग्न का स्वामी, सातवें भाव का स्वामी दसवें घर में मौजूद हो और दसवें घर का स्वामी नवें घर के स्वामी के साथ मौजूद हो तो श्रीनाथ योग का निर्माण होता है। इसके प्रभाव से जातक को धन, नाम, यश, वैभव की प्राप्ति होती है।

विपरीत राजयोग - त्रिक स्थानों के स्वामी त्रिक स्थानों में हो या युति अथवा दृष्टि संबंध बनते हों तो विपरीत राजयोग बनता है।

यह व्यक्ति को अत्यंत धनवान और खुशहाल बनाता है इस योग में व्यक्ति महाराजाओं के समान सुख प्राप्त करता है। ज्योतिष ग्रंथों में यह भी बताया गया है कि अशुभ फल देने वाला ग्रह जब स्वयं अशुभ भाव में होता है तो अशुभ प्रभाव नष्ट हो जाते है।

हंस योग- बृहस्पति केंद्र भाव में होकर मूल त्रिकोण स्वग्रही (धनु या मीन राशि में हो) अथवा उच्च राशि (कर्क राशि) का हो तब हंस योग होता है।

यह योग व्यक्ति को सुन्दर, हंसमुख, मिलसार, विनम्र और धन-सम्पति वाला बनाता है। व्यक्ति पुण्य कर्मों में रूचि रखने वाला, दयालु, शास्त्र का ज्ञान रखने वाला होता है।

मालव्य योग- कुंडली के केंद्र भावों में स्थित शुक्र मूल त्रिकोण अथवा स्वग्रही (वृष या तुला राशि में हो) या उच्च (मीन राशि) का हो तो मालव्य योग बनता है। इस योग से व्यक्ति सुन्दर, गुणी, तेजस्वी, धैर्यवान, धनी तथा सुख-सुविधाएं प्राप्त करतें हैं।

सावधान.... क्यों नहीं मिलता राजयोग भी शुभ फल

कुंडली मे राजयोग होने के बाद भी कई बार जाचकों को असफलता, परेशानियों और समस्याओं का निरंतर सामना करना पडता है उसके कारण भी कुंडली में ही छुपा होता है जैसे-

अकारक ग्रहों का अति वलवान होना।।

जीवन में योगकारक ग्रहों की दशा ना मिलना।।

राजयोग के साथ - साथ प्रवल पतित योगों का प्रभावी होना ।।

राजयोग का भंग हो जाना या निष्प्रभावी हो जाना ।।

चरित्र पतन (दुष्कर्मों) के योग भी बनना और उनकी दशा-गोचर मिलना ।।

इसके अलावा कुंडली में श्रापित योग जैसे– पित्र-श्राप, प्रेत-दोष, कालशर्प, प्रतिबंधक दोष, मांगलिक दोष, चांडाल योग, ग्रहण दोष, संधि काल जन्म दोष, पापकर्तिकी आदि दोष, क्षीण लग्नाधि दोष, दरिद्र योग .... आदि विभिन्न विपरीत योग कुंडली में राजयोग होने के बाद भी उसको शुभ देने से रोक देते हैं... और जाचक को बाधाऐं उत्पन्न करते रहते हैं।

चूना : केल्शियम की कमी की पूर्ति में सहायक

पं शालिग्राम शर्मा

खाने का चूना बड़ा उपयोगी है,चूना वही जो पान में लगा के खाया जाता है , उसकी एक डिब्बी लाकर सेवन के लिए घर में रखना चाहिए .

- यह सत्तर प्रकार की बीमारियों को ठीक कर देता है . गेहूँ के दाने के बराबर चूना गन्ने के रस में मिलाकर पिलाने से बहुत जल्दी पीलियाठीक हो जाता है* .
- चूना शुक्राणु की कमी दूर करने की सबसे अच्छी दवा है - अगर किसी के शुक्राणु नही बनते उसको अगर गन्ने के रस के साथ चूना पिया जाये तो साल दो साल में आवश्यक शुक्राणु बनने लगेंगे . जिन माताओं के शरीर में संतान प्राप्ति के अणु नही बनते उन्हें भी इस चूने का सेवन करना चाहिए .
- शुगर की बीमारी वालों को रोज़ सुबह ख़ाली पेट एक गिलास पानी में एक छोटे चने के बराबर चूना मिलाकर पीने से शुगर रोग में कमी आती है जड़ से भी ख़त्म हो सकती हैं (समय समय पर जाँच करवाते रहे.. वरना शुगर का लेवल माइनस भी हो सकता हैं)
- कम लम्बाई वाले बच्चों के लिए चूना बहुत अच्छा है जो फ़लम्बाई बढाता है - गेहूँ के दाने के बराबर चूना रोज दही अथवा दाल में मिलाकर के या पानी में मिला के लिया जा सकता है - इससे लम्बाई बढने के साथ साथ स्मरण शक्ति भी बहुत अच्छी होती है जिन बच्चों की बुद्धि कम है ऐसे मतिमंद बच्चों के लिए सबसे अच्छी दवा है चूना . जो बच्चे बुद्धि से कम है, दिमाग देर में काम करता है, देर में सोचते है हर चीज उनकी स्लो है उन सभी बच्चे को चूना खिलाने से केल्सीयम की आवश्यकता की पूर्ति होती है।
- बहनों मातृशक्ति जिनको अपने फ़मासिकह्रधर्म के समय अगर कुछ भी तकलीफ होती हो तो उसका चूना का पानी दाल आदि में लेने सबसे अच्छा लाभ है चू मेनोपौज़ की सभी समस्याओं के लिए गेहूँ के दाने के बराबर चूना लेना लाभदायक है

- जब कोई माँ गर्भावस्था में है तो चूना केल्शियम हेतु रोज खाना चाहिए क्योंकि गर्भवती माँ को सबसे ज्यादा केल्शियम की जरुरत होती है और चूना केल्शियम का सबसे बड़ा भंडार है . गर्भवती को अनार के रस में - अनार का रस एक कप और चूना गेहूँ के दाने के बराबर ये मिलाके रोज पिलाइए माँ को बच्चे के जन्म के समय कोई तकलीफ नही होगी बच्चा जो पैदा होगा वो बहुत हृष्ट पुष्ट और तंदुरुस्त होगा , बच्चा बहुत होशियार होता है।
- चूना घुटने के दर्द , कमर का दर्द तथा कंधे का दर्द ठीक करता है, ।स्पाईन अर्थात रिड़ की हड्डी में जो मनके होते है उसमे दूरी बढ़ जाती है जिसे ये चूना का सेवन ही ठीक करता है . रीढ़ की हड्डी की सब बीमारिया चूने से ठीक होती है . अगर हड्डी टूट जाये तो टूटी हुई हड्डी को जोड़ने की ताकत सबसे ज्यादा चूने में है . इसके लिए चूने का सेवन सुबह खाली पेट करना चाहिए।
- अगर मुंह में ठंडा गरम पानी लगता है तो चूना खाने से ठीक हो जाता है , मुंह में अगर छाले हो गए है तो चूने का पानी पिने से ठीक हो जाता है ।

शरीर में जब खून कम हो जाये तो नियमित पान या पानी में थोड़ा चूना जरुर लेना चाहिए , एनीमिया है खून की कमी है उसकी सबसे अच्छी दवा है ये चूना . गन्ने के रस में , या संतरे के रस में , नही तो सबसे अच्छा है अनार के रस में डाल कर चूना ले . अनार के रस में चूना पिने से खून बहुत बढता है , बहुत जल्दी खून बनता है - एक कप अनार का रस गेहूँ के दाने के बराबर चूना सुबह खाली पेट ले .

- भारत के जो लोग चूने से पान खाते है, बहुत होशियार है और वे महर्षि वाग्भट के अनुयायी है . पर पान बिना तम्बाखू, सुपारी और कत्थे के ले . तम्बाखू ज़हर है और चूना अमृत है पान में सौंठ, इलायची , लौंग , केसर , सौंफ , गुलकंद , चूना , कसा हुआ नारियल आदि डाल के खाए .
- अगर घुटने में घिसाव आ गया हो घुटना बदल ने के पहले प्राथमिक उपचार के रूपमे चूना खाते रहिये संभव है लाभ मिल जाय।हरसिंगार (पारिजातक या प्राजक्ता) के पत्ते का काढ़ा पीजिये , घुटने बहुत अच्छे काम करेंगे ।

नवग्रह के शुभ फल प्राप्ति के सरल उपाय

ज्योतिष शास्त्र के अंतर्गत नवग्रहों के शुभ अशुभ फल जन्मपत्रिका में देखे जाते हैं कुछ कठिन और अधिक खर्चिले उपाय हर व्यक्ति नहीं कर सकता है अतः सरल और जीवन में ध्यान रखने योग्य बातों को यदि अपने स्वभाव और आदत में रखते हुए जीवन में अपनाए जाए तो ग्रहों के अशुभ फल यथासंभव प्राप्त नहीं होंगे। तथा अशुभफल देने वाले ग्रह के भी अधिक अशुभत्व फल के प्रभाव से प्रभावित नहीं होंगे । नवग्रहों से सम्बन्धित निम्नानुसार ये सरल उयाय अपने जीवन को सुखी बनाने हेतु जानना आवश्यक हैं।

सूर्यग्रह की शांति के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

माता-पिता की सेवा करे

प्रतिदिन सूर्य को अर्घ्य दें

प्रतिदिन जल में रोली तथा लाल पुष्प डालकर सूर्य के नीमित्त जल का कलश भरकर पूजास्थान पर रखे ।

सोना-तांबा तथा चीनी-गुड़ का दान भी करें।

सूर्योदय से पूर्व उठकर सूर्य के दर्शन करे तथा रविवार का व्रत करें।

ध्यान देने योग्यबातें- नमक का कम उपयोग करें। बुजुर्गों का सम्मान करें। धार्मिक और सामाजिक कार्यों में भाग लें।

पिता की आज्ञा का पालन करें।

चंद्रग्रह की शांति के लिए

ॐ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।

पानी वाला नारियल, सफेद चंदन तथा चांदी का चंद्रमा, विल्बपत्र, सफेद मिष्ठान्न का भगवान शंकर को भोग लगाएं।

स्मरण रखने योग्य बातें- सोमवार का व्रत करें तथा सफेद वस्त्र का दान करें, पहाड़ों की यात्रा करें तथा अपनी माता के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त करें तथा आज्ञा का पालन करें।

मंगल की शांति के उपाय

हनुमानजी को चमेली का तेल मिश्रित सिंदूरअथवा शुद्ध घी का चोला चढ़ाएं तथा मंगल स्तोत्र का पाठ करें। इमरती, जलेबी, बूंदी,गुड़चना अथवा चूरमे का प्रसाद अर्पण करें।

स्मरण रखने योग्य बातें- अपने कुटुंब, सहयोगियों से बैर न रखें। सगे भ्राता को सम्मान दें। मंगलवार का व्रत करें।

बुध ग्रह की शांति के लिए

मां दुर्गा/ देवी शक्ति की पूजा-अर्चना करनी चाहिए।

हरे मूंग भिगोकर पक्षियों को दाना डालें।

पालक या हरा चारा गायों को खिलाएं।

पक्षियों को पालकर पराधीन नही रखे, स्वतंत्र रखते हुए उन्हे अन्न दिलाएं।

बुधशुभत्व केलिए अनुकरणीय-

नौ वर्ष से छोटी कन्याओं के चरण प्रक्षालन कन्या पूजन तथा प्रणाम करकेआशीर्वाद लेवे ।बुधवार का व्रत रखें। मंत्रानुष्ठान हवन करके बुध की अनुकंपा प्राप्त करें।

गणेश जी की पूजन करें

बृहस्पति की प्रसन्नता

गुरु और ब्राह्मणों का सम्मान करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

चने की दाल तथा केशर का मंदिर में दान करें,

केशर का तिलक मस्तक पर लगाएं

ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों का योग्य व्यक्तियों को दान करें।

गुरूके शुभफलकी वृद्धि भगवान का केले का फल अर्पित करें

कुल पुरोहित का सम्मान करके आशीर्वाद प्राप्त करें

अपने विद्या देने वाले गुरू का सम्मान करें।

ज्ञान दान करते रहे।

शुक्र ग्रह की शांति के लिए

कनकधारा महालक्ष्मी का दैनिक पाठ करें।

श्वेत और स्वच्छ वस्त्र पहनने गो की सेवा तथा गोशाला में गुड़, हरा चारा, चने की दाल गायों को खिलाएं।

विशेष रूप से श्रीविद्या का पूजन कराएं।

ब्राह्मण को कांसे के कटोरे में खीर खिलाकर आशीर्वाद प्राप्त करें।

विशेष परिस्थिति में रोग हो तो मृत संजीवनी का मंत्र जप कराएं।

शुक्र के शुभत्व के लिए जीवन मे सदैव ध्यान रखें -अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिए।

संयम से रहें। व्यसनों से बचें।

शनिग्रह की शांतिके लिए

पीपल वृक्ष तथा भैरव का पूजन करें।

इमरती, उड़द की दाल, दही बड़े भैरवजी को चढ़ाएं व प्रसाद में बांटें।

श्री हनुमान चालीसा तथा सुंदरकांड का नियमित पाठ करें।

सदाध्यान रखनेकी बातें-

मजदूरों को तली हुई खाद्य वस्तुओं का दान करें। शनिवार का व्रत करें।

पिता के संबंधियों से अच्छे मधुर संबंध बनाए रखें। शनिवार को तिल के तेल का शनि पर अभिषेक करें।

राहु की शांति के लिए मां सरस्वती का पाठ-पूजन करना चाहिए,

घर पर बने शुद्ध शाकाहारी भोजन का ही सेवन करें।

शुद्धता का ध्यान रखें

केतु के अशुभत्व से बचाव का ध्यान रखे-

किसी भी प्रकार खराब बिजली का सामान इकठ्ठा न होने दें तथा बिजली का सामान मुफ्त में न लें। मातृपक्ष के संबंधियों की सेवा करें ।

अश्लीलता/ और उससे सम्बधित साहित्य आदि से सदा दूर रहे।

केतु ग्रह की शांति के लिए

गणेशजी की दुर्वा चढ़ाए तथा पूजा-अर्चना करें।

गणेश चालीसा अथवा गणपति अथर्वशीर्ष का पाठ करें

प्रसाद निमित्त केले खाने को देवें

किसी भी धर्मस्थल/मंदिर पर वहां प्रचलित रंग की ध्वजा चढ़ाएं।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अक्टूबर 2021
आपके लिए मास का पूर्वार्द्ध लाभप्रद रहेगा। आर्थिक लाभ समय पर होगा तथा पुरानी रुकी हुई समस्या का निराकरण होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मास के अंतिम 2 सप्ताह में कार्य की अधिकता रहेगी लेकिन आर्थिक रुकावटें दूर होगी। मानसिक चिंताएं अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल है ,कृषक वर्ग को अधिक य करने से लाभ मिल पाएगा, नौकरी करने वालों को समय पर लाभ के योग है। विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए ,इस माह की 2, 5,7, 9,15,19,24 एवं 27 तारीख अनुकूल रहेंगी।

नवम्बर 2021
मास का पूर्वार्ध कार्य की गतिविधियों में वृद्धि करेगा। धन लाभ के योग बनेंगे सरकारी काम में सफलता मिल सकेगी मास के उत्तरार्ध में पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी आर्थिक खर्च अधिक होगा भ्रमण यथासंभव टाल दे। व्यापारिक वर्ग को अधिक खर्च कारक समय, कृषक वर्ग को समुचित लाभ, नौकरी वर्ग को अपने कार्य में पूर्ण रूप से यश मिलेगा विद्यार्थी वर्ग के विद्यालय में सामान्य दिक्क तें रह सकती है मास की 3 ,6, 12, 15, 21 ,24 तथा 30 तारीख से शुभ है।

दिसम्बर 2021
मांस का प्रारंभ आपके लिए उत्तम है वर्षभर जो कार्य रुके रहे उनमें गति प्राप्त होगी। साथ ही रुका हुआ द्रव्य प्राप्त होने की उम्मीद लगती है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें अधिक भ्रमण हो सकता है मास का उत्तरार्ध व्यस्तताओं से भरा रहेगा। कई कार्यों को करने की आपकी जिज्ञासा के फल स्वरूप दौड़ धूप अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग कोकार्य में व्यस्तता तथा भ्रमण के साथ लाभ, कृषक वर्ग को कार्य का अपेक्षित लाभ , नौकरी करने वालों को समय सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को भ्रमण अधिक रहेगा। मास में 2 , 5,7, 9, 17, 22 26 एवं 29 तारीख शुभ रहेगी।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अक्टूबर 2021
सावधानी रखें ताकि किसी को गलतफहमी ना हो सके पारिवारिक दृष्टि से समय ठीक नहीं है। मांस का उत्तरार्ध अपने कार्यों में गतिशीलता देगा किंतु निरुद्देश्य यात्रा होने के कारण समय व्यर्थ व्यय होगा। व्यापारी वर्ग को खर्चीला समय कृषक वर्ग को अपने कार्य से संतुष्टि। नौकरी करने वालों को परिवर्तन एवं भ्रमण संभव ।विद्यार्थी अपने कार्यों से संतुष्ट रहेंगे। मास की 4 ,7 ,13 ,17 ,22 एवं 30 तारीख शुभ है

नवम्बर 2021
यह माह आपके लिए शुभ है पारिवारिक दृष्टि से संतोष मिलेगा संतान की वांछित प्रगति हो सकती है अधिक खर्च करने के योग है। मास के उत्तरार्ध में में अपने नजदीकी मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा शुभ फल दायक यात्रा भी होगी व्यापारी वर्ग को मास उत्तम कृषक वर्ग को उचित लाभ तथा नौकरी करने वालों को मानसिक तनाव अधिक रहेगा विद्यार्थी वर्ग, समय का सदुपयोग करें तो उत्तम रहेगा। इस माह में 4 ,10, 13 ,16, 19, 24 ,27 एवं 30 शुभ तारीख है।

दिसम्बर 2021
मास का पूर्वार्ध आपकी राशि के लिए व्यस्तता तथा चुनौतीपूर्ण है। कुछ कार्यों में आपके द्वारा यदि समय सीमा दी हो तो उसे शीघ्र पूर्ण करें तनाव रह सकता है मास का उत्तरार्ध अधिक चुनौतियों पूर्ण है किसी को यदि आश्वासन दिया है तो उसकी पूर्ति नहीं होने पर वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। व्यर्थ भ्रमण भी संभव है पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को समय खर्चीला कृषक वर्ग को अपने कार्य का मूल्यांकन उत्तम होगा। नौकरी करने वालों को व्यर्थ भ्रमण तथा विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रह सकती है। मास की 2, 6 ,9, 12 ,18, 22 ,25 एवं 29 तारीख शुभ है।

मिथुन
का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा

अक्टूबर 2021
मास के प्रथम सप्ताह में कई दिनों की इच्छाओं की पूर्ति होगी स्थाई संपत्ति के योग बन सकते हैं। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें बच्चों की इच्छित प्रगति हो सकेगी मास के अंतिम 2 सप्ताह उच्च वर्ग के लोगों से संपर्क होगा तथा कार्य के नए आयाम प्राप्त होंगे धन लाभ की संभावना व्यापारी वर्ग के लिए यह शुभ समय है। कृषक वर्ग के लिए अपने प्रयास में सफलता प्राप्त होगी। नौकरी वर्ग वालों के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग सचेत रहकर पढ़ाई करें मास के 3, 5, 9, 11, 14, 23, 26 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2021
मास का आरंभ व्यस्तता पूर्ण रहेगा। द्रव्य लाभ तथा भावी योजनाएं क्रियान्वित करने के लिए प्रयास में गति मिलेगी। दांपत्य जीवन में तनाव रहेगा। संतान की समुचित प्रगति संभव ।मास के अंतिम 2 सप्ताह चुनौतियों पूर्ण रहेंगे इसमें अपने व्यावसायिक कम्पीटिटर तथा दूरके सम्बन्ध रखने वालों की ओर से कार्य में अप्रत्यक्ष रूप से बाधाएं आ सकती है। अपने संबंध सु मधुर रखने का फिरभी प्रयास करें। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को वांछित सफलता हैं। नौकरी वर्ग को अधिक सजगता से कार्य करना चाहिए। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य की पुनरावृत्ति करना जरूर आवश्यक है मास की 3 7 11 13 19 26 शुभ है।

दिसम्बर 2021
मास के प्रारंभ पक्ष में आर्थिक रुकावटें दूर होगी। समय पर लाभ होगा अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे दांपत्य सुख उत्तम रहेगा। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च के योग बनेंगे। मास अंतिम 2 सप्ताह में भ्रमणकी अधिकता रहेगी,तथा अपने किए जाने वाले कार्य का तनाव भी अधिक रहेगा धन लाभ में सामान्य रूप से कमी रहेगी व्यापारी वर्ग को अधिक खर्च से सावधान रहना चाहिए कृषक वर्ग अपनी कृषि कार्य में सावधानी बरतें व्यर्थ खर्च संभव नौकरी करने वालों को समय सामान्य रहेगा विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्यों में रुकावटें आना संभव है मास की

त्रैमासिक राशि भविष्य फल अक्टूबर से दिसंबर 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अक्टूबर 2021

मास का पूर्वार्द्ध आपको रचनात्मक कार्यक्रमों के करने में सहयोगी रहेगा अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा। मास के अंतिम 2 सप्ताह में खर्च की अधिकता रहेगी । किसी पुराने कार्य को करने में अधिक यत्न करना पड़ेगा। व्यापारी वर्ग को खर्च कारक समय। कृषक वर्ग को लाभप्रद। नौकरी करने वालों को अपने कार्यों से संतुष्टि रहेगी। विद्यार्थी वर्ग समय के सदुपयोग करने का ध्यान रखें इस माह की 4 ,14 ,16 ,19, 21 ,27 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2021

मास का पूर्वार्ध आपको अधिक व्यस्तता का है कार्य के पूर्ण होने तक सावधानी एवं सतर्कता रखना आवश्यक है। लाभ के सुअवसर प्राप्त होंगे मास का उत्तरार्ध आपको अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता देगा, साथ ही धन लाभ की समुचित व्यवस्था भी करेगा व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में व्यस्तता अधिक, नौकरी वर्ग को समय संतोषप्रद, विद्यार्थी वर्ग को अधिक य करने से लाभ. मिलेगा मास की 3 ,7, 9 ,11, 16 ,19, 23 एवं 26 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2021

मासका पूर्वार्द्ध रुके हुए कार्य पूर्ण करने में सहयोगी रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी तथा राजकीय कार्य समय पर हल होंगें। मास के उत्तरार्ध में आपको अपने नजदीकी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। सुखद यात्रा भी संभव है अपने कार्यों में विशेष ध्यान देने से सफलता मिलेगी व्यापारी वर्ग को सामान्य समय ।कृषक वर्ग को आर्थिक कठिनाइयां। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक। विद्यार्थी वर्ग का समय का ध्यान रखना चाहिए। मास की 3, 6 9 ,12, 18, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अक्टूबर 2021

मास का पूर्वार्द्ध आपके लिए अनुकूल प्रतीत होता है। सुख वैभव के संसाधन की वृद्धि होगी। स्थाईत्व प्राप्त होगा तथा मानसिक संतोष रहेगा। मास के उत्तरार्ध में अपने नजदीकी मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा स्वास्थ्य पर ध्यान देना आवश्यक है। व्यापारी वर्ग को समय पर धन लाभ। कृषक वर्ग को अधिक श्रम से धन लाभ। नौकरी करने वालों को समय अनुकूल। विद्यार्थी वर्ग को अपने मेहनत का सही फल प्राप्त होगा मास की नो 11, 17, 22, 24 एवं 29 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2021

मास का पूर्वार्द्ध आपको अपने कार्यों में सफलता दायक है ।नए कार्यों की रूपरेखा बनेगी समय को व्यर्थ ना खोएं, सदुपयोग करें। मास का उत्तरार्ध आपके लिए भ्रमण तथा आर्थिक कठिनाईयों का रहेगा। व्यापारी वर्ग को अधिक खर्च। कृषक वर्ग को अपने कार्य से संतुष्टि। नौकरी करने वालों को परिवर्तन संभव. ।विद्यार्थी वर्ग को सामान्य दिक्क तें रहेगी।

दिसम्बर 2021

मास का पूर्वार्ध आपके लिए कुछ चुनौतियों भरा कार्य लेकर आया है। आप अपनी पूरी क्षमता के साथ यदि कार्य में सफल हुए तो यश एव धन लाभ प्राप्त होगा। मास का उत्तरार्ध व्यस्तता पूर्ण रहेगा। सुखद भ्रमण के योग भी बनेंगे तथा पारिवारिक कार्यों में अधिक खर्चके योग बनेगे। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अधिक भागदौड़ रहेगी ।नौकरी करने वालों को मास सामान्य रहेगा विद्यार्थी वर्ग को समय प्रतिकूल है, अधिक खर्च के योग हैं। मास की 5, 7, 11, 17, 19 ,26 एवं 30 तारीख शुभ है।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अक्टूबर 2021

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिंताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

नवंबर 2021

यह मास आपके लिए संतुलित दिमाग से काम करते हुए सफलता प्राप्त करने का है। मास का प्रारंभ कुछ चिंताएं देता है लेकिन उत्तरार्द्ध में लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक चिंताएं मास में रहेंगी। उनका निराकरण करने में अधिक य करना पड़ेगा। ऋणग्रस्तता को अधिक नहीं बढ़ने दें। विद्यार्थी वर्ग को माह सामान्य, कृषकों के लिए अपने कार्य के अनुपात में सफलतादायक रहेगा। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ के योग, कर्मचारी वर्ग को अधिक संतुष्टिप्रद मास में 4, 5, 9, 12, 13, 17 एवं 18 दिवस शुभ हैं।

दिसंबर 2021

मास का पूर्वार्द्ध पारिवारिक चिंतादायक है। अपनी कही गई बातों का गलत प्रभाव होगा। शांत रहना अधिक श्रेयस्कर है। राज्य अथवा कर्मपक्ष से संतोष रहेगा। पुराने व्यवधान दूर होंगे। उत्तरार्द्ध में आर्थिक लाभ होगा। साझेदारी के कार्य में संतोष मिलेगा किसी प्रिय व्यक्ति से भेंट होगी। व्यापारी वर्ग को आर्थिक कठिनाईयाँ अधिक रहेंगी। नौकरी वर्ग को अधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर लाभ एवं सुविधाएं मिलेगी। मास की 3, 6, 9, 12, 18, 21 तारीखों शुभ हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल अक्टूबर से दिसंबर 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अक्टूबर 2021
मास के प्रथम दो सप्ताह अधिक दौड़ धूप के रहेंगे। लेकिन पिछले माह की अपेक्षाकृत उत्तरोत्तर सुधार के योग है। व्यर्थ के भ्रमण संभव हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। विरोधी वर्ग के षडयंत्र के शिकार न हो इसका ध्यान रखें। पारिवारिक चिंताएं अधिक रहेंगी। अपनी सेहत का ध्यान रखें। आहार समय पर लें। भ्रमण और खर्च बढ़ेगा। व्यापारी वर्ग को अधिक यत्न से लाभ। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय। विद्यार्थी वर्ग को खर्च की अधिकता रहेगी। (मास की 2,4,7,9,13,17 शुभ हैं।)

नवंबर 2021
मास के पूर्वार्द्ध में अपने प्रयास लाभदायक रहेंगे। कुछ रूके हुए कार्यपूर्ण होंगे। धनलाभ भी यथासंभव होगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। कुछ नजदीकी मित्रों से वैचारिक विवाद संभव है। व्यर्थ भ्रमण नहीं हो इसका ध्यान रखें। राजपक्ष के कार्यों को यथासमय निपटाएं। विद्यार्थी वर्ग को समय के दुरुपयोग से बचना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर सफलता तथा धनलाभ मिलेगा। व्यापारी वर्ग समस्याग्रस्त रहेगा, कर्मचारी वर्ग के लिए अपने कार्य से सफलता मिलेगी। मास की 3, 6, 9, 10, 13, 19, 22 एवं 26 शुभ हैं।

दिसंबर 2021
स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिजनों से व्यर्थ विवाद से बचें। व्यर्थ भ्रमण संभव है। अज्ञात शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। खाद्य पदार्थ के सेवन में ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को खर्च की अधिकता (आपके अनुपात में), नौकरी वर्ग के लिए अधिकारियों एवं सहयोगियों की प्रसन्नता। दिनाँक 2, 4, 6, 8, 10, 18, 20, 22 एवं 26 शुभ हैं।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अक्टूबर 2021
मास का पूर्वार्ध आपके लिए रुके हुए काम पूरे करेगा करेगा साथ ही व्यापार-व्यवसाय में सावधानी बरतना चाहिए। पारिवारिक चिंताएं रहेगी पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें मास के उत्तरार्ध में आपको अपने कार्यों को उत्तम तरीके से करने के अवसर प्राप्त होंगे। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा व्यापारी वर्ग को उचित लाभ कृषक वर्ग को चिंताएं तथा विद्यार्थी वर्ग को सफलताएं प्राप्त होगी नौकरी करने वालों को सावधानी से कार्य करने की सलाह है। मास की 2,3 ,6, 8,10 ,12 ,13 ,21,22 एवं 30 तारीख के शुभ है।

नवम्बर 2021
मास का प्रारंभ आपके लिए अपने मन और मस्तिष्क को संतुलित रखकर कार्य करने के लिए है कुछ निर्णय से लाभ में कमी रह सकती है संतान की चिंता अधिक रहेगी। मांस के अंतिम 2 सप्ताह विशेष सावधानी के हैं व्यापारी वर्ग अपने कार्य में सावधानी रखें कृषक वर्ग को समुचित लाभ प्राप्त होगा नौकरी करने वालों को अधिक दौड़ धूप रहेगी विद्यार्थी वर्ग को अधिक सजगता से अध्ययन करने से लाभ मिलेगा मास की एक 4, 5, 9, 12, 14, 16, 20, 24 एवं 29 तारीख शुभ रहेगी।

दिसम्बर 2021
इस मास में प्रारंभिक 2 सप्ताह में परेशानियों और आर्थिक कठिनाइयों का समय रहेगा। अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में परिवर्तन ना करें हो सकता है। आगामी समय में वेद पूर्ण हो सके मास की तृतीय एवं चतुर्थ सप्ताह मैं अपने कार्यों में सफलता प्राप्त होगी विशिष्ट जनों का समा गमन होगा। राजकीय कार्यों में सावधानी बरतें व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभ के योग हैं कृषक वर्ग अपने निर्णय को सावधानी से क्रियान्वित करें नौकरी करने वालों को अपने कार्य का समुचित लाभ मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग समय का पूर्ण सदुपयोग करें मास की 3 ,5, 7 ,9 11,13 ,19 ,23 ,27 एवं 30 अनुकूल हैं।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

अक्टूबर 2021
विगत माह से यह माह चिंताओं में कमी करेगा। व्यर्थ भ्रमण इस माह में होगा। अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करें, स्वास्थ्य खराब रह सकता है। अधिक धनलाभ की इच्छा से कोई जोखिम भरा कार्य नहीं करें, स्वास्थ्य खराब रह सकता है। अधिक धनलाभ की इच्छा से कोई जोखिम भरा कार्य नहीं करें अन्यथा धन-व्यय हो सकता है। व्यापारी वर्ग को धनलाभ में कमी। खर्च की अधिकता। कृषक वर्ग वालों को अपनी अस्थिरता के कारण कोई नुकसान। नौकरी वालों को त्रुटिपूर्वक कार्य नुकसानदेह हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग का समय सामान्य है। दि. 5, 6, 9, 14, 16, 17, 23, 24, 25 एवं 29 नेष्ट है। निर्णयों में सावधानी बरतें।

नवम्बर 2021
मास के पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य खराब रहेगा। अपने कार्य में बाधाएं उपस्थित करने का प्रयास होगा किन्तु अपनी बुद्धि चातुर्य से बाधाएं दूर होंगी। मास के उत्तरार्द्ध में इच्छित कार्य में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्यं लाभ मिलेगा। अपनी प्रतिष्ठा एवं समान की वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग को चिंताओं की वृद्धि, आर्थिक लाभ में कमी, खर्च की अधिकता, कृषि कार्य वालों को उत्पादन में समुचित लाभ। नौकरी वालों को तरक्की के अवसर। विद्यार्थी वर्ग को श्रम का उचित लाभ। मास की 3, 6, 9, 12, 21, 27 उत्तम रहेगी।

दिसम्बर 2021
स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिजनों से व्यर्थ विवाद से बचें। व्यर्थ भ्रमण संभव है। अज्ञात शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। खाद्य पदार्थ के सेवन में ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को खर्च की अधिकता (आपके अनुपात में), नौकरी वर्ग के लिए अधिकारियों एवं सहयोगियों की प्रसन्नता। दिनाँक 2, 4, 6, 8, 10, 18, 20, 22 एवं 26 शुभ हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल अक्टूबर से दिसंबर 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

अक्टूबर 2021
मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

नवम्बर 2021
मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

दिसम्बर 2021
मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्क ी संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तराद्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, प ी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अक्टूबर 2021
अधिकारियों की अप्रसन्नता। विवाद से दूर रहे। आर्थिक रुकावटें। कोर्ट कचहरी के विवाद में व्यस्तता। उत्तरार्द्ध में चिंताओं में कमी। स्वास्थ्य में कमजोरी। किसी अप्रिय घटना से मन को दुःख। व्यापारी वर्ग को आलस्य के फलस्वरूप कार्यो में लाभ की गुंजाईश कम रहेगी। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित विवाद से सावधानी रखना चाहिए। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक, जोखिम भरे कार्य में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को परिस्थितियां अनुकूल। दिनाँक 1, 5, 7, 9, 11, 17 शुभ रहेंगी।

नवम्बर 2021
यह माह आरंभ में चिंतादायक लेकिन उत्तराद्ध सफलतादायक रहेगा। व्यापार व्यवसाय में बढ़ोत्तरी होगी। अपने प्रियजनों से अच्छे संबंध रहेंगे। पारिवारिक सुख उत्तम, राजकीय कार्यों में सफलता और विजय मिलेगी। अपनी आत्मबल की वृद्धि होगी तथा कार्यों को बढ़ाने की रुचि बढ़ेगी। व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभ। नौकरी वर्ग को अपने कार्य से संतोष एवं अधिकारी वर्ग को प्रसन्नता। कृषक वर्ग को अपनी योजनानुरुप कार्य से लाभ। विद्यार्थी वर्ग को परिवर्तन लाभप्रद नहीं। (मास की 4,5,10,11,20,22,24 शुभ)

दिसम्बर 2021
यह मास विगत समय से अनुकूल रहेगा। कठिनाईयों के कार्य आसानी से हल होंगे। पारिवारिक सुख मिलेगा। संतान को अपने कार्य में सफलता से परिवार में सुख-शांति महसूस करेंगे। साझेदारों पर अनावश्यक क्रोध से बचें। अन्यथा विवाद संभव है। मास के उत्तराद्ध में भ्रमण यथासंभव टालें। कृषक वर्ग को समय रहते अपने कार्य निपटाने पर लाभ संभव। नौकरी वर्ग को स्थानांतरण। विद्यार्थी वर्ग को सफलता रहेगी। मास की 2,7,11,17,19,24 तारीख शुभ है।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

अक्टूबर 2021
यह मास आपके लिए प्रगति दायक आर्थिक दृष्टि से रुके हुए कार्य पूरे होंगे तथा कुछ नवीन कार्यों को आरंभ करने के लिए मन में उत्साह जागृत होगा। पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें संतान सुख उत्तम रहेगा मास के अंतिम 2 सप्ताह में व्यर्थ का विरोध रहेगा। अपने विरोधियों के षड्यंत्र कार्य में बाधा पहुंचा सकते हैं संतान को इच्छित प्रगति संभव है। व्यापारी वर्ग को खर्च की अधिकता रहेगी कृषक वर्ग को अपने कार्यों में सुधार लाने का योग है नौकरी करने वालों को अपने वरिष्ठ अधिकारियों की अप्रसन्नता रह सकती है, विद्यार्थी वर्ग अपने कार्यों में संतुष्ट रहेंगे मास की 4, 9, 12, 16, 18, 24 तथा 28 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2021
मास के पूर्वार्ध में अपना स्वभाव शांत रखें। अनावश्यकक्रोध आवेश नुकसानदायक रह सकता है। पारिवारिक कार्यों में तनाव रहेगा। व्यर्थ भ्रमण भी संभव है मास के अंतिम 2 सप्ताह अधिक खर्च कारक है। अपने कार्यों में शांति पूर्वक पूर्ण करें ताकि कार्य में क्षति ना हो संतान के लिए खर्च की अधिकता रहेगी व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में अधिक दौड़-धूप करनी होगी कृषक वर्ग को लाभ प्राप्ति में बाधाएं रह सकती है नौकरी वर्ग वालों को अपने समय पर कार्य निष्पादन करना ही उचित होगा विद्यार्थी वर्ग का समय कमजोर है सदुपयोग करें। इस माह की 4, 6, 9, 12 ,17 ,19, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2021
मांस के पूर्वार्ध में अपनी बात को यथोचित ढंग से कहें अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है ध्यान रखें पारिवारिक चिंताएं रहेगी तथा आर्थिक दृष्टि से समय पर लाभ होने में दिक्क त रहेंगी। मास का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा समय पर धन लाभ एवं अपनी कही गई बात का यश मिलेगा स्वास्थ्य का ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अधिक व्यस्तता। नौकरी करने वालों को कार्य बोझ अधिक। विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना हितकर। मास की 5 ,7, 9, 13 ,17 ,22 एवं 29 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त अक्टूबर से दिसंबर 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

अक्टूबर 2021 के व्रत पर्व

1 अक्टूबर, शुक्रवार - दसमी तिथि श्राद्ध

2 अक्टूबर, शनिवार - इंदिरा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव) एकादशी तिथि श्राद्ध

3 अक्टूबर, रविवार - द्वादशी तिथि श्राद्ध

4 अक्टूबर, सोमवार - सोम प्रदोष व्रत/त्रयोदशी तिथि श्राद्ध

5 अक्टूबर, मंगलवार - चतुर्दशी तिथि श्राद्ध

6 अक्टूबर, बुधवार - सर्व पितृ अमावस्या/स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या

7 अक्टूबर, गुरुवार - शारदीय नवरात्र घट स्थापना

9 अक्टूबर, शनिवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

10 अक्टूबर, रविवार - ललिता पंचमी व्रत

12 अक्टूबर, मंगलवार - भद्रकाली अवतार दिवस

13 अक्टूबर, बुधवार - श्री दुर्गाष्टमी व्रत

14 अक्टूबर, गुरुवार - श्री दुर्गानवमी व्रत/हवन

15 अक्टूबर, शुक्रवार - विजयादशी/दशहरा

16 अक्टूबर, शनिवार - पांपाकुशा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

17 अक्टूबर, रविवार - प्रदोष व्रत

20 अक्टूबर, बुधवार - श्रीमाधवाचार्य जयन्ती/कार्तिक कृष्णपक्ष आरंभ

24 अक्टूबर, रविवार - श्रीसंकष्टी चतुर्थीव्रत/करवाचौथ व्रत

28 अक्टूबर, गुरुवार - अहोई अष्टमी व्रत

शुभ मुहूर्त अक्टूबर 2021

3 अक्टूबर, रविवार - प्रसूति का स्नान, उद्यान लगाना (सवेरे 9 से 12.10 दिन तक)

8 अक्टूबर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, उद्यान लगाना (सूर्योदय से सवेरे 10.30 दिन में 12.00 से 13.30)

10 अक्टूबर, रविवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 10.30 से 12.10)

12 अक्टूबर, मंगलवार - खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 11.30 से 13.15)

13 अक्टूबर, बुधवार - दुर्गाष्टमी पूजन, नामकरण, कूपारंभ, खेत जोतना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.05 दिन में)

14 अक्टूबर, गुरुवार - दुर्गा नवमी पूजन (सूर्योदय से सवेरे 10.35)

15 अक्टूबर, शुक्रवार - विजयादशमी, शस्त्र एवं वाहन पूजन, विजय मुहूर्त, नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, खेत जोतना, नवीन व्यापार, वाटिका रोपण (दिन में 12.15 से 13.40)

18 अक्टूबर, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, गृहारंभ, भूमिपूजन, बगीचा लगाना, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 10.40, सायं 4.45 से 6.15)

20 अक्टूबर, बुधवार - कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपजन), खेत जोतना, बीज बोना, बगीचा लगाना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.35 से 12.15 दिन में)

21 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, गृहारंभ, भूमिपूजन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 7.00 से 8.15 दिन में 12.15 से 13.40)

24 अक्टूबर, रविवार - वाटिका रोपण, बीज बोना, औषधि पौधे लगाना (सवेरे 9.30 से 12.15 दिन में)

27 अक्टूबर, बुधवार - नामकरण, वाटिका रोपण (सवेरे 7.10 से 10.50)

28 अक्टूबर, गुरुवार - नामकरण, अन्नप्राशन, कूपारंभ, गृहारंभ, भूमिपूजन, उद्यान लगाना, नवीन व्यापार (दिन में 12.15 से 13.45)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त अक्टूबर से दिसंबर 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

नवम्बर 2021 के व्रत पर्व

1 नवम्बर, सोमवार - रम्भा एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

2 नवम्बर, मंगलवार - भौम प्रदोष व्रत/धनतेरस पर्व/धनवंतरी जयंती

3 नवम्बर, बुधवार - नरक चतुर्दशी/रुप चतुर्दशी

4 नवम्बर, गुरुवार - स्नानदा श्राद्ध की अमावस्या/दीपावली पर्व

5 नवम्बर, शुक्रवार - अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, गौ क्रीड़ा

6 नवम्बर, शनिवार - भाईदूज, दवात कलम पूजन, चित्रगुप्त पूजन

8 नवम्बर, सोमवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

9 नवम्बर, मंगलवार - सौभाग्य पंचमी

10 नवम्बर, बुधवार - सूर्यषष्ठी/डालाछठ

12 नवम्बर, शुक्रवार - अक्षय नवमी व्रत/कुष्माण्ड नवमी

14 नवम्बर, रविवार - प्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त)

15 नवम्बर, सोमवार - प्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)

16 नवम्बर, मंगलवार - कवि कालिदास जयन्ती/भौम प्रदोष व्रत

17 नवम्बर, बुधवार - बैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत

18 नवम्बर, गुरुवार - व्रत की पूर्णिमा

19 नवम्बर, शुक्रवार - स्नानदान की पूर्णिमा, कार्तिक स्नान

23 नवम्बर, मंगलवार - संकष्ठी चतुर्थी व्रत

27 नवम्बर, शनिवार - महाकाल भैरव अष्टमी/श्रीकाल भैरव जयन्ती

30 नवम्बर, मंगलवार - उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

शुभ मुहूर्त नवम्बर 2021

1 नवम्बर, सोमवार - खेत जोतना, बीज बोना, उद्यान लगाना (सवेरे 9.00 से 10.45)

2 नवम्बर, मंगलवार - धन कुबेर पूजन (दिन में 11.30 से 13.20)

3 नवम्बर, बुधवार - अन्नप्राशन, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 6.10 से 9.05 के बीच)

4 नवम्बर, गुरुवार - लक्ष्मी पूजन (13.36 से 15.01 दिन में, 18.20 से 19.35 सायं)

5 नवम्बर, शुक्रवार - अन्नकूट/गोवर्धन पूजन, खेत जोतना, बीज बोना, उद्यान लगाना (सूर्योदय से 10.30 सवेरे, दिन में 12.00 से 13.30)

6 नवम्बर, शनिवार - गृहारंभ, भूमिपूजन, भाईदूज पूजन (दिन में 13.30 से 16.15)

8 नवम्बर, सोमवार - नामकरण (सवेरे 9.00 से 10.00)

10 नवम्बर, बुधवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन व्यापार (दिन में 10.30 से 12.15)

14 नवम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.15 से 12.15)

15 नवम्बर, सोमवार - नामकरण, अक्षारम्भ, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन व्यापार, गृहप्रवेश (सवेरे 9.15 से 10.40 सायं 16.30 से 18.15)

20 नवम्बर, शनिवार - गृहारंभ, भूमिपूजन (दिन में 13.30 से 16.30)

21 नवम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 11.00 से 12.00 दिन में)

22 नवम्बर, सोमवार - अन्नप्राशन, अक्षरारम्भ, खेत जोतना, बीज बोना, उद्यान लगाना (सवेरे 6.00 से 9.15)

24 नवम्बर, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, अक्षरारम्भ, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (10.30 से 12.15 दिन में)

25 नवम्बर, गुरुवार - नामकरण, अक्षरारम्भ, कूपारंभ, गृहारंभ, भूमिपूजन, गृहप्रवेश, नवीन व्यापार (दिन में 11.55 से 13.45)

29 नवम्बर, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, अक्षरारम्भ, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 10.40)

30 नवम्बर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना, उद्यान लगाना (दिन में 10.30 से 13.25 के बीच)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त अक्टूबर से दिसंबर 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

दिसम्बर 2021 के व्रत पर्व

2 दिसम्बर, गुरुवार - प्रदोष व्रत

4 दिसम्बर, शनिवार - श्राद्धादि की अमावस्या

6 दिसम्बर, सोमवार - रम्भा तृतीया

7 दिसम्बर, मंगलवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

8 दिसम्बर, बुधवार - श्रीरामविवाहोत्सव

9 दिसम्बर, गुरुवार - गुहाषष्ठी व्रत

10 दिसम्बर, शुक्रवार - मित्र सप्तमी

11 दिसम्बर, शनिवार - मित्र सप्तमी

12 दिसम्बर, रविवार - कल्पादिनवमी

14 दिसम्बर, मंगलवार - मोक्षदा एकादशी पर्व (स्मार्त एवं वैष्णव)

15 दिसम्बर, बुधवार - अखण्ड द्वादशी

16 दिसम्बर, गुरुवार - प्रदोष व्रत/अनंग त्रयोदशी व्रत

17 दिसम्बर, शुक्रवार - पिशाचमोचनी चतुर्दशी

18 दिसम्बर, शनिवार - व्रत की पूर्णिमा

19 दिसम्बर, रविवार - स्नानदानादि की मृगशीर्ष अग्रहायणी पूर्णिमा

22 दिसम्बर, बुधवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

25 दिसम्बर, शनिवार - क्रिसमस डे

29 दिसम्बर, बुधवार - श्री पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)

30 दिसम्बर, गुरुवार - सफला एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

31 दिसम्बर, शुक्रवार - वर्ष 2021 का अंतिम दिवस

शुभ मुहूर्त दिसम्बर 2021

1 दिसम्बर, बुधवार - नामकरण, अक्षरारम्भ, कर्णवेध, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15)

2 दिसम्बर, गुरुवार - नामकरण, प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, कर्णवेध, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.00 से 8.00 दिन में 12.05 से 13.30)

5 दिसम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.15 से 12.15 दिन में)

8 दिसम्बर, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, अक्षरारम्भ, कर्णवेध, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 10.30 से 12.10 दिन में)

9 दिसम्बर, गुरुवार - नामकरण, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृह प्रवेश (दिन में 12.05 से 13.35 के बीच)

10 दिसम्बर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.45 दिन में 12.05 से 13.35)

12 दिसम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.15 से 11.55)

13 दिसम्बर, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, अक्षरारम्भ, कूपारंभ, गृहारंभ (भूमिपूजन), गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 9.00 से 10.15 दिन में 16.30 से 18.15)

15 दिसम्बर, बुधवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 12.15)

19 दिसम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान, वाटिका रोपण (सवेरे 9.15 से 12.05 दिन में)

22 दिसम्बर, बुधवार - वाटिका रोपण (सवेरे 10.40 से 11.55 दिन में)

24 दिसम्बर, शुक्रवार - खेत जोतना, बीज बोना, वाटिका रोपण (सूर्योदय से सवेरे 10.10 के बीच)

26 दिसम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.15 से 11.50 के बीच)

27 दिसम्बर, सोमवार - नामकरण, नवीन व्यापार (सवेरे 9.00 से 10.15 सायं 16.30 से 18.30)

29 दिसम्बर, बुधवार - खेत जोतना, बीज बोना, वाटिका रोपण (सवेरे 10.30 से 11.30)

30 दिसम्बर, गुरुवार - खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 9.30)

31 दिसम्बर, शुक्रवार - नामकरण खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.30 के बीच आरंभ)

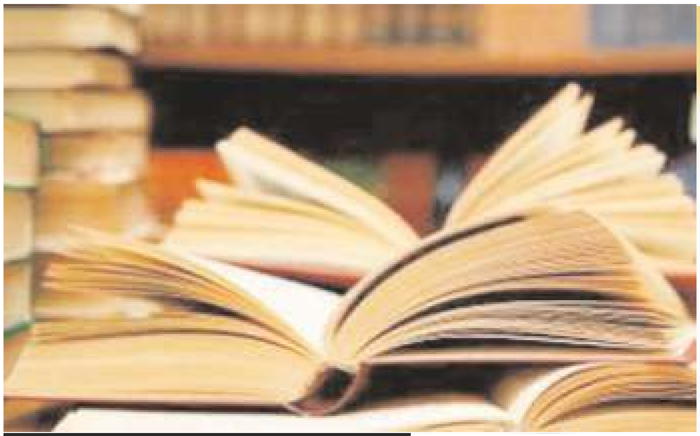

आपके पत्र प्रतिक्रियाएं

आदरणीय संपादक जी

जीवन वैभव पत्रिका पढ़ने को मिली परिवार के लिए पठनीय और ज्योतिष के विद्वान तथा विद्यार्थियों के लिए बहुत ही ज्ञान दायक पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण कर रहा हूं कृपया पत्रिका नियमित भेजते रहें।

आदित्य जलोटा सीए

शिवाजी नगर 7नं. स्टाप के पास भोपाल

श्री आदित्य जी

आपको पत्रिका अच्छी लगी उसके लिए बहुत-बहुत आभार कृपया इसी अनुसार आपके क्षेत्र में जो भी पत्रिका पढ़ने के इच्छुक हैं उन्हें भी इस लाभप्रद ज्ञान के लिए उत्सुकता जागृत करने का कष्ट करें।

संपादक

प्रिय डॉ.श्री हेमचंद्र जी पांडेय

आप के संपादकत्व ने पत्रिका के कलेवर में निखार आ रहा है इसमें विशेषकर श्री एस.एस.लाल भोपाल, श्री बी एल शर्मा इंदौर, तथा श्रीमती पुष्पा चौहान के आलेख ज्योतिष के के सिद्धान्त के अनुसार तथा विद्वत्ता से परिपूर्ण लगे। मैं 3 वर्ष का त्रैवार्षिक सदस्य हूं ,पुनः सदस्यता नवीनीकरण कर रहा हूं

रामेश्वर शर्मा

महानंदानगर उज्जैन

आदरणीय श्रीरामेश्वर शर्मा जी

आपको जीवन वैभव के तीन विद्वानों के लेख अच्छे लगे उन्हें मैं आपकी तरफ से आभार व्यक्त कर रहा हूं। आपने जीवन वैभव की त्रैवार्षिक सदस्यता फिरसे नवीनीकरण की इसके लिए आपका आभार ,इसी प्रकार नियमितता बनाए रखें।

संपादक

आदरणीय सम्पादक डॉ पाण्डेय जी,

जीवन वैभव पुस्तक का और इसके संपादक की हेसियत से डॉ हेमचंद्र पाण्डेय जी आपका परिचय उज्जैन में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिष महासम्मेलन में हुआ। पुस्तक का जुलाई से सितंबर 2021का अंक मुझे सम्मान के साथ मिला। आद्यान्त पढ़ने के बाद मुझे पुस्तक कम जीवन का सार संक्षेप ज्यादा दृष्टिगोचर हुआ। अद्भुत लगा ज्ञानवर्धक ज्योतिष लेखों के साथ जीवन वैभव के स्थायी कालम, विशेष कर त्यौहारों की सूची एवं मुहूर्त आदि बहुत अच्छे लगे। इतने कम मूल्य पर पुस्तक का प्रकाशन वितरण बहुत बड़े सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन है। बहुत बहुत बधाई

राम आभिलाष शर्मा

ए 161प्रगति विहार कल्याणपुर

लखनऊ पिन 226022 उ.प्र.

आदरणीय श्री राम अभिलाष शर्मा जी

आपके द्वारा पत्रिका के विषयों का पढ़ने के उपरांत उत्तम और ज्ञान दायक प्रतीत हुए इसके लिए आपका बहुत-बहुत आभार आपके ज्ञान का लाभ जीवनवैभव के पाठकों को मिले इस हेतु आपके ज्ञानवर्धक आलेख भी भेजते रहें ताकि उन लोगों को यथा स्थान दिया जा सके

डॉ हेमचंद्र पांडेय संपादक

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपना विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इण्डियन बैंक है इसमें जीवन वैभव पत्रिका का

खाता नंबर 50159870448
खाते का नाम – जीवन वैभव
आय एफ एस सी कोड – IDIB000B796
ब्रांच कोड – 4197
MICR code – 462019018

के अनुसार खाते में राशि जमा कराकर उसकी स्लीप तथा अपना पता वाट्सएप कर देवें ताकि पत्रिका नियमित भेजी जा सके।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल
संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम ....

डाक का पूरा पता ....

....

....

दूरभाष/मोबाईल ....

सदस्यता .... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण 1800/- 300/- 100/-

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक .... दिनॉक ....

चैक क्रमांक .... दिनॉक ....

जीवन वैभव के नाम से इण्डियन बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका ''जीवन वैभव'' के बारे में आपकी राय:-

....

....

....

....

....

पाठक के हस्ताक्षर

पता:
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉपलेक्स, जोन-1, भोपाल
संपर्क: 9425008662
ईमेल: hcp2002@gmail.com

नोट: उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आप भी डाक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : ....

पता : ....

जन्म तारीख : ....

जन्म समय : ....

जन्म स्थान : ....

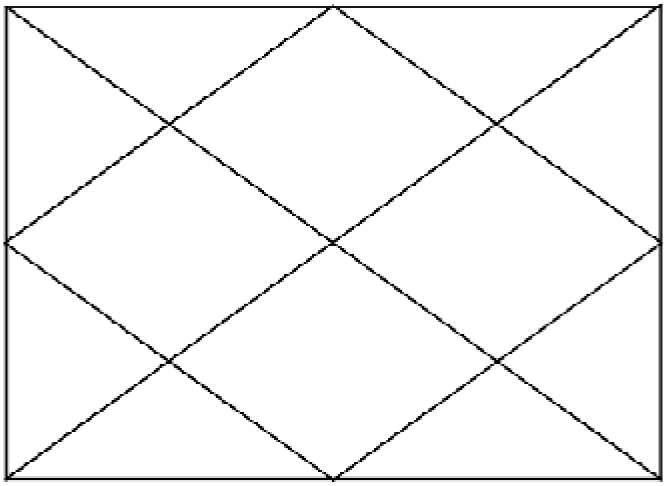

कोई एक प्रश्न ....

....

....

भवदीय

....

नोटः- जीवन वैभव के विद्वान लेखकों और पाठकों के द्वारा ज्योतिष परामर्श पत्रिका के माध्यम से चाहा है हमारे द्वारा ज्योतिष परामर्श कूपन उपरोक्तानुसार दिया गया है इसकी पूर्ति करते हुए हमें प्राप्त होने पर ज्योतिष विद्वानों का एक मण्डल विचार-विमर्श उपरांत परामर्श उत्तर नाम प्रकाशित नहीं करते प्रदाय करेगा।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी
जीवन वैभव
15-ए, महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी
एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

(शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक)

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द पाण्डेय

नि:शुल्क पुस्तक प्राप्त करने के लिए
जीवन वैभव के त्रैवार्षिक सदस्य बनें ...
पाँच पुस्तकें प्राप्त करने के लिए
डाक खर्च देना आवश्यक नहीं।

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन- I, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com

"सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा"

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वाधीनता दिवस पर प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

आज़ादी की वर्षगांठ पर अपने प्राणों का
उत्सर्ग करने वाले असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों को
हम श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं,
प्रदेश में सौहार्दपूर्ण सम-समाज और
आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण का
अपना संकल्प दृढ़ता से दोहराते हैं।

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

चुनौतियों से लड़कर देता जीत का संदेश – स्वस्थ, समृद्ध आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश

हर गरीब का अपना घर

- प्रधानमंत्री आवास योजना की 2484 करोड़ रुपये की राशि जारी।

गर्व से कर रहे खुद का व्यवसाय

- पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से 3 लाख 16 हजार शहरी पथ विक्रेताओं को मिला 316 करोड़ रुपये का ब्याज मुक्त ऋण।

आजीविका के अवसर

- प्रदेश में 5 लाख 54 हजार परिवारों को आजीविका स्व-सहायता समूहों से जोड़कर 4% ब्याज पर 1 हजार 400 करोड़ रुपये का बैंक ऋण उपलब्ध कराया गया।

हर कदम अन्नदाता के साथ

- कोरोना काल में रबी विपणन वर्ष 2021-22 में 17.16 लाख किसानों से 128.16 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन कर किसानों को 25,000 करोड़ रुपये का भुगतान।
- विभिन्न किसान हितैषी योजनाओं के माध्यम से एक लाख करोड़ रुपये से अधिक के हितलाभ किसानों को दिये गये।

सबको भोजन और पोषण

- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत 7 अगस्त को अन्नोत्सव में 1 करोड़ 15 लाख परिवारों को निःशुल्क खाद्यान्न वितरण।

स्वास्थ्य पर ध्यान

- अब तक 2.5 करोड़ लोगों को आयुष्मान कार्ड जारी। 8 लाख 50 हजार हितग्राहियों का करीब 1200 करोड़ रुपये के व्यय से निःशुल्क इलाज।

खेलों को प्रोत्साहन

- खेलो इण्डिया योजना के अंतर्गत प्रदेश में 3 बड़े खेल सेंटर और 10 छोटे खेल सेंटर मंजूर।
- टोक्यो ओलम्पिक 2021 में मध्यप्रदेश के 11 खिलाड़ियों द्वारा देश का प्रतिनिधित्व।

महिला सशक्तिकरण

- प्रदेश के सभी जिलों के 700 थानों में ऊर्जा महिला डेस्क की स्थापना।
- महिलाओं के लिये ₹ 100 करोड़ की लागत से नारी सम्मान कोष की स्थापना।
- धार्मिक स्वतंत्रता कानून 2020 लागू।

कोरोना संक्रमण प्रभावितों की मदद के कदम

- कोविड आपदा में निराश्रित बच्चों की मदद के लिये मुख्यमंत्री कोविड बाल सेवा योजना।
- कोविड आपदा में शासकीय कर्मचारी की मृत्यु होने पर परिवार को 5 लाख रुपये की वित्तीय मदद।
- मुख्यमंत्री कोविड-19 अनुकंपा नियुक्ति योजना के तहत शासकीय कर्मचारी की मृत्यु होने पर एक सदस्य को अनुकंपा नियुक्ति।
- कोविड-19 ड्यूटी पर तैनात फ्रंट लाइन वर्कर की मृत्यु हो जाने पर परिवार को 50 लाख रुपये की वित्तीय सहायता।
- मुख्यमंत्री कोविड उपचार योजना में आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को निःशुल्क कोविड उपचार की सुविधा।

प्रेरणा और प्रगति का प्रदेश मध्यप्रदेश

D-18069/21

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर है—

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते है। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते है।

वार्षिक सदस्यता रू.100/—, त्रैवार्षिक रू. 300/—, आजीवन सदस्यता रू. 1800/—

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 350 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता **"जीवन वैभव"** के नाम से अरेरा कॉलोनी की इण्डियन बैंक के
खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड IDIB000B796
के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

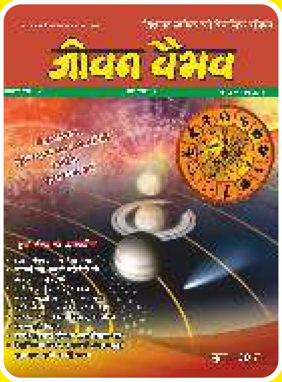

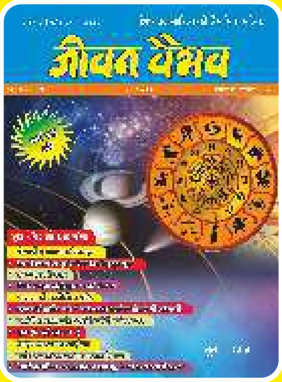

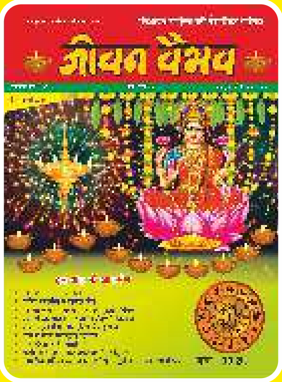

- जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी है, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र—निर्माण, योग, होम्योपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि। जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय हैं।
- वंदना', अमृतवाणी , वैभवदर्शन , गीता माता , उचितआहार, चिकित्सा , धर्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य, व्रत पर्व, विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल आदि जानकारी प्रत्येक अंक में उपब्ध रहती है।
- महापुरूषों द्वारा दिए गए आर्शीर्वचन एवं सुखी जीवन के लिए अनमोल सुझाव पृथक से बाक्स के रूप में दिये जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं।
- जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है, तथा जीवन वैभव के उपरोक्त पुराने उपलब्ध अंक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।

कार्यालय का पता *व्यवस्थापक* **जीवन वैभव**

15 ए. प्रेस काम्प्लेक्स, जोन—1 महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : *hcp2002@gmail.com*